प्रारंभिक-गायन/वादन (स्वरवाद्य)

सूचना : इस वर्ष में स्वर और ताल में परिचित होना तथा उसका क्रियात्मक संगीत में साधारण प्रयोग करना विद्यार्थी से अपेक्षित है। इस वर्ष परीक्षा नहीं होगी। लेकिन वर्ष के अंत में केवल पाठ्यक्रम पूर्तता के बारे में खुद शिक्षक द्वारा विद्यार्थी का वार्षिक मूल्यमापन होगा।

क्रियात्मक

(अ) स्वरज्ञान - शुद्ध स्वर अलग-अलग तथा सरल समुदाय में गाना/बजाना तथा पहचानना। निम्नलिखित स्वर अलंकारों से प्रारंभिक परिचय।

(1) सा रे ग म प ध नो सां - सां नी ध प म ग रे सा

(2) सा, सारेसा, सारेगरेसा .... सां, सांनीसां, सांनीधनीसां

(3) सारेग, रेगम .... सांनीध, नीधप

(4) सारेगम, रेगमप .... सांनिधप, नीधपम

(5) सारेसारेग, रेगरेगम .... सांनीसांनीध, नीधनीधप

(6) साग, रेम, गप .... सांध, नीप, धम

(आ) रागज्ञान - निम्नलिखित रागों में एक-एक बंदिश/गत स्वरतालबद्ध गाना/ बजाना तथा हर राग में एक-एक सरगमगीत तथा लक्षणगीत तैयार करना है।

निम्नलिखित रागों के आरोह-अवरोह गाना/बजाना तथा आरोह-अवरोह से राग पहचानना।

अध्ययन के लिए राग - भैरव, अल्हैया बिलावल, काफी, भूप, यमन (कल्याण), भैरवी

शास्त्र

(1) पाठ्यक्रम के रागों का वर्णन, स्वर, आरोह-अवरोह, समय, वादी-संवादी तालकी प्राथमिक जानकारी- कहरवा और दादरा तालों को हाथ से ताली देकर बोलने का अभ्यास (गीत/गत के लिए - तीनताल, एकताल)

प्रवेशिका प्रथम-गायन/वादन (स्वरवाद्य)

पूर्णांक :75, न्यूनतम : 26, क्रियात्मक : 60, शास्त्र (मौखिक) : 15

क्रियात्मक

(अ) **स्वरज्ञान** - सात शुद्ध स्वरों को गाना/बजाना, पहचानना।

कोमल, तीव्र स्वरों को गाना/बजाना, पहचानना।

निम्नलिखित, शुद्ध स्वरों के पाँच सरल अलंकार विलम्बित तथा मध्य लय में गाना/बजाना। अलंकार का उचित प्रयोग पाठ्यक्रम के किसी एक राग में करना।

(1) सारे, रेग, गम .... सांनी, नीध, धप

(2) सारेसा, रेगरे, गमग .... सांनीसां, नीधनी, धपध (दादरा ताल में)

(3) सारेगसारेगम, रेगमरेगमप .... सांनीधसांनीधप इ. (रूपक ताल में)

(4) सागरेसा, रेमगरे .... सांधानीसां, नीपधनी (तीनताल में)

(5) साम, रेप, गध .... सांप, नीम, धग

(आ) **अध्ययन के लिए राग-आसावरी (शुद्ध रे), बिभास, वृंदावनी सारंग, भीमपलास, दुर्गा, देस।**

(1) इन सभी रागों के आरोह-अवरोह तथा प्रारंभिक आलाप/स्वर विस्तार तथा एक लक्षणगीत गाना/बजाना।

(2) हर राग में मध्यलय, तीनताल या एकताल की एक बंदिश/गत।

(3) सभी रागों में बंदिश/गत-आलाप/स्वर विस्तार और तान सहित पाँच मिनट तक गाने/बजाने की तयारी।

(4) इस वर्ष के पाठ्यक्रम के रागों में गायन के लिए कहरवा तथा दादरा में एक-एक गीत, दो सरगम गीत, एक ध्रुपद, एक भजन इस प्रकार छह अतिरिक्त रचनाएँ तैयार की जाएँ। वादन के लिए, तीनताल/एकताल के अतिरिक्त कहरवा और दादरा ताल में एक-एक रचना, एक धुन तथा वाद्य के अनुकूल दो अलंकार तथा चौताल में एक रचना तैयार की जाएँ। सभी गीत/गत प्रकार अलग अलग रागों में होने चाहिए।

(5) मुख्य रागदर्शक स्वरोंव्दारा राग पहचानना।

(6) 'वंदे मातरम' और 'जनगणमन' यह राष्ट्रगीत गाना/बजाना आवश्यक है।

(इ) **ताल ज्ञान** - तीनताल, एकताल, चौताल की जानकारी तथा हाथ से ताली-खाली दिखाकर बोलने का अभ्यास

शास्त्र

(1) निम्नलिखित पारिभाषिक शब्दों की संक्षिप्त जानकारी - संगीत, स्वर, शुद्ध स्वर, कोमल स्वर, तीव्र स्वर, वर्जित स्वर, सप्तक, अलंकार (पलटा), वादी, संवादी, सरगमगीत, लक्षणगीत, स्थायी, अंतरा, आलाप, तान लय (विलम्बित, मध्य, द्रुत लय), मात्रा, ताल, आवर्तन, ठेका, सम विभाग (खंड), ताली, खाली। इन सभी शब्दों का वर्णन पाठ्यक्रम के राग तथा तालों के उदाहरण व्दारा स्पष्ट किया जाए।

(2) **पाठ्यक्रम के रागों का शास्त्रीय ज्ञान** - रागों के स्वर, शुद्ध, कोमल, तीव्र, आरोह-अवरोह, वादी-संवादी, वर्जित स्वर, समय आदि का विवरण।

प्रवेशिका पूर्ण-गायन/वादन (स्वरवाद्य)

पूर्णांक :125, न्यूनतम : 44, क्रियात्मक : 75 +, शास्त्र (मौखिक) 50, न्यूनतम : 44

क्रियात्मक

(अ) **स्वरज्ञान** - (1) शुद्ध स्वरों के साथ गाये/ बजाये हुये कोमल तथा तीव्र स्वरों को पहचानने की क्षमता।

(2) पहले सीखे हुये सभी अलंकारों का द्रुत लय में अभ्यास।

(3) निम्नलिखित छह नये अलंकारों का विभिन्न रागों में तथा विभिन्न लय में और लयकारी (एक मात्रा में एक/दो/तीन/चार स्वर) में हाथ से लय देकर प्रयोग करने का अभ्यास।

(3.1) सागरेसा, रेमगरे ..... सांधनीसां, नीपधनी

(3.2) सारेसाग, रेगरेम ..... सांनीसोध, नीधनीप

(3.3) सारेगरेगसारे, रेगमगमरेग ..... सांनीधनीधसांनी (रूपक में)

(3.4) सारेगरेसा, रेगमगरे ..... सांनीधनीसां, नीधपधनी (झपताल में)

(3.5) सामगरे, रेपमग ..... सांपधनी, नीमपध

(3.6) सारेगरेगऽ, रेगमगमऽ ..... सांनीधनीधऽ, नीधपधपऽ (एकताल में)

(ब) राग ज्ञान - (1) पिछले वर्ष के सभी रागों की पुनरावृत्ति के साथ इस वर्ष यमन (अथवा कल्याण) और भूप इन रागों के बड़े ख्याल/मसीतखानी गतें (केवल बंदिश/गत) गाना/बजाना अपेक्षित है। राग विस्तार अपेक्षित नहीं है।

(2) **अध्ययन के लिए राग-भैरव, अल्हैया बिलावल, केदार, बागेश्री, बिहाग, मालकंस, खमाज**

(3) इन रागों में आरोह-अवरोह, प्रारंभिक आलाप और एक मध्यलय का ख्याल/रजाखानी गत पाँच आलाप तथा पाँच तानों सहित (7 मिनट तक) गाने/बजाने की तैयारी का अभ्यास।

(4) **गायन के लिए** इन्हीं रागों में से एक धमार, एक तराना, एक लक्षण गीत, एक सरगमगीत तथा झपताल और रूपक में एक-एक बंदिश तैयार करनी है। **वादन के लिए** धमार, रूपक, झपताल में तीन अलग-अलग रागों में रचनाएँ और एक सरगम गीत और झाले के दो प्रकार तथा पूछे गए राग में प्रारंभिक आलाप की तैयारी करनी है।

(5) **गायन के लिए** मंडल की प्रार्थना 'जय जगदीश हरे' और एक भजन या लोकगीत सिखाया जाए। वादन के लिए लोकधून और विशिष्ट वादनक्रियाओं की तैयारी का अभ्यास।

(6) गाए/बजाए हुये आलापों द्वारा राग पहचानने की क्षमता अपेक्षित है।

(क) **तालज्ञान** - (1) झपताल, रूपक, धमार इन तालों की जानकारी। (2) तबले पर बजते हुए तालों को (बोलों से) पहचानने का अभ्यास- कहरवा, दादरा, तीनताल, एकताल, झपताल, रूपक, चौताल, धमार। (3) तीनताल, एकताल, चौताल, धमार, रूपक और झपताल हाथ से ताल देकर (ताली-खाली दिखाकर) दुगुन में बोलना।

शास्त्र

(अ) पिछले वर्ष के सभी पारिभाषिक शब्दों की जानकारी की पुनरावृत्ति अनिवार्य। (आ) निम्नलिखित विषयों की वर्णनात्मक साधारण जानकारी। भारतीय संगीत की दो मुख्य पद्धतियों के नाम - (1) उत्तर भारतीय, (2) दक्षिण भारतीय (कर्नाटक)। 'नाद' की व्याख्या और उसकी विशेषता की तीन नाम-(1) छोटा बड़ापन, (2) ऊँचा-नीचापन, (3) जाति अथवा गुण। गानक्रिया/वर्ण के नाम - (1) स्थायी, (2) आरोही-अवरोही, (3) संचारी। **गीत के चार अवयव** - (1) स्थायी, (2) अंतरा, (3) संचारी, (4) आभोग। **गीत के प्रकार** - ध्रुपद, धमार, ख्याल, भजन, लक्षणगीत, सरगमगीत। **वाद्य के लिए** - मसीतखानी तथा रजाखानी गत तथा सरगमगीत। ध्वनि-नाद-श्रुति-स्वर की जानकारी। (ड) पं. विष्णु दिगम्बर पलुसकर तथा पं. विष्णु नारायण भातखण्डे स्वरलिपि के चिन्हों की संक्षिपत जानकारी-मंद्र/मध्य/तार स्वर। सम/काल/टाली/विभाग (खंड), आधी (1/2) मात्रा/पाँव (1/4) मात्रा। (इ) प्रथम और द्वितीय वर्षों के रागों का पूर्ण विवरण- राग में लगने वाले शुद्ध/कोमल/तीव्र स्वर, आरोह-अवरोह, वादी-संवादी, पकड, समय (ई) अब तक सीखे हुये सभी तालों की मात्रा, ठेका, सम, विभाग (खंड), ताली खाली की मौखिक जानकारी और तालों की ठाहर (बराबर) तथा दुगुन लय में बोलने का अभ्यास। (फ) पं. विष्णु दिगम्बर पलुसकर की जीवनी (10) वाक्यों में (जन्म), मुख्यतः - शिक्षण परंपरा, गाधर्व महाविद्यालय की स्थापना, भारत में विद्यालय विस्तार, स्वरलिपि की निर्मिती, पुस्तकों की निर्मिति और प्रकाशन, भजन, गायन के लिए रागसंगोत का नियोजन, शिष्य परंपरा, (निधन) इन मुद्दों के आधार पर।

(ग) **वाद्य के अंगों की जानकारी** - गायन के विद्यार्थी तानपुरा की तथा वाद्य के विद्यार्थी अपने वाद्य की जानकारी देंगे।

मध्यमा प्रथम-गायन/वादन (स्वरवाद्य)

पूर्णांक :200, न्यूनतम : 70, क्रियात्मक : 125, न्यूनतम : 44, शास्त्र (लिखित) 75, न्यूनतम : 26

सूचना :- (1) इस वर्ष की तथा आगे की सभी परीक्षाओं के लिए गायन के परीक्षार्थियों के साथ केवल पारंपारिक तानपुरे का ही प्रयोग होगा। (2) इस वर्ष में सभी रचनाएँ पं. वि. दि. पलुसकर और पं. वि. ना. भातखण्डे दोनो पद्धतियों में लिपीबद्ध करनी है।

क्रियात्मक

(अ) **स्वर ज्ञान**- गलेसे अथवा वाद्य से आलापों में मींड, गमक, कण, स्पर्शस्वर, खटका, मुरकी निकालने का प्राथमिक अभ्यास तथा उनका राग विस्तार में उचित प्रयोग करने का अभ्यास। इन्हीं का गायना विशेष/वाद्य विशेष के अनुसार प्रयोग करने की प्राथमिक जानकारी। (आ) रागज्ञान

(1) निम्नलिखित सभी रागों में एक विलम्बित तथा एक द्रुत बंदिश/एक मसीतखानी और एक रजाखानी गत राग विस्तार सहित तयार करनी है। **अध्ययन के लिए राग-भैरव, अल्हैया बिलावल, वृदावनी सारंग, यमन, भीमपलास, केदार।** राग विस्तार में विलम्बित ख्याल/गत के लिए स्थायी पर पाँच आलाप तथा अंतरे पर तीन आलाप और बाद में पाँच तानें तथा द्रुत ख्याल/गत के लिए स्थायी पर पाँच आलाप तथा अंतरे पर पाँच आलाप और बाद में पाँच तानों सहित गायन/वादन आवश्यक है। (2) उपरोक्त रागों का संपूर्ण परिचय अपेक्षित है। (3) इस के अलावा इन्हीं रागों में एक ध्रुपद, एक धमार (दुगुन, चौगुन के साथ), एक तराना तथा झपताल में एक बंदिश

इस प्रकार कुल चार बंदिशें तैयार करनी है। वादन के विद्यार्थी इन्हीं रागों में चौताल, धमार में गतें (दुगुन, चौगुन के साथ), एक रूपक तथा एक गत झपताल में तैयार करेंगे। (सभी बंदिशें/ गतें अलग-अलग रागों में होनी चाहिए) (4) **तिलंग** और **तिलककामोद** इन्हीं रागों में एक-एक भजन/धुन/गाना/बजाना सिखाया जाए। (5)**तालज्ञान** -झूमरा, तिलवाडा, सूलताल के ठेके हाथ से ताली देकर ठाह तथा दुगुन में बोलना। पहले
सीखे हुए सभी तालों की दुगुन, चौगुन करने का अभ्यास। (सम से सम तक अथवा एक आवर्तन में लयकारी में दोनों पद्धतियाँ ग्राह्य है) कहरवा, दादरा ठेका बजाने का साधारण ज्ञान।

शास्त्र

(1) पिछले तीन वर्षो के सभी विषयों को दोहराना आवश्यक है तथा उनकी विस्तृत जानकारी होनी चाहिए और इसी वर्ष के विषयों के अध्ययन के साथ-साथ सभी विषयों की जानकारी लिखने का अभ्यास भी आवश्यक है। (2) इस वर्ष निम्नलिखित विषयों का अध्यन करना अपेक्षित है-
(अ) वादी-संवादी स्वरों का राग से संबंध,' ध्वनि की उत्पत्ति, कंपन, आन्दोलन, (क) आंदोलन की चौडाई और उसका नाद के छोटे-बडेपन से संबंध, (ड) तार की लम्बाई और आन्दोलन संख्या तथा नाद के ऊँचे-नीचेपन का पारस्पारिक संबंध। (3) अब तक के और इस वर्ष के सीखे हुये रागों का विस्तृत विवरण तथा उनके मुक्त आलाप लिखना, तथा दो-दो आलापों द्वारा रागों की समानता-विभिन्नता का स्वरूप लिखना। (4) सीखे हुये सभी ध्रुपद, धमार की ठाह तथा दुगुन, चौगुन लिखना। (5) स्वरलिपि के लिए पं. पलुसकर और पं. भातखण्डे इन दोनों पद्धतियों की विस्तृत जानकारी। (6) निम्नलिखित शब्दों की परिभाषा तथा स्पष्टीकरण - अनुलोम, विलोम, मींड, गमक, सूत घसीट, जमजमा, मुर्की, छूट (7) **वाद्यों के प्रकार** - तत, वितत, घन, सुषिर, अवनद्ध इनके अनुसार अपने वाद्य की सचित्र जानकारी। (8) जीवनी और सांगीतिक योदगान - हस्सू हद्दू खाँ, स्वामी हरीदास, तानसेन, पं. बालकृष्णबुवा इचलकरंजीकर, पं. विष्णु दिगम्बर पलुसकर, पं. गोपीकृष्ण, पं. निखिल बॅनर्जी, पं. हरीप्रसाद चौरसिया, जाकिर हुसैन, कवि जयदेव।

मध्यमा पूर्ण-गायन/वादन (स्वरवाद्य)

पूर्णांक :200, न्यूनतम : 70, क्रियात्मक (मौखिक) : 125, न्यूनतम : 44, शास्त्र (लिखित) 75, न्यूनतम : 26
सूचना :- इस वर्ष में सभी रचनाएँ पं. वि. दि. पलुसकर और पं. वि. ना. भातखण्डे दोनों पद्धतियों में लिपिबद्ध करनी है।

क्रियात्मक

(1) **स्वर ज्ञान**- गायन करते समय खुद तानपुरा बजाकर गायन करने का अभ्यास तथा सुरीलेपन का अभ्यास।
(2) रागज्ञान - रागों का शुद्ध स्वरूप प्रस्तुत करना। बंदिश/गत का मुखडा अच्छी तरह से पकडने का अभ्यास तथा बंदिश लय-ताल में अच्छी तरह से गाने का अभ्यास। आलाप, बोल आलाप तथा तानों में सुरीलेपन की विशेष तैयारी के साथ बढत करने का अभ्यास। राग विस्तार में विलम्बित ख्याल/गत के लिए स्थायी पर पांच आलाप, अंतरें पर तीन आलाप और बाद में पाँच तानें तथा द्रुत ख्याल/गत के लिए स्थायी पर पाँच आलाप, अंतरें पर पाँच आलाप और बाद में पाँच तानों सहित विस्तार अपेक्षित है। इसी तरह राग का समुचित विस्तार 15 मिनट तक करना अपेक्षित है। निम्नलिखित रागों में विलम्बित ख्याल और द्रुत ख्याल/मसीतखानी और रजाखानी गत। बंदिशें/गतें दो अलग तालों में अपेक्षित है।
अध्ययन के लिए राग-अहीरभैरव, आसावरी (शुद्ध रे), बिभास, पटदीप, बागेश्री, दुर्गा। (3) ऊपरनिर्दिष्ट किन्ही दो रागों में गायन के लिए नोम् ताम् आलाप के साथ एक ध्रुपद, एक धमार दुगुन, तिगुन चौगुन के साथ। वादन के लिए वाद्य की विशेषता के अनुसार प्रारंभिक आलाप सहित चौताल और धमार में गतें दुगुन, तिगुन, चौगुन के साथ। (सभी बंदिशें/गतें अलग-अलग रागों में होनी चाहिए।) (4) पाठ्यक्रम के रागों में से किन्हीं दो रागों में गायन के लिए तराने गायकी के साथ/वादन के लिए दो द्रुत गतें झाले के साथ (दो अलग तालों में) प्रस्तुत करना। (5) **कालिंगडा, भैरवी** इन रागों में गायन के लिए भजन, गजल, देश भक्ति पर गीत इनमें से दो प्रकार/वादन के लिए लोकगीत और धुन बजाने की क्षमता (गीत/धुन अलग-अलग रागों में)। (6) **तालज्ञान** - तेवरा, दीपचंदी, आडाचौताल की ठाह तथा दुगुन बोलना। अंकों की सहायता से 2 में 3, 3 में 2, 3 में 4, 4 में 3 बोलने की क्षमता। तीनताल, झपताल, रूपक का ठेका बजाने की क्षमता। ठेका बजाने का साधारण ज्ञान।

शास्त्र

(1) पाठ्यक्रम के सभी रागों का विस्तृत विवेचन तथा सोदाहरण समानता-विभिन्नता का अध्ययन। स्वर समुदाय से राग पहचानना और मुक्त आलापों द्वारा स्वर विस्तार।
(2) संधिप्रकाश रागों का विस्तृत सोदाहरण विवेचन। (3) तानों के प्रकार-सरल (शुद्ध), कूट, मिश्र, सपाट, वक्र (4) पाठ्यक्रम के सभी रागों मं सीखी हुई बंदिशों को लिखने की क्षमता। (5) पहले वर्ष से अब तक के सभी तालों का विस्तृत अध्ययन एवं उन्हें लिखना। (6) पहले वर्ष से अब तक के सभी तालों की ठाह तथा दुगुन, तिगुन, चौगुन लिखना।
निम्नलिखित पारिभाषिक शब्दों का विस्तृत अध्ययन - श्रुति-स्वर विभाजन, स्वर संवाद, अध्वदर्शक स्वर, सम प्रकृति राग, ग्रह, अंश, न्यास, प्रबंध, वस्तु, रूपक। (8) प्राचीन एवं आधुनिक राग लक्षण, सन्यास, विन्यास, अपन्यास, अल्पत्व-बहुत्व, आविर्भाव-तिरोभाव, जाति गायन, गायकी-नायकी इनका साधारण परिचय। (9) गायक के गुणदोष (10) **निम्नलिखित विषयों पर निबंध लिखने की क्षमता (न्यूनतम 200 शब्दों में)** (अ) स्वलिपि की उपयुक्ता। (ब) क्या शास्त्रीय संगीत मुझे पसंद है ? (क) मैं संगीत क्यों सीखता/सीखती हूँ ? (ड) मैंने सुनी संगीत की एक महफिल। (11) **जीवनी और सांगीतिक योगदान** - पं.वि.ना. भातखण्डे, पं. भास्करबुवा बखले, पं. विनायकराव पटवर्धन, सिद्धेश्वरीदेवी, गोपाल नायक, उस्ताद अलि अकबर खाँ, सितारादेवी, पं. शिवकुमार शर्मा, पं. सामताप्रसाद, उस्ताद अल्लारखा, पं. अहोबल।

विशारद प्रथम-गायन/वादन (स्वरवाद्य)

पूर्णांक :500, न्यूनतम : 200, क्रियात्मक : 300, (मौखिक 200 + मंच प्रदर्शन 100),न्यूनतम : 120, शास्त्र (लिखित) 200 (100 +100), न्यूनतम : 80 (40 +40)

सूचना :- इस वर्ष में सभी रचनाएँ पं. वि. दि. पलुसकर और पं. वि. ना. भातखण्डे दोनों पद्धतियों में लिपिबद्ध करनी है। (2) विलम्बित ख्याल (विलम्बित लय में) रूपक और झपताल में हो सकते है।

क्रियात्मक

(1) तानपुरा अपने स्वर में मिलाने तथा गायन करते समय खुद बजाकर गायन करने का अभ्यास। तानपुरा ठीक तरह से बजाने का अभ्यास। (2) **रागज्ञान** - इस वर्ष में ख्याल गायन/वादन शैली में निश्चित विकास होनाा अपेक्षित है। राग का अपने मन से आलाप, तानों द्वारा विस्तार करने का अभ्यास। उसमें मींड, गमक, कण/स्पर्श स्वर, खटका, मुरकी के साथ स्वर संचालन और राग में वादी-संवादी/अनुवादी-विवादी स्वर तथा अल्पत्व-बहुत्व और अविर्भाव-विरोभाव आदि का महत्व समझकर प्रयोग करने का अभ्यास अपेक्षित है। कोई एक ख्याल/गत तिलवाडा में होना अपेक्षित है। इन सभी मुद्दों को ध्यान में रखते हुये निम्नलिखित रागों का विस्तृत अध्ययन और हर एक राग में एक विलम्बित और एक द्रुत बंदिश/एक मसीतखानी और एक रजाखानी गत विस्तार के साथ 20 मिनट तक गाने/बजाने की तैयारी करनो है। अध्ययन के लिए राग- तोडी, शुद्धसारंग, मुलतानी, यमन, बिहाग, पूरियाधनाश्री, रागेश्री, जोग, शंकरा। (3) इस वर्ष के रागों में गायन के लिए धुपद, एक धमार, दो तराने, एक चतुरंग या एक त्रिवट इस प्रकार पाँच बंदिशें गायकी के साथ अलग-अलग रागों में तैयारी करनी है। वादन के लिए निम्नलिखित तालों में (और अलग-अलग रागों में) रचनाएँ तैयारी के साथ बजाना अपेक्षित है- एकताल, झपताल, रूपक, आडाचौताल, दीपचंदी। (4) **उपशास्त्रीय संगीत - काफी** और **देस** इन रागों में **गायन के लिए**- एक ठुमरी और एक दादरा/**वादन के लिए**- एक-एक विस्तारक्षम धून साधारण विस्तार के साथ गाना/बजाना अपेक्षित है। (ठुमरी दादरा,धुन अलग-अलग रागों में अपेक्षित है। (5) गायन/ वादन की अंक पत्रिका के कॉलम में 10 अंक जनगणमन, वेदमारतम् हार्मोनियम पर बजाना तथा गाना (गाते समय हार्मोनियम बजाना) इसके लिए समाविष्ट किए गए है। (6) **तालज्ञान** - तिलवाडा, झूमरा, आडाचौताल, अद्धा तीनताल, धुमाली, दीपचंदी, चाचर और झपताल इनकी संपूर्ण जानकारी तथा इनको तबले पर बजते हुए पहचानना। अब तक सीखे हुए ठेकों को तबले पर बजाने का अभ्यास। अब तक सीखे हुए कहरवा, दादरा, तीनताल, एकताल, चौताल तालों की दुगुन, तिगुन, डेढ़गुन, चौगुन बोलने का अभ्यास। तीनताल, कहरवा, दादरा के ठकां के विविध प्रकारों की जानकारी। (7) आमंत्रित श्रोताओं के सामने मंच प्रदर्शन।

शास्त्र - प्रथम प्रश्नपत्र

(1) पाठ्यक्रम के सभी रागों को स्वर समुदाय से पहचानना तथा उनका विस्तृत विवेचन और उनकी समानता, विभिन्नता का विस्तृत अध्ययन। (2) रागवर्गीकरण संकल्पना (मूलतत्व, निर्मित, उद्देश, उपयोगिता इत्यादि) की संक्षिप्त जानकारी तथा रागवर्गीकरण पद्धतियों के विविध नामों की जानकारी। (3) निम्नलिखित सभी तालों का विस्तृत अध्ययन एवं उन्हें लिखने का अभ्यास। (दुगुन, तिगुन, चौगुन लयकारी में लिखने की क्षमता भी अपेक्षित)- आडाचौताल, झमरा, दीपचंदी, पंजाबी। (4) पाठ्यक्रम के सभी रागों की बंदिशें/गतें लिखने की क्षमता। (5) गायन/वादन में बंदिश/गत के आधार पर राग विस्तार करते समय आलाप आर तान का पयोजन, महत्व और उपयोगिता के बारे में सोदाहरण विस्तृत विवेचन। (6) तानों के विधि प्रकारों का सोदाहरण विस्तृत अध्यन। (7) निबद्ध तथा अनिबद्ध गान की संक्षिप्त जानकारी तथा ध्रुपद, धमार और टप्पा इन निबद्ध गान प्रकारां का विस्तृत विवेचन। (ऐतिहासिक और सादरीकरण/प्रस्तुतिकरण तथा शैलियों के आधार पर)

द्वितीय प्रश्नपत्र

(1) राग और समय के संबंध में मूल संकल्पना का विवरण तथा इसके अनुसार रागों का समय-विभाजन का सोदाहरण अध्ययन/विवेचन। (2) रामायण, महाभारत और पुराणकालीन संगीत की संक्षिप्त ऐतिहासिक जानकारी। (3) 'लोकसंगीत' की संकल्पना एवं विशेषताएँ। (4) भारतीय वाद्यों के वर्गीकरण संबंधी विस्तृत जानकारी तथा रागसंगीत में प्रयुक्त होने वाले का प्रयोजन, उपयोगिता तथा महत्व। (5) **जीवनी और सांगीतिक योगदान** - अमीर खुसरो, उ. फैयाज खाँ (बडोदा), उ. अल्लादिया खाँ, पं. ओंकारनाथ ठाकुर, पं. रामकृष्णबुवा वझे, उ. रहिमत खाँ, पं. पन्नालाल घोष, पं. रामनारायण, ठाकुर जयदेवसिंह, संत पुरंदरदास, श्रीनिवास, अच्छन महाराज, पं. रामसहाय जी। (6) **निम्नलिखित विषयों पर निबंध लिखने की क्षमता (न्यूनतम 300 शब्दों में)** (अ) संगीत और अन्य ललित कलाओं का आपसी संबंध (ब) चित्रपट संगीत पर शास्त्रीय संगीत का प्रभाव (क) शास्त्रीय संगीत-कल, आज और कल (ड) राग संगीत में बंदिशों का महत्व (इ) लोकसंगीत और समाज (7) निम्नलिखित वाद्यों की जानकारी - (अ) पाश्चात्य वाद्य :- सिंथेसायझर, ड्रम (ब) तालवाद्य तबला, ढोलकी (8) अ. भा. गाधर्व महाविद्यालय मंडल, मुम्बई की विस्तृत जानकारी- स्थापना वर्ष, संस्थापक, स्वातंत्र्यपर्व तथा स्वातंत्र्योत्तर कार्य, कार्य की पं. पलुसकर प्रणित दृष्टि, कार्य का विस्तार, पाठ्यक्रम की विशेषताएँ, मंडल के अन्य उपक्रम आदि मुद्दों के आधार पर।

विशारद द्वितीय-गायन/वादन (स्वरवाद्य)

पूर्णांक :500, न्यूनतम : 200, क्रियात्मक : 300, (मौखिक 200 + मंच प्रदर्शन 100),न्यूनतम : 120, शास्त्र (लिखित) 200 (100 +100), न्यूनतम : 80 (40 +40)

सूचना :- इस वर्ष में सभी रचनाएँ पं. वि. ना. भातखण्डे पद्धतियों में लिपिबद्ध करनी है। (2) विलम्बित ख्याल (विलम्बित लय में) रूपक और झपताल में हो सकते है।

क्रियात्मक

(1) तानपुरा मिलाने की पद्धतियाँ - साप/साम/सानी (क्रमशः पसा, मसा, नीसा) की ठीक जानकारी (2) महफिल में गाने/बजाने का तथा उसमें निश्चित निपुणता प्राप्त करने का अभ्यास। राग-तालों का ठीक परिचय करवाना तथा पाठ्यक्रम के विभिन्न विषयों को क्रियात्मक तथा शास्त्र की दृष्टि से समझने तथा समझाने की योग्यता बढ़ाने का अभ्यास। अपना वाद्य खुद मिलाने की क्षमता अनिवार्य है। (3) गाई/बजाई हुई अथवा लिपिबद्ध कि हुई किसी भी रचना को आत्मसात करने का अभ्यास तथा वह रचना गायकी/वादनशैली में रूपांतरित करने का अभ्यास अपेक्षित है। (4) **रागज्ञान** - रागों की प्रकृति का स्वर-लय द्वारा गहराई से अध्ययन (खुद का रियाज, चिंतन इत्यादि) करने के लिए मनः पूर्वक प्रयास करने का अभ्यास अपेक्षित है। आविर्भाव-तिरोभाव, मींड-गमक आन्दोलन-फिरत आदि का राग विस्तार में रसानुकूल तथा समुचित प्रयोग करने का अभ्यास अपेक्षित है। इस वर्ष में निम्नलिखित सभी रागों में एक-एक विलम्बित ख्याल तथा एक-एक द्रुत ख्याल/मसीतखानी गत तथा एक-एक रजाखानी गत तैयार करनी है। विलम्बित ख्याल/गत विविध तालों में तैयार करना अनिवार्य है। हर एक राग 20 से 25 मिनट तक गाने की क्षमता वर्धित करने का अभ्यास अपेक्षित है। वादन के लिए विलम्बित/द्रुत गत संपूर्ण विस्तार के साथ। मींड, घसीट, जमजमा, कृंतन व सूत तथा झाले के प्रकार (अपने वाद्य विशेषानुसार) के साथ

विभिन्न प्रकार एवं तैयारी अपेक्षित है। कोई एक ख्याल/गत झूमरा ताल में होना अनिवार्य है। **अध्ययन के लिए राग- भैरव, आसावरी (कोमल रे), देशकार, मधमाद सारंग, पूरियाकल्याण, हमीर, भूप, कलावती, गोरखकल्याण, बहार।** (5) इनमें से किसी राग में गायन के लिए एक ध्रुपद, एक धमार (दुगुन, तिगुन, चौगुन तथा बोलबाँट और अतीत/अनागत लयकारी के साथ), दो तराने, एक त्रिवट इस प्रकार 5 अन्म बंदिशें अलग-अलग रागों में तैयार करनी है। **वादन के लिए** अपने वाद्य पर दुगुन, तिगुन, चौगुन लय में बजाने का अभ्यास (साथ में झाले के प्रकार विभिन्न प्रकार की तिहाईयाँ)। वादन के विद्यार्थी इतनी ही रचनाएँ अलग अलग राग तथा तालों में तैयार करेंगे।

(6) उपशास्त्रीय **संगीत - खमाज** और **तिलंग** इन रागों में गायन के लिए ठुमरी, एक दादरा या तत्सम अन्य कोई प्रादेशिक गीत प्रकार तैयार करना है। वादन के लिए एक-एक धून (अलग रागों में अपेक्षित है)। (7) **तालज्ञान** - अब तक सीखे हुये सभी तालों का संपूर्ण परिचय तथा उनको हाथ से ताल देकर विभिन्न लयकारियों में बोलना। तिलवाड़ा, झूमरा इन तालों के ठेके 2 में 3, 3 में 2 और 3 में 4, 4 में 3 लयकारी में बोलने का अभ्यास। तीनताल और झपताल के दो-दो कायदे हाथ से ताल देकर बोलने का अभ्यास (8) आमंत्रित श्रोताओं के सामने मंच प्रदर्शन।

शास्त्र-प्रथम प्रश्नपत्र-विभाग -1

(1) पाठ्यक्रम के सभी रागों का विस्तृत विवेचन लिखना तथा सोदाहरण समानता-विभिन्नता (आलाप-तानों के साथ) का विवेचन लिखने की क्षमता। (2) स्वर समुदाय से राग पहचानना। राग का विस्तार रागवाचक मुक्त आलप-तानों द्वारा लिखन की क्षमता। (3) पाठ्यक्रम के सभी रागों की विलम्बित और द्रुत बंदिशें/गतें लिपीबद्ध करने की तथा आलाप-तानों का तालबद्ध विस्तार लिखने की क्षमता। (4) ध्रुपद, धमार, तराना, चतुरंग, त्रिवट आदि रचनाओं को लिपिबद्ध करना। वादन के लिए चौताल, धमार और अन्य तालों में गतें लिपिबद्ध करना। इन बंदिशों/गतों की दुगुन, तिगुन, चौगुन, डेढगुन लिखने की क्षमता। (5) उपशास्त्रीय प्रकार गीत/धुन लिपिबद्ध करने का अभ्यास (6) पाठ्यक्रम में निर्धारित सभी तालों का विस्तृत विवेचन - ताल की संपूर्ण जानकारी, गायन-वादन में उनका प्रयोजन, उपयोगिता, महत्व आदि के साथ। सभी तालों की दुगुन, तिगुन, चौगुन डेढगुन लिखने का अभ्यास। ठेकों को 2 मं 3, 3 में 2 तथा 3 में 4, 4 में 3 लयकारी में लिखन का अभ्यास। तीनताल तथा झपताल के दो-दो कायदे लिपिबद्ध करना।

विभाग-2

(1) तानपुरा वाद्य की पूरी जानकारी का विवेचन तथा गायन /वादन में उसका महत्व। (2) गायन-वादन में ताल का महत्व तथा ताल वाद्यों की उपयोगिता। (3) निम्नलिखित विषयों का विस्तृत अध्ययन - मार्गी/देशी संगीत, गंधर्व गान, स्वस्थाननियम, कुतप, वृंदगान। (4) निम्नलिखित राग वर्गीकरण पद्धतियों का सोदाहरण विस्तृत विवेचन - (अ) ओडव, षाडव, संपूर्ण। (ब) थाट पद्धति (प्राचीन से आधुनिक कालतक - व्यंकटमखी, पं. भातखण्डे आदि) (क) राग-रागिणी, (ड) जन्य-जनक, (इ) राग-रागांग। (5) मध्यकालीन एवं आधुनिक स्वरसप्तक का तुलनात्मक अध्ययन। (6) तालशास्त्र की संक्षिप्त जानकारी-उद्गम, विकास की परंपरा के संक्षिप्त संदर्भ, ताल और ठेके आदि पर आधारित। (7) पं. भातखण्डे लिपिद्धति का गुणदोषात्मक विस्तृत अध्ययन।

द्वितीय प्रश्नपत्र-विभाग -1

(1) तानपुरे से निर्माण होने वाले सहायक (सांध्वनिक) नादों का विश्लेषणात्मक विस्तृत अध्ययन। साप/साम/साग संवाद एवं गणितानुसार तानपुरेसे उत्पन्न होने वाले सात स्वर। (2) तार की लम्बाई की सहायता से आन्दोलन संख्या के आधार पर स्वर निश्चित करना। (3) आवाज साधना शास्त्र का साधारण ज्ञान (संकल्पना, संशोधक के कार्य और ग्रंथ संदर्भ)। (4) सारणा चतुष्टयी के भरत एवं शारंगदेव द्वारा किये गए प्रयोगों का सोदाहरण विवेचन तथा उसके अनुसार श्रुति-स्वर विभाजन की जानकारी। (5) कर्नाटक संगीत के स्वर-ताल और राग-गीत पद्धति का सामान्य ज्ञान तथा उत्तर भारतीय स्वर-ताल तथा राग-गीत पद्धति से तुलनात्मक अध्ययन। (6) **संगीत के निम्नलिखित ग्रंथकारों का संगीत कें सैद्धान्तिक योगदान की जानकारी**- भरतमुनि, शारंगदेव, मतंगमुनि, रामामात्य, अहोबल, आचार्य बृहस्पति, ठाकुर जयदेवसिंह। (7) **निम्नलिखित वाद्यों की जानकारी**- (अ) **सुषिर वाद्य :** शहनाई, बाँसुरी (ब) **ततवाद्य :** सारंगी, व्हायोलिन।

विभाग-2

(1) निम्नलिखित निबद्ध गान प्रकारों का पूर्ण विवेचन - ख्याल, ठुमरी, तराना, टप्पा (2) संगीत में घराना पद्धति की संकल्पना तथा उनका संक्षिप्त इतिहास तथा गायन-वादन के घरानों की गुण विशेषताएँ। (3)निम्नलिखित विषयों का विस्तृत अध्ययन- (अ) हवेली संगीत (ब) रवीन्द्र संगीत (क) ओडिसी संगीत (ड) काव्य और संगीत (इ) वंदगान तथा वृंदवादन (4) निम्नलिखित विष्यों पर टिप्पणी लिखने का अभ्यास - (अ) पाश्चात्य संगीत पद्धति में नोटेशन के चिन्ह (ब) आधुनिक भारतीय फिल्म संगीत (क) आधुनिक भारतीय फिल्म संगीतकार (ड) पार्श्वगायन संकल्पना और पार्श्वगायक/गायिका (ई) ध्वनिमुद्रण संकल्पना और यंत्रों की संक्षिप्त जानकारी (5) **जीवनी और सांगीतिक योगदान**- उ. अब्दुल करीम खाँ, पं. कृष्णराव शंकर पंडित, सुरश्री केसरबाई केरकर, सुश्री गिरीजादेवी, प. जितेन्द्र अभिषेकी, पं. राजाभैया पूँछवाले, बाई सुंदराबाई, पं. लालमणी मिश्र, पं. डी. के. दातार, मुत्थुस्वामी दिक्षितर, पं. शंभु महाराज, पं. अंबादास आंगले, उ. अहमजान थिरकवाँ, कवि जयदेव। (6) **संक्षिप्त टिप्पणी लेखन** - बाग्गेयकार, धृपद की बानियाँ, गमक के प्रकार, आलाप-बोल आलाप, तान-बोलतान। (7) **निबंध विषय (न्यूनतम 400 शब्द)** (अ) रस और लय संबंध (ब) संगीत की वर्तमान समस्याएँ (क) साहित्य और संगीत (ड) जीवन में संगीत का स्थान। (8) **पं. पलुसकर प्रणित 'गांधर्व महाविद्यालय शिक्षाप्राणाली का ऐतिहासिक और सामाजिक योगदान।**

विशारद तृतीय (पूर्ण)-गायन/वादन (स्वरवाद्य)

पूर्णांक :500, न्यूनतम : 200, क्रियात्मक : 300, (मौखिक 200 + मंच प्रदर्शन 100),न्यूनतम : 120, शास्त्र (लिखित) 200 (100 +100), न्यूनतम : 80 (40 +40)

सूचना :- इस वर्ष में सभी रचनाएँ पं. वि. दि. पलुसकर पद्धतियों में लिपिबद्ध करनी है। (2) विलम्बित ख्याल (विलम्बित लय में) रूपक और झपताल में हो सकते है।

क्रियात्मक

(1) तानपुरा अपने गायन/वादन के लिए अपेक्षित स्वर में मिलाना। तानपुरा मिलाने की पद्धतियाँ सा-प, सा-म, सा-नि इनका सहायक नादों के संबंध में राग गायन के प्रति कारणमीमांसा का अध्ययन। (2) संगीत सभा में या महफिल में गाने/बजाने का अभ्यास तथा उसमें निश्चित निपुणता प्राप्त करना यह इस वर्ष अपेक्षित है। राग तालों का सटीक परिचय करवाने तथा संगीत के विभिन्न विषयों पर (क्रियात्मक/शास्त्र) अपने विचार व्यक्त करने तथा समझाने की योग्यता प्राप्त करन का अभ्यास/क्षमता पाना इस वर्ष में अपेक्षित है। अपना वाद्य ठीक ढंग से मिलाने की क्षमता अनिवार्य है। (3) गायकी/वादनशैली विकसित करते समय गायन/वादन के विभिन्न अंगों का संतुलन/समतोल या तारतम्य समझने की क्षमता तथा गायन/वादन में रसपूर्णता का प्रभाव/परिणाम निर्माण करने का अभ्यास। (4) राग-ताल-बंदिश (गीत)/गत की सांगीतिक प्रकृति का सूक्ष्म अध्ययन तथा अपनी क्षमता/मर्यादाओं के अनुसार गायकी/वादनशैली के विकसन के लिए अभ्यास। (5) शिक्षा, रियाज, चिंतन और प्रस्तुति इनके बारे में अनुभवपूर्णता/स्वानुभव विकसित करने की क्षमता। इन सभी मुद्दों को ध्यान में रखकर निम्नलिखित सभी रागों में एक-एक विलम्बित तथा द्रुत ख्याल/एक-एक मसीतखानी तथा रजाखानी गत तैयार करनी है। विलम्बित ख्याल/गत विविध तालों में तैयार करना अनिवार्य है। हर एक राग 30-35 मिनट तक गाने/बजाने की क्षमता अपेक्षित है। वादन के लिए विलम्बित गत/द्रुत गत वाद्य वादन-प्रभुता का परिचय करवाते मींड, घसीट, गमक प्रकार, जमजमा, कृतन व सूत इत्यादि (वाद्य विशेषनुसार) सहित संपूण विस्तार तथा झाला के विभिन्न प्रकार एवं तैयारी अपेक्षित है। **अध्ययन के लिए राग-ललित, बिलासखनी तोडी, जौनपुरी, मारुबिहाग, नंद, मिया मल्हार, हंसध्वनि, दरबारी, बसंत, तिलक कामोद।** (6) इस वर्ष के रागों में **गायन के लिए** एक ध्रुपद तथा एक धमार (दुगुन, तिगुन, डेढगुन, चौगुन के साथ तथा बोलबाँट और अतीत, अनागत लयकारी के साथ), दो तराने, एक त्रिवट इस प्रकार पाँच अन्य बंदिशे अलग-अलग रागों में तैयार करनी है। **वादन के लिए** - अपने वाद्य पर दुगुन, तिगुन डेढ़गुन, चौगुन तथा लयकारी (अतीत, अनागत) बजाने का अभ्यास, वादन की रचनाएँ चौताल और धमार ताल सहीत विभिन्न तालों में तैयार करनी है। झाला के प्रकार तथा विभिन्न प्रकार की लयकारियाँ बजाने की क्षमता अपेक्षित। (7) **उपशास्त्रीय संगीत- कालिंगडा** और **भैरवी** इन रागों में गायन के लिए एक ठुमरी, एक दादरा/अन्य कोई प्रादेशिक भाषा में गीत प्रकार तथा वादन के लिए इन्हीं रागों में एक-एक धून तैयारी के साथ प्रस्तुत करनी है। (8) ताल अध्ययन - अभी तक सीखे हुए सभी तालों का संपूर्ण परिचय तथाा उनको हाथ से ताल देकर बोलना तथा विभिन्न लयकारियों में बोलना (डेढगुन, तिगुन इत्यादि)। झपतला, रूपक, आडाचौताल, तालों के ठेकें 2 में 3, 3 में 2, 3 में 4, 4 में 3 इसी लयकारी में बोलना। एकताल तथा रूपक के दो-दो कायदे हाथ से ताल देकर बोलने की क्षमता। (9) आमंत्रित श्रोताओं के सामने मंच प्रदर्शन।

शास्त्र - प्रथम प्रश्नपत्र - विभाग -1

(1) पाठ्यक्रम के सभी रागों का विस्तृत विवेचन तथा सोदाहरण समानता - विभिन्नता का अध्ययन तथा उसे लिखना। (2) स्वर समुदाय से राग की पहचान तथा राग का मुक्त आलाप द्वारा विस्तार लिखना। तथा बंदिश पर आलाप, बोल आलाप, बोलतान, तान और गत पर आलाप, गमक/लयकारी, तान द्वारा राग का स्वरूप स्पष्ट करना। (3) राग का मुख्य अंग और आरोह-अवरोह, स्वरलगाव/कण, मींड/गमक/खटका/मुरकी सहित रागवाचक स्वरों का चलन, वादी-संवादी, अविर्भाव-तिरोभाव इत्यादि सहित बंदिश/गत और रागविस्तार इनके अंत: संबंध का सोदाहरण विस्तृत विवेचन लिखना। (4) **निम्नलिखित रागवर्गीकरण पद्धतियों का विस्तृत अध्ययन** - (अ) शुद्ध-छायालग-संकीर्ण (ब) परमेल प्रवेशक राग (क) 'संगीतरत्नाकर' के अनुसार दशविध राग वर्गीकरण (ड) रागांग-भाषांग-क्रियांग-उपांग (इ) मूर्च्छना-जाति-राग (फ) शुद्धराग-जोडराग-मिश्रराग। (5) **गायन/वादन के संदर्भ में** पाठ्यक्रम के सभी तालों का विस्तृत विवेचन (निर्मिति, उपयोगिता तथा महत्व) तथा उन्हें लिखने की क्षमता-तालों की ठाह, दुगुन, तिगुन, चौगुन लिखना। ठेकों को 2 में 3, 3 में 2 तथा 3 में 4, 4 में 3 लयकारी में लिखना। किसी ताल का दूसरे ताल में रूपांतर करने की तथा लिखने की क्षमता। (6) उपशास्त्रीय गीत प्रकार तथा तराना, चतुरंग, त्रिवट इ. लिपिबद्ध करना। (7) ध्रुपद, धमार की बंदिश/गत की डेढगुन, चौगुन लिखना। (8) एकताल तथा रूपक के दो-दो कायदे लिपिबद्ध करना। (9) दिए हुए स्वर-राग-ताल तथा गीत के आधार पर नयी बंदिश बनाकर लिपिबद्ध करना।

विभाग-2

(1) मुर्च्छना प्रयोग की जानकारी तथा उससे मिलने वाले स्वर सप्तकों का सोदाहरण विवेचन, किसी एक सप्तक के (शुद्ध सवरों का या कोमल स्वरों का) आधार पर। (2) वीणा के तार पर मध्यकालीन एवं आधुनिक संगीतज्ञों द्वारा बताये गए स्वर स्थानों की तुलना। (3) स्वरलिपि ग्रंथ और ग्रंथकारों की जानकारी निम्नलिखित मुद्दों के आधार पर- ग्रंथनाम, लिपि पद्धति, समाविष्ट सांगीतिक साहित्य का वैशिष्ट्य, साहित्य के समावेश की दृष्टि इत्यादि (ग्रंथकार-पं. पलुसकर, पं भातखण्डे, पं. मिराशीबुना, पं. विनायकराव पटवर्धन, प्रा. बी. आर. देवधर, पं. कुमार गंधर्व, प. रामाश्रय झा, पं. श्री ना. रातंजनकर)। (4) स्वर सप्तक का प्राचीन से आधुनिक काल तक विकास तथा उत्तर भारतीय राग संगीत के संदर्भ में उसका स्थान तथा महत्व। (5) पाश्चात्य संगीत के निम्नांकित सिद्धान्तों का सामान्य अध्ययन -Vibrtion, Frequency, Duration, Interval, Natural Scale, Tempered Scale Octave, Major Tone, Minor Tone, Semi Tone. स्वरों के नाम D.E.F.G.A.BA.C (6) पाचीन प्रबंध गायन के नियम तथा प्रकार।

द्वितीय प्रश्नपत्र-विभाग - 1

(1) राग संकल्पना की उत्पत्ति एवं विकास। (2) ख्याल गायन शैली की उत्पत्ति एवं विकास। (3) ठुमरी गायन शैली की उत्पत्ति एवं विकास। (4) भारतीय ताल संकल्पना की उत्पत्ति एवं विकास। (5) संगीत के संदर्भ में छंद की संकल्पना तथा लय और लयकारी का गायन/वादन में निहित अंत: संबंध का विस्तृत विवेचन। (6) स्वरलिपि पद्धतियों का क्रमिक विकास। (7) गीत-वाद्य-नृत्त के आंतरिक संबंध का विस्तृत अध्ययन। (8) जीवनी और सांगीतिक योगदान - उ. अमीर खाँ, पं. डी. व्ही. पलुसकर, बालगंधर्व, उस्ताद बडे गुलाम अली खाँ, श्रीमती मोगुबाई कुर्डीकर, पं. मल्लीकार्जुन मन्सूर, उ.बुंदू खाँ, सुश्री एन.राजम, पं. रामामात्य, पं. व्यंकटमखी, बिरजू महाराज, कुदौसिंह, पं. किशन महाराज, उ. विलायत खा। (9) समीक्षा की संकल्पना का प्राथमिक अध्ययन और संगीत समीक्षा की संक्षिप्त जानकारी।

विभाग- 2

(1) निम्नलिखित नृत्यशैलियों की संक्षिप्त जानकारी- कत्थक, भरतनाटयम्, ओडिसी, लावणी, मणिपुरी, कथकली, कुचिपुडी। (2) संगीत आर आधुनिक दृक्श्राव्य प्रचार-प्रसार माध्यम (1875 से आज तक)। (3) संगीत का अध्ययन - अध्यापन तथा प्रस्तुतिकरण की प्रक्रिया में वैज्ञानिक/विद्युत/यांत्रिक उपकरणां का महत्व। (4) संगीत का अध्ययन-अध्यापन (अ) पारंपारिक (गुरुशिष्य) तथा (ब) आधुनिक (संस्थागत) के बारे में विस्तृत तथा तौलनिक विवेचन। (5) संगीत सभाओं का आयोजन तथा संचालन की जानकारी। (6) पं. विष्णु दिगम्बर पलुसकर जी का जीवन और कार्य के बारे में विस्तृत जानकारी (प्रो.बी.आर. देवधर लिखित पं. पलुसकर चरित्र के आधार पर) तथा इस चरित्र का भाषा, समीक्षा तथा सामाजिक अध्ययन। (7) **निबंध विषय (न्यूनतम 400 शब्दों में)** (अ) प्रचलित शिक्षा पद्धति में संगीत का महत्व

(ब) समाज के प्रति कलाकार की जिम्मेदारी (क) ऋतुचक्र और संगीत (ड) वैदिक संगीत (इ) गुरु शिष्य परंपरा एवं आधुनिक शिक्षा पद्धति (8) **निम्नलिखित वाद्यों की जानकारी**-तंत्रीवाद्य :- वीणा (बीन), सितार, सरोद, संतूर। (9) संगीत में सर्वसमावेशकता का परिचय, निम्नलिखित मुद्दों के आधार पर-भाषा, गणित, इतिहास, भूगोल (जियोग्राफी) और भिन्न भिन्न शास्त्र (फिजिक्स तथा मानशास्त्र, समाजशास्त्र, शिक्षणशास्त्र, पर्यावरण, सांस्कृतिकता आदि)।

अलंकार प्रथम-गायन/वादन (स्वरवाद्य)

पूर्णांक :600, न्यूनतम : 270, क्रियात्मक : 400, (मौखिक 200 + मंच प्रदर्शन 200),न्यूनतम : 180, शास्त्र (लिखित) 200 (100 +100), न्यूनतम : 90 (45+45)

सूचना :-(1) इस वर्ष में सभी रचनाएँ पं. वि. ना. भातखण्डे पद्धति में लिपिबद्ध करनी है। (2) विलम्बित ख्याल (विलम्बित लय में) रूपक और झपताल में हो सकते है।

क्रियात्मक

(1) इस वर्ष में निर्धारित किए गए रागों में विलम्बित और द्रुतलय की रचनाओं के साथ आधा-पौन घण्टे तक गाने/बजाने की क्षमता विद्यार्थी में होनी चाहिए। इन सभी रागों में आलाप, बोल आलाप, बोलतान और तान सहित पूर्ण विस्तार तैयारी के साथ अपेक्षित है। इसके अलावा इन रागों में रागस्वरूप तथा बंदिशों की रचना आदि का वैविध्य का ध्यान रखकर, किन्ही पाँच रागों में 3-3 बड़े और 3-3 छोट ख्याल/गतें इस तरह अतिरिक्त बंदिशों का/गतों का अच्छा संकलन विद्यार्थी को करना चाहिए। (2) ध्रुपद, धमार, तराने, चतुरंग, त्रिवट की बंदिशे,/विविध तालों में गतें आदि को भी समुचित प्रतिनिधित्व हो। गायन/वादन की विभिन्न शैलियों की रचनाओं के लिए भी ध्यान रखा जाए। (3) उप शास्त्रीय प्रकार-ठुमरी-दादरा/धुन दो अलग रागों में तथा टप्पा-गायन की बंदिशें/वादन में इसी तरह की गतें दो अलग रागों में तैयार करनी है। (4) सभी प्रचलित तालों के ठेके विभिन्न लयकारियों (दुगुन, तिगुन, चौगुन, डेढगुन, सवागुन आदि) में बोलने का अभ्यास होना चाहिए। (5) स्वरलिपि करने तथा पढ़ने में विशेष योग्यता तथा तुरन्त नई रचना बनाने का अभ्यास अपेक्षित है।

अध्ययन के लिए राग- हिंडोल, गुर्जरी तोडी, नटभैरव, गौडसारंग, मधुवंती, कामोद, पूरिया, जयजयवंती, मालकंस, चंद्रकंस, खंबावती, आभोगी, मारवा, अडाणा। उपशास्त्रीय के लिए - सिंधुरा, पीलु। टप्पा गायन के लिए - काफी, खमाज।

(6) मंडल की प्रथम परीक्षाओं में (मध्यमा पूर्ण तक) जो मूल रागों की प्राथमिक गायकी और बंदिशें होती है, उन्हीं मूल रागों मं इस वर्ष के विद्यार्थी अपनी-अपनी विशिष्ट शैली या घरान की गायकी का प्रयोग कर सके इसी उद्देश्य से इस वर्ष कुछ मूल राग निर्धारित किए है। इनमें से किन्हीं पाँच रागों को तैयार करना है। अध्ययन के लिए मूल राग- भैरव, जौनपुरी, अल्हैया बिलावल, भीमपलासी, यमन, मारवा, बिहाग।

(7) ठेकें बजाने का अभ्यास। (8) आमांत्रित श्रोताओं के सामने मंच प्रदर्शन।

शास्त्र-प्रथम प्रश्नपत्र - विभाग -1

(1) इस वर्ष के पाठ्यक्रम के सभी रागों का विस्तृत विवरण तथा उनके सम्बन्ध में उपलब्ध विभिन्न मतों की चर्चा। समप्रकृतिक रागों का तुलनात्मक अध्ययन। रागों के लक्षण तथा रागों में स्वर लगाव का महत्व। (2) इस वर्ष के लिए निर्धारित रागों में मुक्त आलाप-विस्तार मुक्त तानें लिखना। बंदिश के आधार पर आलाप, बोल आलाप, बोलतान, तान/गत के आधार पर आलाप, वाद्य वैशिष्टय के अनुसार गमक, तान सहित राग विस्तार लिखना। बंदीश/गत के आधार पर विभिन्न प्रकार की लयकारियाँ तथा तिहाईयों की रचना लिखना। (3) पाश्चात्य स्वरलिपि का विस्तृत अध्ययन। (4) उपशास्त्रीय गीत/धुन प्रकारों की स्वरलिपि लिखना। (5) ध्रुपद, धमार की बंदिशों की/चौताल, धमार में गतों की तिगुन तथा डेढगुन या बोलबाँट लिखना। (6) त्रिताल और झपताल के दो-दो कायदे लिखने का अभ्यास। (7) दिए गए काव्यशब्द/स्वर समूह के आधार पर दिए गये राग-ताल में नयी बंदिश/गत तैयार करके लिखना।

विभाग- 2

(1) भारतीय संगीत में स्वरलिपि पद्धतियों का इतिहास तथा उनका तुलनात्मक सोदाहरण विस्तृत विवेचन। (2) समान मात्राओं के तालों का संपूर्ण तुलनात्मक अध्ययन- (अ) कहरवा, तीनताल, तिलवाडा, अद्धा, पंजाबी (ब) दादरा, एकताल, चौताल (क) झूमरा, आडाचौताल, दीपचंदी, चाचर (ड) रूपक, तेवरा, (इ) झपताल, झंपा, सूलताल। (3) संगीत के विभिन्न गीत प्रकारों का समुचित ज्ञान। (4) राग-रागांग वर्गीकरण के आधार पर निम्नलिखित रागों का विस्तृत विवेचन-भैरव, बिलावल, सारंग, काफी, कल्याण, बिहाग। (5) गायन/वादन शैली निर्माण की सांगीतिक कारणमीमांसा। (6) पाठ्यक्रम में निर्धारित रागों के आधार पर शुद्ध राग/जोडराग/मिश्रराग की संकल्पना का सोदाहरण विस्तृत अध्ययन (किसी एक राग को आधार मान कर।) (7) ठुमरी और टप्पा इन गायन शैलियों का सोदाहरण विवेचन।

द्वितीय प्रश्नपत्र-विभाग -1

(1) रस की परिभाषा का स्पष्टीकरण तथा भारतीय रस सिद्धान्त की विस्तृत जानकारी- भरत एवं अभिनवुप्त के अनुसार रस के प्रकार। (2) संगीत का रस के साथ सम्बन्ध इस विषय में प्राचीन सिद्धान्त एवं व्यवहारत: स्वर, लय, राग, ताल तथा छंद और बंदिश/गत इनका रस से सम्बन्ध पर विवेचन। (3) घराना - उसका स्वरूप, ऐतिहासिक जानकारी, घरानों के प्रमुख कलाकारां की गायकी की समालोचना तथा घरानों की आवश्यकता सम्बन्धी विवेचन। (4) (अ) ध्वनि शास्त्र Acoustics (ब) आदर्श सभागृह का इतिहास (5) पाश्चात्य म्यूझिकॉलॉजी और भारतीय संगीत शास्त्र (6) भारतीय काव्यशास्त्र की संक्षिप्त जानकारी, काव्यशास्त्रकार और उनके सिद्धान्त के आधार पर - (भरत, अभिनवगुप्त, रुद्रट, मम्मट, आनंदवर्धन, विश्वनाथ, जगन्नाथ, राजशेखर, दंडी, वामन, हेमचंद आदि)। (7) भारतीय संगीत के विकास में संगीत शास्त्रकारों का योगदान। (8) **जीवनी और सांगीतिक योगदान** - पं. कुमारगंधर्व, पं. श्रीकृष्ण रातंजनकर, बेगम अख्तर, उ. विलायत हुसेन खाँ, सवाई गंधर्व, श्रीमती अंजनीबाई मालपेकर, पं. रवीशंकर, उ. बिस्मिला खाँ, पं. व्ही. जी. जोग, त्यागराज, पं. नारायण मोरेश्वर खरे, लच्छु महाराज, उदयशंकर, पं. कंठे महाराज।

विभाग- 2

(1) संगीत की उत्पत्ति एवं विकास के सम्बन्ध में भारतीय एवं पश्चिमी मत। (2) वैदिक संगीत, रामायण, महारभारत, पुराण, प्रतिशाख्य, एवं शिक्षाओं में संगीत। (3) भरत, मतंग एवं शार्गदेव कालीन संगीत। (4) कला एंव सौन्दर्य के सम्बनध में पश्चिमी, पौर्वात्य, भारतीय दर्शन का साधारण ज्ञान। (5) संगीत कला-मंच प्रदर्शन की आवश्यकता, प्रदर्शन की परिस्थिति में हुए परिर्वतन, श्रोताओं की रूचि में परिवर्तन, संगीत सभा के स्वरूप में परिवर्तन (महफिल, संगीत, सम्मलेन, रेडिओ/टी.वी.

कार्यक्रम आदि के सम्बन्ध में) (6) मंच प्रदर्शन के सम्बन्ध में कलाकार के व्यक्तित्व की आंतरिक परिस्थिति-रागों का/बंदिशों का संग्रह, संगत का चुनाव, कार्यक्रम के लिए रचनाओं का चुनाव, व्यक्तिगत पसंदगी, व्यवहार का ढंग, वेशभूषा, समय का निर्धारण आदि। (7) कलाकार के लिए आहार-विहार तथा व्यायाम का महत्व। (8) **निबंध लेखन (न्यून तक 500 शब्दों में)** (अ) संगीत - एक जीवन कार्य (ब) कलाकार का सामाजिक महत्व (क) धर्म और संगीत (ड) संगीत को संत कवियों की देन (इ) संगीत के प्रति समाज की जिम्मेदारी (9) संगीत समीक्षा लेखन के मुल तत्वों का विस्तृत अध्ययन। संगीत समीक्षा का ऐतिहासिक तथा आधुनिक काल और प्रसार - प्रचार माध्यम में संगीत समीक्षा।

अलंकार पूर्ण-गायन/वादन (स्वरवाद्य)

पूर्णांक :600, न्यूनतम : 270, क्रियात्मक : 400, (मौखिक 200 + मंच प्रदर्शन 200),न्यूनतम : 180, शास्त्र (लिखित) 200 (100 +100), न्यूनतम : 90 (45 +45)

सूचना :- इस वर्ष में सभी रचनाएँ पं. वि. दि. पलुसकर पद्धति में लिपिबद्ध करनी है। (2) विलम्बित ख्याल (विलम्बित लय में) रूपक और झपताल में हो सकते ह।

क्रियात्मक

(अलंकार प्रथम से दिए हुए क्र. 1 से 4 तक तथा क्र. 7 और 8 यह सभी मुद्दे यहाँ कायम रखे गए है।) **अध्ययन के लिए राग- रामकली, देवगिरी बिलावल, देसी, श्री, पूर्वी, श्यामकल्याण, मधुकंस, छायानट, जोगकंस, नायकी कानडा, गौडमल्हार, मेघमल्हार, परज, सोहनी। उपशास्त्रीय के लिए- गारा और जोगिया। टप्पा गायन के लिए- तिलंग और भैरवी। (मूल रागों के बारे में अलंकार प्रथम में क्र. 6 में दिए हुये सभी मुद्दे यहाँ कायम रखे गए है।) मूल राग-आसावरी (शुद्ध रे), भूप, मियामल्हार, बागेश्री, केदार, पूरिया, धनाश्री।**

शास्त्र - प्रथम प्रश्नपत्र - विभाग - 1

(1) इस वर्ष के रागों का विस्तृत अध्ययन तथा पहले सीखे हुए रागों के साथ उनकी तुलना (2) इस वर्ष के लिए निर्धारित रागों में मुक्त आलाप-विस्तार, मुक्त तानें लिखना। बंदिश के आधार पर आलाप, बोल आलाप, बोलतान, तान/गत के आधार पर आलाप, वाद्य वैशिष्टय के अनुसार गमक, तानों सहित रागविस्तार लिखना। बंदीश/गत के आधार पर विभिन्न प्रकार की लयकारियाँ तथा तिहाईयों की रचना लिखना। (3) समान मात्राओं वाले तालों का तुलनात्मक अध्ययन-विवेचन तथा पाठ्यक्रम की तालों को आड, कुआड, बिआड के साथ अन्य कठिन लयकारियों में लिखने का अभ्यास। (4) एकताल और रूपक दो तालों के दो-दो कायदे लिखने का अभ्यास। (5) उपशास्त्रीय गीत/धुन लिपिबद्ध करने का अभ्यास। (6) सीखी हुई सभी बंदिशों को/गतों को लिपिबद्ध करना। (7) दिए गए काव्यशब्द/स्वरसमूह के आधार पर दि गए राग-ताल में नयी बंदिश/गत बानाकर लिपिबद्ध करना।

विभाग- 2

(1) नये रागों के निर्माण के सिद्धान्त, नये रागों की आवश्यकता तथा मिश्र, जोड, संकीर्ण रागों के निर्माण के तत्व तथा उनका विश्लेषण। (2) राग-रागांग वर्गीकरण का विवेचन एवं निम्नलिखित रागों का विशेष अध्ययन - तोडी, आसावरी, श्री, नट, कानडा, मल्हार (3) निबद्ध गान और उसके प्रकार - प्रबन्ध से वर्तमान रचनाओं तक (4) तन्त्रवाद्य की सभी प्रकार की रचनाओं का विस्तृत विवेचन। (5) संगीत में गीत, वाद्य, नृत्य इनका आपसी संबंध अर्थात् आंतरविद्याशाखीय दृष्टिकोण। (6) ध्रुपद-ख्याल का तुलनात्मक विस्तृत अध्ययन। (7) जीवनी और सांगीतिक योगदान - बडे रामदासजी, पं. भीमसेन जोशी, श्रीमती हिराबाई बडोदेकर, पं. गोविंदराव टेंबे, पं. जगन्नाथबुवा पुरोहित, पं. शंकरराव व्यास, रसूलनबाई, रामचतुर मलिक, पं. सियारामशरण तिवारी, उ. अल्लाउद्दीन खाँ, पं. गजाननबुवा जोशी, एम.एस. सुब्बलक्ष्मी, शार्गदेव, प्रा. बी.आर.देवधर, बिन्दादीन महाराज, रोशनकुमारी, पं. अनोखेलाल मिश्र।

द्वितीय प्रश्नपत्र - विभाग - 1

(1) संगीत रचना के तत्व - स्वर, स्वर संगीत (Melody), लय (Rythm), छन्द (Metre),काव्यार्थ (Poetic Content)भाषा/गीत रचना का चुनाव, वाद्यों का उपयोग, संगीत रचना में इन सबका संयोग, संगीत रचना के बारे में औचित्य विचार आदि का विवेचन। (2) नयी बंदिश की रचना करना, कविता को स्वरबद्ध करना, कविताओं को राग-ताल में बाँधना। (3) विभिन्न अवसरों के लिए उपयुक्त स्वर/ताल रचना वृन्दगान, वृन्दवादन, नृत्य, नाटय आदि के लिए बाँधना। (4) संगीत विषयक शास्त्र ग्रंथों का अध्ययन - (ग्रंथकार के विचार, ग्रंथ में विषयों का अनुक्रम, ग्रंथ में व्यक्त हुये सांगीतिक सिद्धान्त तथा ग्रंथ का महत्व इत्यादि के आधार पर) नाट्यशास्त्र, दत्तिलम्, बृहद्ददेशी, संगीत रत्नाकर, स्वरमलकलानिधि, चतुर्दंडीप्रकाशिका। (5) भारतीय संगीत के बारे में सौंदर्यात्मक विवेचन। (6) लोकसंगीत विषयक भिन्न भिन्न मतों का विस्तृत अध्ययन।

विभाग- 2

(1) उत्तर हिन्दुस्तानी एवं दक्षिण हिन्दुस्तानी (कर्नाटक) संगीत पद्धति की तुलना, दोनों पद्धतियों में प्रचलित प्रबन्ध प्रकार तथा उनका विश्लेषण और तुलना। स्वर, लय, राग, ताल, बंदिशों की प्रस्तुति के स्वरूप का विवेचन। (2) संगीत के आविष्कार के आधुनिक प्रकार - पार्श्व संगीत, पार्श्व गायन, वृन्दवादन, वृंदगान, संगीत नाटक, संगीतिका, चित्रपट संगीत (सिनेमा) आदि का विस्तृत विवेचन। (3) शारंगदेव कालीन संगीत तथा मध्यकाल में भारतीय संगीत एवं अन्य संगीत पद्धतियां का पारस्परिक संबंध। (4) आधुनिक काल में भारतीय संगीत पाश्चात्य संगीत के प्रभाव इस पर विभिन्न दृष्टिकोण और आपके विचार। (5) विदेशों में भारतीय संगीत का प्रभाव-प्राचीन तथा मध्ययुगीन संदर्भ और आधुनिककाल की जानकारी (6) निम्नलिखित वाद्ययंत्रों का ऐतिहासिक ज्ञान - मत्तकोकिला, चित्रा, विपञ्ची, घोषा, किन्नरी, त्रितन्त्री, मृदंग, पटह, पुष्करवाद्य, हुडुक्का, वंशी, मधुकारी, करताल, झाँज-मंजिरा, घंटा। (7) **शोध निबन्ध**/प्रबंध की लेखन पद्धति तथा आधुनिक संशोधन पद्धतियों का संगीत संशोधन से गुण-दोषात्मक सम्बन्ध। (8) **निबंध लेखन (न्यूनतम 500 शब्दों में)** (1) लयताल और मनोभाव (2) गुरु और शिष्य परम्परा तथा दोनों का परस्पर कर्तव्य (3) समाज में संगीत शिक्षा की आवश्यकता। (4) कलाकार का समाज में स्थान (5) भक्तिकाव्य और संगीत। (9) **समीक्षा लेखन की भाषाशैली तथा संगीत समीक्षा के विविध रूप**- ग्रंथ लेखन, प्रासंगिक लेखन, महफिल का वृत्तांत, कलाकार की मुलाकात, श्रेत्रीय नयी/पुरानी जानकारी, वृत्तपत्र/मासिक में लेख आदी। आधुनिक काल में आकाशवाणी और दूरदर्शन पर होने वाली संगीत समीक्षा।

तबला

संगीत परिचय - तबला

जनवरी से दिसम्बर तक / जून से मई तक

(पूरे वर्ष में 40 घंटे)

सूचना :- इस वर्ष के लिए परीक्षा नहीं होगी। खुद शिक्षक द्वारा केवल वार्षिक पाठ्यक्रम पूर्तता के लिए विद्यार्थी का मूल्यमापन होगा।

(1) संगीत श्रवण (तबला वादन तथा गायन/अन्य स्वरवाद्य आदी) करवाना । (2) पढन्त-ताली देकर लय को बोलना (प्राथमिक पढन्त से लय का अभ्यास)। (3) असंयुक्त वर्णों का निकास (क्रमशः ना, गे, के, ती ट, तू, ति) (4) वाद्य परिचय (5) मात्रा, सम, आवर्तन का सामान्य ज्ञान (सरल छंदों के माध्यम से) (6) 6, 7, 8, 16 मात्रा के आवर्तनों का लयात्मक ज्ञान। (7) 'धा धा तीट धाधा तूना' मुख बजाने का अभ्यास।

प्रारंभिक- तबला

सूचना :- इस वर्ष क लिए परीक्षा नहीं होगी। खुद शिक्षक द्वारा केवल वार्षिक पाठ्यक्रम पूर्तता के लिए विद्यार्थी का मूल्यमापन होगा।

क्रियात्मक

(1) तबले पर बजाने वले सभी प्रमुख वर्णों के वादन विधि का समुचित ज्ञान। (2) निम्नलिखित सभी तालों को ठाह तथा दुगुन में हाथ से ताली, खाली दिखाकर बोलने तथा बजाने की क्षमता - त्रिताल, झपताल, दादरा तथा कहरवा (3) निम्नलिखितानुसार वादन करने की क्षमता- (अ) त्रिताल-'तिट' एवं 'तिरकिट' का एक-एक कायदा, तीन पलटें तिहाई सहित (ब) त्रिताल और झपताल में सम से सम तक न्यूनतम एक तिहाई।

शास्त्र (मौखिक रूप में)

निम्नलिखित पारिभाषिक शब्दों की जानकारी- मात्रा, ताल, आवर्तन, सम, ताली, खाली, विभाग (खंड), ठाह (एक गुन), दुगुन।

प्रवेशिका प्रथम-तबला

पूर्णांक :70, न्यूनतम : 26, क्रियात्मक : 60, शास्त्र मौखिक : 15

क्रियात्मक

(1) रूपक तथा एकताल को बराबर तथा दुगुन में बजाने की क्षमता। (2) निम्नानुसार वादन करने की क्षमता (अ) त्रिताल - दो किस्में, 'धाती' का एक कायदा, तीन पलटे तिहाई सहित, दो मुखडे, दो टुकडे, सम से सम तक दो तिहाईयाँ। (ब) झपताल - दो किस्में 'तिट' का एक कायदा, तीन पलटे, तिहाई, एक टुकड़ा और सम से सम तक दो तिहाईयाँ।

शास्त्र (मौखिक रूप में)

(1) निम्नलिखित पारिभाषिक शब्दों की जानकारी - संगीत, नाद, लय, बोल, ठेका, किस्म, कायदा, मुखडा, तुकड़ा, तिहाई (2) रूपक तथा एकताल के ठेके बराबर तथा दुगुन में हाथ से ताली-खाली दिखाकर बोलने की क्षमता। (3) तबला वाद्य के विभिन्न अंगों का वर्णन।

प्रवेशिका पूर्ण-तबला

पूर्णांक :125, न्यूनतम : 44, क्रियात्मक : 75, शास्त्र मौखिक : 50

क्रियात्मक

(1) निम्नलिखित तालों के ठेकों को हाथ से ताल देकर (ताली-खाली दिखाकर) ठाह तथा दुगुन लय में बोलने तथा बजाने का अभ्यास : धुमाली, दीपचंदी (2) **निम्नानुसार वादन करने की क्षमता** - (अ) त्रिताल - 'त्रक' तथा 'धातीधागे' का एक एक कायदा, चार पलटे तथा तिहाई सहित, 'तिरकिट' का एक कायदा दो पलटे तथा तिहाई सहित, दो टुकडे एक चक्रदार। (ब) झपताल - दो कायदे, चार पलटे और तिहाई सहित। (क) एकताल - दो टुकड़े, दो तिहाईयाँ, दो टुकड़े। (3) छोटा ख्याल अथवा रजाखानी गत के साथ त्रिताल में संगत करने की क्षमता। (4) पाठ्यक्रम की सभी रचना प्रकारों की हाथ से ताल देकर पढन्त।

शास्त्र (मौखिक रूप में)

(1) विलम्बित, मध्य तथा द्रुतलय का ज्ञान। (2) तबले के विभिन्न वर्ण और उन्हें अपने वाद्य पर निकालने की विधि। (अ) केवल तबले पर बजने वाले वर्ण (ब) केवल बायें पर बजने वाले वर्ण (क) दोनों हाथ से एक साथ बजने वाले वर्ण (3) निम्नलिखित बोलों की निकास का ज्ञान- तिरकिट, तक्डान्, क्डधा, किटतक, धिडनग, धिधिर, त्रक, क्डधान्, गदिगन (4) पं. प्लुसकर तथा पं. भातखण्डे ताल लिपि पद्धतियों का सामान्य ज्ञान :- सम, ताली, खाली विभाग (खंड) के चिन्हों का परिचय, (5) निम्नलिखित पारिभाषिक शब्दों की जानकारी - स्वर, सप्तक, रेला, पलटा, उठान, तिगुन, चौगुन।

मध्यमा प्रथम-तबला

पूर्णांक :200, न्यूनतम : 70, क्रियात्मक : 125, न्यूनत : 44, शास्त्र : 75, न्यूनतम : 26

क्रियात्मक

(1) (अ) तबला स्वर में मिलाने क नियम (ब) सभी संगीत प्रकारों की संगति के लिए प्रयुक्त होने वाले विभिन्न स्वरों के तबले की जानकारी। (2) निम्नलिखित तालों के ठेकें बजाने की क्षमता - तिलवाडा, आडाचौताल, अद्धा, खेमटा, सूलताल, तीव्रा (3) त्रिताल, एकताल, झपताल को विलम्बित लय में बजाने की

क्षमता। (4) (अ) विलम्बित त्रिताल तथा झपताल में मुखडे बजाकर सम पर आना। (ब) कहरवा, दादरा में लग्गी लगाना और तिहाई लेकर ठेका पकड़ना। (5) निम्नानुसार वादन करने की क्षमता - त्रिताल - (अ) एक चतस्त्र तथा एक तिस्त्र जाति कायदा, चार पलटें और तिहाई सहित (ब) 'धिरधिर' का रेला तीन पलटों के साथ, एक गत, दो टुकड़े, एक फरमाईशी चक्रदार। (क) 1, 5, 9, 13 मात्राओं से तिहाई लेकर सम पर आने का अभ्यास। झपताल - दो कायदे (पाँच पलटे), एक रेला (तीन पलटे), तीन तिहाई (सम से सम तक), दो टुकड़े, दो मुखडे, एक चक्रदार सहित 15 मिनट तक वादन करने की क्षमता। (6) निम्नलिखित बोल बजाने की क्षमता - (अ) धिरधिर किटतक तकीट धाऽ (ब) धात्रक धिकिट कतगदिगन (क) दिगदिनागीना (न) (ड) तक् दिन तक् (7) निम्नलिखित तालों को हाथ से देकर तिगुन में बोलने की क्षमता- त्रिताल, झपताल, एकताल, रूपक (8) त्रिताल में एक गत तथा एक फरमाईशी चक्रदार हाथ से ताल देकर बोलने की क्षमता। (9) किसी राग में मध्यलय की एक बंदिश (केवल बंदिश) गाने की क्षमता।

शास्त्र

(1) तबले का संक्षिप्त इतिहास (17वी शताब्दी से) (2) बाज और घराने को परिभाषित करते हुये निम्नलिखित घरानों की सोदाहरण विस्तृत जानकारी - (अ) दिल्ली (ब) लखनऊ (पूरब) (3) निम्नलिखित गायन प्रकारों की संक्षिप्त जानकारी - ख्याल (विलम्बित/द्रुत), ठुमरी, भजन, तराना (4) स्वतंत्र वादन तथा संगति की साधारण जानकारी (5) तबला वादक के गुणदोष (6) निम्नलिखित पारिभाषिक शब्दों की जानकारी : कायदा, रेला, गत, चक्रदार, तिहाई (बेदम/दमदार), मोहरा। (7) पं. भातखण्डे ताललिपि का संपूर्ण परिचय तथा त्रिताल, झपताल में होने वाली विभिन्न रचनाओं को इसी लिपि में लिपिबद्ध करना।

मध्यमा पूर्ण-तबला

पूर्णांक :200, न्यूनतम : 70, क्रियात्मक : 125, न्यूनत : 44, शास्त्र (लिखित) : 75, न्यूनतम : 26

क्रियात्मक

(1) निम्नलिखित तालों के ठेके हाथ से ताल देकर दुगुन सहित बोलना तथा बजाना-झूमरा, पंजाबी, धमार। (2) तबले को उचित ढंग से स्वर में मिलाने का अभ्यास तथा एकताल और तोनताल में बड़े ख्याल/स्वरवाद्य की विलम्बित गत के साथ संगत करने की क्षमता। (3) निम्नानुसार वादन करने की क्षमता-(अ) त्रिताल, पेशकार, तिस्त्र एवं चतस्त्र जाति के कायदे, तिरकिट, धिरधिर, दिन तक क रेल, गते चक्रदार, टुकडे आदि बजाकर 20 मिनट तक स्वतंत्र वादन करने की क्षमता। (ब) रूपक, झपताल, एकताल में तैयारी के साथ कायदे, रेले टुकडे (सभी के दो दो प्रकार) आदि बजाने की क्षमता। (क) त्रिताल, एकताल, झपताल, का ठेका द्रुत/अतिद्रुत लय में बजाने की क्षमता। (ड) त्रिताल, झपताल, एकताल की 'आड' हाथ से ताल देकर बोलना तथा बजाना। (इ) त्रिताल में एक कमाली चक्रदार और झपताल तथा रूपक में एक-एक फरमाईशी चक्रदार बजाना तथा बोलना। (4) किसी राग में मध्य तथा द्रुत लय में एक बंदिश (केवल बंदिश) गाने का अभ्यास। (5) पाठ्यक्रम में निर्धारित तालों के लेहरे बजाने की क्षमता।

शास्त्र

(1) तबला तथा पखावज वाद्य के अंगों का सचित्र वर्णन तथा उनकी उपयोगिता। (2) निम्नलिखित गायन प्रकरों की संक्षिप्त जानकारी - ध्रुपद, धमार, गजल, टप्पा (3) तबले की उत्पत्ति का संक्षिप्त इतिहास - प्राचीन काल से आधुनिक काल तक। (4) तबले के घराने तथा उनके बाज की जानकारी -(अ) आजराडा (ब) बनारस (5) गायन, वादन तथा नृत्य की संगती की सामान्य जानकारी (6) आड को पारिभाषित करते हुये त्रिताल, झपताल, रूपक, दादरा तथा कहरवा तालों को आड में लिपिबद्ध करने की क्षमता। (7) पं. पलुसकर ताललिपि पद्धति का संपूर्ण परिचय तथा त्रिताल, एकताल, झपताल, रूपक में होने वाली विभिन्न रचनाओं को इस लिपि में लिपिबद्ध करना। (8) निम्नलिखित पारिभाषिक शब्दों की जानकारी- दुपल्ली, त्रिपल्ली, चौपल्ली, कमाली तथा फरमाईशी चक्रदार (9) जीवनी और सांगीतिक योगदान-उस्ताद नत्थू खाँ, पं राम सहाय, उ. हबीबउद्दीन खाँ, आबीद हुसेन खाँ, पं. निखिल बॅनर्जी, पं. हरिप्रसाद चौरसिया, गोपीकृष्ण, पं. बाळकृष्णबुवा इचलकरंजीकर, पं. विष्णु दिगम्बर पलुसकर, स्वामी हरिदास, तानसेन।

विशारद प्रथम-तबला

पूर्णांक :500, न्यूनतम : 200, क्रियात्मक : 300, (मौखिक 200 + मंच प्रदर्शन 100),न्यूनतम : 120, शास्त्र (लिखित) 200 (100 +100), न्यूनतम : 80 (40 +40)

सूचना :- इस वर्ष की सभी रचनाएँ पं. पलुसकर और पं. भातखण्डे दोनों पद्धतियों में लिपिबद्ध करने का अभ्यास अपेक्षित है।

क्रियात्मक

(1) तबला सुर में मिलाने का अभ्यास तथा हार्मोनियम पर विविध स्वरों के मध्यम एवं पंचम स्वरों को पहचानने की क्षमता। (2) पाठ्यक्रम के सभी तालों के ठेकों की दुगन, तिगुन तथा चौगुन हाथ से ताल देकर पढना तथा बजाना। (3) त्रिताल में निम्नलिखितानुसार वादन - (अ) 'तिट' शब्दयुक्त दो कायदे - एक तिस्त्र तथा एक चतस्त्र जाति, छह पलटें तथा तिहाई। (ब) दो कायदे जिनमें 'तिरकिट' शब्द का प्रयोग हुआ हो, छह पलटें तथा तिहाई। (क) 'धि (दिं) तिरकिट' शब्दसमूह मुक्त एक रेला, चार पलटे एवं तिहाई। (ड) 'धिरधिर' बोलसमूह युक्त एक रेला, चार पलटें तथा तिहाई। (इ) न्यूनतम पाँच बंदिशे (गत टुकडे)। (फ) दो दमदार तथा दो बेदम तिहाईयाँ। (4) निम्नलिखित शब्द एवं शब्दसमूहों के रियाज की पद्धति- धातिरकिटतक, तिरकिट, धाति, धागेतिट, धिरधिर, धिनगिन, गदिगन, धिटधिट, धागेतिट, धेत् तगिन्न (5) दादरा तथा कहरवा ताल में विभिन्न प्रकार की लग्गियों का प्रदर्शन (6) झपताल और रुद्रताल में से प्रत्येक में दो कायदे, झपताल में एक तिस्त्र तथा एक चतस्त्र और रुद्र में एक चतस्त्र कायदा पलटों सहित, एक रेला, दो दमदार तिहाईयाँ और चार टुकडे। (7) गायन-वादन की साथ संगत। (8) अब तक के अभ्यास क्रम में आए हुये तालों में विभिन्न मात्राओं से दमदार तथा बेदम तिहाईयाँ। (9) किसी राग में एक विलम्बित ख्याल तथा एक धृपद (केवल बंदिश) गाने का अभ्यास (दो अलग राग हो सकते है)। (10) पाठ्यक्रम में निर्धारित तालों के लेहरे बजाने की क्षमता। (11) आमंत्रित श्रोतओं के सामने मंच प्रदर्शन।

शास्त्र - प्रथम प्रश्नपत्र

(1) ताल की विस्तृत परिभाषा तथा ताल और ठेका इनका तुलनात्मक अध्ययन। सम, ताली, खाली, विभाग (खंड) का महत्व तथा उपयोगिता। (2) त्रिताल, झपताल, और रूपक में होन वाली विभिन्न रचनाओं को लिपिबद्ध करने का अभ्यास। (3) निम्नलिखित पारिभाषिक शब्दों की सोदाहरण जानकारी - पेशकार, कायदा, रेला, बाँट, गतपरन, गतटुकड़ा, मुखड़ा, मोहरा। (4) समान मात्रा संख्या क विभिन्न तालों का तुलनात्मक अध्ययन - (अ) दीपचंदी, झूमरा, आडाचौताल, धमार (ब) रुपक, तीव्रा, पश्तो (क) त्रिताल, तिलवाडा, अद्धा, पंजाबी (5) लय और लयकारी के परस्पर संबंध की जानकारी तथा सोदाहरण विवेचन। (6) भारतीय संगीत के 'वाद्य वर्गीकरण सिद्धान्त' की विस्तृत जानकारी। (7) त्रिताल, झपताल, रुपक तालों की 'आड' 'कुआड' लिपिबद्ध करना। (8) दिए गए बोलों के आधार पर त्रिताल में विभिन्न मात्राओं में तिहाईयाँ बनाकरताललिपि में लिखने का अभ्यास।

द्वितीय प्रश्नपत्र

(1) पखावज वाद्य की उत्पत्ति एवं विकास का विस्तृत अध्ययन। (2) तबले के फरुखाबाद एवं पंजाब घराने का इतिहास तथा वादन विशेषता। (3) (अ) पेशकार, कायदा, रेला तथा गत का तबला एकलवादन में स्थान एवं महत्व। (ब) रेला, चक्रदार, परन, स्तुतिपरन, रौं बोलबाँट तथा नौहक्का की सोदाहरण परिभाषा। (4) निम्नलिखित तालों में से प्रत्येक में दो दो दमदार एवं दो दो बेदम तिहाईयाँ ताललिपि में लिखना- त्रिताल, झपताल, आडाचौताल, रूपक, रुद्रताल (5) सुगम संगीत में प्रयुक्त होने वाले तालों की संपूर्ण जानकारी तथा उपयोगिता। (6) तबला वादन की आदर्श अभ्यास (रियाज) पद्धति। (7) जीवनी और सांगीतिक योगदान-उ. अहमदजान थिरकवा, उ. अमीर हुसेन खाँ, उ. करामत उल्ला खाँ, उ. कादरबक्ष, उ. अल्लारखाँ, उस्ताद अली अकबर खाँ, पं. शिवकुमार शर्मा, सितारदेवी, पं. वि.ना. भातखण्डे, गोपाल नायक, अमीर खुसरो, अहोबल। (8) अ.भा. गांधर्व महाविद्यालय मंडल, मुंबई की विस्तृत जानकारी - स्थापना वर्ष, संस्थापक, स्वातंत्र्यपूर्व तथा स्वातंत्र्योत्तर कार्य, कार्य की पं. पलुसकर प्रणित दृष्टि, कार्य का विस्तार, पाठ्यक्रम की विशेषताएँ, मंडल के अन्य उपक्रम आदि मुद्दों के आधार पर।

विशारद द्वितीय-तबला

पूर्णांक :500, न्यूनतम : 200, क्रियात्मक : 300, (मौखिक 200 + मंच प्रदर्शन 100),न्यूनतम : 120, शास्त्र (लिखित) 200 (100 +100), न्यूनतम : 80 (40 +40)

सूचना :- इस वर्ष में सभी रचनाएँ पं. भातखण्डे पद्धति में लिपिबद्ध करनी है।

क्रियात्मक

(1) त्रिताल में निम्नानुसार वादन - (अ) फरुखाबाद घराने का पेशकार विस्तारपूर्वक बाजना। (ब) 'त्रक' शब्दयुक्त त्रिस्त्र एवं चतस्त्र जाति का एक-एक कायदा छह पलटें तथा तिहाई सहित बजाना। (क) 'धातग घेतग' इस शब्द समूह युक्त तिस्त्र जाति का एक कायदा छह पलटे तथा तिहाई सहित बजाना। (ड) 'घेघेतिट' अथवा 'घेगेनागे' शब्दयुक्त कायदा छह पलटें तथा तिहाई सहित बजाना। (2) रेला - (अ) 'धिरधिर' शब्दयुक्त रेले का छह पलटें एवं तिहाई सहित अपेक्षित तैयारी में वादन। (ब) 'धिनतक्/दिनतक्' शब्दसमूह युक्त छह पलटे, तिहाई सहित वादन। (3) गत - दो शुद्ध गतें, दो चक्रदार तथा दो त्रिपल्ली का पढन्त के साथ वादन। (4) दो बेदम तथा दो 1½ (डेढ) मात्रा के दमयुक्त तिहाईयों का वादन। (5) निम्नलिखित तालों की डेढगुन, दुगुन, तिगुन व चौगुन हाथ से ताल देकर पढना तथा बजाना-एकताल, झूमरा सूलताल, धमार, आडाचौताल (6) निम्नलिखित तालों में से किसी एक ताल में परीक्षक के निर्देशानुसार 10 मिनट्स का एकल वादन-मत्तताल, आडाचौताल, सवारी (15 मात्रा) (7) तबला सुर में मिलाना, बाद में आधा सुर चढाकर या उतारकर मिलाना। (8) किसी राग में एक तराना, एक धमार (केवल बंदिश) गाने का अभ्यास (दो अलग राग हो सकते है)। (9) पाठ्यक्रम में निर्धारित तालों के लेहरे बजाने की क्षमता। (10) आमंत्रित श्रोताओं के सामने मंच प्रदर्शन।

शास्त्र - प्रथम प्रश्नपत्र - विभाग - 1

(1) निम्नलिखित तालों की आड, कुआड और बिआड लयकारी लिपिबद्ध करने का अभ्यास - त्रिताल, झपताल, एकताल, दीपचंदी, रुपक, रुद्र। (2) त्रिताल में आजराडा घराने का कायदा, पलटें एवं तिहाई सहित लिपिबद्ध करने का अभ्यास। (3) दिल्ली घराने का रेला, (पलटें एवम् तिहाई सहित) लिपिबद्ध करने का अभ्यास। (4) दिल्ली एवं फरुखाबाद घरानों की गतों को लिपिबद्ध करने का अभ्यास। (5) चक्रदार और उसके प्रकार लिपिबद्ध करना। (6) विभिन्न दमयुक्त तिहाईयों को लिपिबद्ध करना। (7) दिए गए बोल समूहों के आधार पर नयी रचना बनाकर लिपिबद्ध करना।

विभाग- 2

(1) पं. भातखण्डे लिपिपद्धति का गुणदोषात्मक विस्तृत अध्ययन। (2) निम्नलिखित पारिभाषिक शब्दों का उदाहरण सहित विस्तृत विवेचन - उठान, त्रिपल्ली एवं चौपल्ली गत, फरमाईशी गत, फरमाईशी चक्रदार, कमाली चक्रदार, रेल, रौं लग्गी, लडी तथा किस्म। (3) तबला तथा पखावज की उत्पत्ति के संबंध में प्रचलित विभिन्न मतों की समीक्षा। (4) ठेका, पेशकार, कायदा, रेला के रचना सिद्धान्त तथा विस्तार के नियम। (5) तबला वादन के विभिन्न घरानों की वादन विशेषताओं का तुलनात्मक अध्ययन। (6) एकल तबला वादन से संबंधित निम्न विषयों का अध्ययन - (अ) वादन में रचना प्रकारों की प्रस्तुति का क्रम एवं महत्व। (ब) प्रभावकारक प्रस्तुतिकरण के गुणतत्व। (क) पढन्त की आवश्यकता। (ड) लेहरे की उपयोगिता एवं महत्व।

द्वितीय प्रश्नपत्र-विभाग - 1

(1) ताल के दश प्राणों का संक्षिप्त अध्ययन तथा क्रिया, अंश, ग्रह, जाति और यति का विस्तृत अध्ययन। (2) उत्तर भारतीय ताल पद्धति का विस्तृत अध्ययन। (3) शास्त्रीय, उपशास्त्रीय और सुगम संगीत के साथ तबला संगति के विचारों का अध्ययन। (4) निम्नलिखित गान प्रकारों का विवेचनात्मक अध्ययन (ताल, ठेके, संगति में विविध रचनाओं का समावेश आदि मुद्दों के आधार पर)- ध्रुपद, धमार, ख्याल, ठुमरी-दादरा, टप्पा, भजन, गजल, सुगम गीत। (5) तबलावादक के अपने वादन प्रति गुणदोष एवं अपने वादनपर उन गुणदोषों का प्रभाव। (6) जीवनी और सांगीतिक योगदान - उ. गामेखाँ, उ. शम्मुखाँ, उ. वाजिद हुसेन खाँ, उ. हाजी विलायत अलि खाँ, पं. सामताप्रसाद, पं. कुदऊसिंह, पं.नाना पानसे, पं विनायकराव पटवर्धन, उ. फैय्याज खाँ, (बडोदा), पं. रामकृष्णबुवा वझे, पं. पन्नालाल घोष, पं. रामनारायण, पं. भास्करबुवा बखले, ठाकुर जयदेव सिंह, संत पुरंदरदास, कवि जयदेव, नाट्यशास्त्रकार भरतमुनि।

विभाग- 2

(1) भारतीय संगीत में प्रचलित अवनद्ध वाद्यों में तबले का स्थान। (2) पाश्चात्य अवनद्ध वाद्यों की संक्षिप्त जानकारी- केट्ल ड्रम, टेनर, स्नेटर, बास। (3) भारतीय शास्त्रीय संगीत, सुगम संगीत तथा लोकसंगीत में प्रयुक्त होने वाले निम्नलिखित अवनद्ध और घन वाद्यों का विवरण - पखावज, मृदंगम, ढोल, ढोलक, नाल (ढोलकी), खोल, संबळ, नक्कारा (नगारा), गुदुम, झाँज-मंजिरा, चिपल्ली (चिपळी), चिमटा, मोरचंग, घंटा। (4) तबला तथा पखावजवादन में प्रयुक्त होने वाले वर्णों के निकास का तुलनात्मक विवेचन। (5) निम्नलिखित नृत्य शैलियों की जानकारी- कत्थक, भरत-नाट्यम्, ओडिसी (6) निबंध लिखने की क्षमता (न्यूनतम 400 शब्दों में (अ) लय का दैनंदिन जीवन में महत्व। (ब) लयताल शिक्षा का सामाजिक महत्व। (क) संगीत की वर्तमान समस्याएँ (ड) साहित्य और संगीत (इ) जीवन में संगीत का स्थान। (7) पं. पलुसकर प्रणित 'गांधर्व महाविद्यालय' शिक्षा प्रणाली का ऐतिहासिक और सामाजिक योगदान।

विशारद तृतीय (पूर्ण)-तबला

पूर्णांक :500, न्यूनतम : 200, क्रियात्मक : 300, (मौखिक 200 + मंच प्रदर्शन 100),न्यूनतम : 120, शास्त्र (लिखित) 200 (100 +100), न्यूनतम : 80 (40 +40)

सूचना :- इस वर्ष में सभी रचनाएँ पं. पलुसकर पद्धति में लिपिबद्ध करनी है।

क्रियात्मक

(1) त्रिताल में निम्नानुसार एकल वादन का प्रगत अध्ययन (अ) दिल्ली घराने का पेशकार विस्तापूर्वक बजाना। (ब) दिल्ली, आजराडा तथा फरुखाबाद घराने के विभिन्न कायदों को विस्तारपूर्वक तैयारी के साथ बजाना। (क) तिरकिट, धिधिर तथा धिनधिन शब्दमुक्त रेलों का तैयारीयुक्त वादन। (ड) फरुखाबाद, लखनऊ तथा दिल्ली घराने की गतों की विशेषताओं को पढन्त तथा स्पष्टीकरण सहित प्रस्तुति करना। (इ) न्यूनतम चार टुकडे, दो फरमाईशी चक्रदार एवं कमाली चक्रदार का पढन्त सहित वादन। (फ) मिश्र जाति का एक कायदा और दो टुकड़े बजाने का अभ्यास। (ग) पौन मात्रा के दम युक्त तिहाईयों का वादन। (2) एकताल में निम्नानुसार वादन करने की क्षमता - (अ) पेशकार, छह प्रकार की तिहाई सहित।' दो कायदे (एक चतस्त्र, एक तिस्त्र जाति) पाँच पाँच पलटें एवं तिहाई सहित। (3) झपताल, रुपक, मत्त, रुद्र और सवारी में से किन्हीं दो तालों में 15 मिनट तक एकल वादन करने की क्षमता (परीक्षक के निर्देशानुसार) (4) वसंत (9), मणि (11), जय (13), गजझंपा (15) तथा लक्ष्मी (18) के ठेकों को हाथ से ताल देकर बोलने तथा बजाने की क्षमता। (5) त्रिताल, झपताल, एकताल, रुपक, सवारी को आड, दुगुन, तिगुन, चौगुन में पढन्त करने और बजाने की क्षमता। (6)झूमरा, तिलवाडा, एकताल, त्रिताल तथा आडाचौताल को विलम्बित (गायन/वादन की) लय में बजाने का अभ्यास। (7) सुगम संगीत के विभिन्न प्रकारों के साथ तबला संगीत करने का विशेष अभ्यास। (8) किसी एक राग में ठुमरी/दादरा और सुगम गीत (केवल बंदीश) गाने का अभ्यास। (9) पाठ्यक्रम में निर्धारित तालों के लहरें बजाने की क्षमता। (10) आमंत्रित श्रोताओं के सामने मंच प्रदर्शन।

शास्त्र - प्रथम प्रश्नपत्र - विभाग - 1

(1) निम्नलिखित लयकारियों का ज्ञान तथा विभिन्न ठेकों को विभिन्न लयकारियों में लिखने का अभ्यास-पौनगुन 3/4 (4 में 3), सवागुन 5/4 (4 में 5), डेढगुन 3/2 (2 में 3), पौने दो गुन 7/4 (4 में 7), ढाईगुन 5/2 (2 में 5) तथा 4/3 (3 में 4) और 4/5 (5 में 4)। (2) विभिन्न जाति की रचनाओं सहित पाठ्यक्रम की सभी रचनाओं को लिपिबद्ध करने का अभ्यास। (3) पं. पलुसकर पद्धति का गुणदोषात्मक विस्तृत अध्ययन। (4) तीनताल में मिश्र जाति के कायदे लिपिबद्ध करना। (5) सवारी, मत्त तथा रुद्र इन तालों के कायदे लिपिबद्ध करना। (6) उठान, बाँट, फरद, गतपरन तथा गतटुकडा इन रचनाओं को लिपिबद्ध करना।

विभाग- 2

(1) उठान, बाँट, फरद, गतपरत तथा गत टुकडा इन रचना प्रकारों का सोदाहरण विस्तृत अध्ययन। (2) निम्नलिखित का तुलनात्मक सोदाहरण विवेचन - (अ) ताल - ठेका (ब) रेला-रौं (क) लग्गी-लडी (ड) गत-टुकडा (इ) कायदा-पेशकारा (3) बाज और घरानों की संकल्पना का विस्तृत अध्ययन तथा तबला वादन की विभिन्न घरानों की वादन शैली का सोदाहरण तुलनात्म्क विवेचन। (4) तबलावादन में प्रयुक्त होने वाली विभिन्न रचनाओं का सौंदर्यात्मक विवेचन-पेशकार, कायदा, रेला, तिहाई, गत। (5) कायदे का अर्थ समझना और विशद करना तथा कायदे बनाने के नियमों की जानकारी। (6) फरमाईशी/कमाली चक्रदार बनाने के गणितीय सिद्धान्त।

द्वितीय प्रश्नपत्र - विभाग - 1

(1) छंद की परिभाषा का स्पष्टीकरण तथा छंद और ताल के परस्पर संबंध का सामान्य ज्ञान। (2) ताल के दश प्राणों का विस्तृत अध्ययन। (3) ताल रचना के सिद्धान्तों का विस्तृत अध्ययन। (4) कर्नाटक ताल पद्धति का विस्तृत वर्णन तथा उत्तर भारतीय तालपद्धति से तुलना। (5) स्टाफ नोटेशन पद्धति के चिन्हों का सामान्य परिचय। (6) जीवनी और सांगीतिक योगदान - स्वामी पागलदास, पं. अंबादासपंत आंगले, पं. किशन महाराज, उ. लतीफ अहमद खाँ, संगीतरत्नाकरकर्ता शारंगदेव, उ. अब्दुल करीम खाँ, उ. अल्लादिया खाँ, सुश्री केसरबाई केरकर, पं. राजाभैय्या पूंछवाले, पं. लालमणी मिश्र, पं.डी.व्ही. पलुसकर, पं.डी.के. दातार, अच्छन महाराज, शंभू महाराज, मुत्थुस्वामी दिक्षीतर, गुरु केलुचरण महापात्र।

विभाग- 2

(1) पखावजवादन की निम्नलिखित परम्पराओं की वादन-विशेषताओं सहित जानकारी- (अ) कुदऊसिंह घराना (ब) नाना पानसेन घराना (क) नाथ द्वारा घराना (2) भारतीय संगीत का संक्षिप्त इतिहास। (3) गायन के घरानों की जानकारी- ग्वाल्हेर, आग्रा, जयपुर, रामपूर, पतियाला, किराना। (4) लखनऊ, बनारस, पंजाबी इन ठुमरी शैलियों की जानकारी। (5) तबला वादक के लिए आहार-विहार तथा व्यायाम का महत्व। (6) पं. विष्णु दिगम्बर पलुसकर जी का जीवन और कार्य के बारे में विस्तृत जानकारी (प्रो.बी.आर.देवधर लिखित पं. पलुसकर चरित्र क आधार पर) तथा इस चरित्र का भाषा, समीक्षा, सामाजिक अध्ययन। (7) समीक्षा की संकल्पना का प्राथमिक अध्यन और संगीत समीक्षा की संक्षिप्त जानकारी। (8) निबंध लेखन न्यूनतम 400 शब्दों में)- (अ) प्रचलित शिक्षा पद्धति में संगीत का महत्व (ब) समाज के प्रति कलाकार की जिम्मेदारी (क) ऋतुचक्र और संगीत (ड) वैदिक संगीत (इ) गुरु शिष्य परपंरा एवंम् आधुनिक शिक्षा पद्धति। (9) संगीत में सर्वसमावेशकताका परिचय, निम्नलिखित मुद्दों के आधार पर - भाषा, गणित, इतिहास, भूगोल और भिन्न भिन्न शास्त्र (फिजिक्स तथा मानसशास्त्र, समाजशास्त्र, शिक्षणशास्त्र, पर्यावरण, सांस्कृतिका आदि।)

अलंकार प्रथम वर्ष-तबला

पूर्णांक :600, न्यूनतम : 270, क्रियात्मक : 400, (मौखिक 200 + मंच प्रदर्शन 200),न्यूनतम : 180, शास्त्र (लिखित) 200 (100 +100), न्यूनतम : 90 (45 +45)

सूचना :- इस वर्ष की सभी रचनाएँ पं. भातखण्डे पद्धति में लिपिबद्ध करनी है।

क्रियात्मक

(1) **त्रिताल में निम्नानुसार एकल वादन का प्रगत अध्ययन**- (अ) घरानेदार पेशकार, अथवा उठान का प्रस्तुतिकरण। (ब) मिश्र जाति का एक कायदा न्यूनतम छह पलटों सहित तथा मिश्र जाति की गतें बजाना। (क) तिस्त्र जाति का एक रेला, न्यूनतम छह पलटोंसहित। (ड) धिरधिरधिर, दिनगिन अथवा तकतिरकिटतक शब्दयुक्त रेलों का तैयारी के साथ प्रस्तुतिकरण। (ई) चलन बजाकर उसकी रौं प्रस्तुत करना। (फ) न्यूनतमक चार विभिन्न प्रकार की गतों का वादन। (ग) विभिन्न मात्रा से प्रारंभ होने वाली तिहाईयों का अभ्यास। (2) अन्यताल-निम्नलिखित तालों में से किन्हीं दो तालों में परीक्षक के निर्देशानुसार न्यूनतम 15 मिनट का स्वंतत्र वादन प्रस्तुत करने की क्षमता-आडाचौताल, पंचम सवारी रुद्र (11 मात्रा), एकताल। (3) त्रिताल, एकताल तथा झूमरा तालों के ठेकें विलम्बित लय में ठेकाभरी के साथ बजाने की क्षमता तथा मुखडें बजाकर सम पर आना (6 से 7 इंच तक के बडे मुँहवाले तबले पर बजाने का अभ्यास आवश्यक)। (4) दादरा, कहरवा, चाचर ताल में कलापूर्ण लग्गियों का वादन। (5) (अ) स्वर पहचानाना (ब) तबला स्वर में मिलाना। तबले की बनावट का तबला सुर में होने/ना होने वाले परिणाम (चाट/थाप एक सुरमें होना/ना होना) की जानकारी (6) वादन में स्वरमयता के साथ विभिन्न लयकारियों का प्रदर्शन। (7) किसी एक राग में विलम्बित, द्रुत ख्याल और ध्रुपद (केवल बंदिश) गाने का अभ्यास। (8) पाठ्यक्रम में निर्धारित तालों के लेहरे बजाने की क्षमता। (9) आमंत्रित श्रोताओं के सामने मंच प्रदर्शन।

शास्त्र - प्रथम प्रश्नपत्र - विभाग - 1

(1) फरुखाबाद घराने का पेशकार लिपिबद्ध करना। (2) विभिन्न मात्राओं से प्रारंभ होने वाली तिहाईयाँ लिपिबद्ध करना। (3) विभिन्न प्रकार क चलन तथा उन पर आधारित रौं लिपिबद्ध करना। (4) आडाचौतला, पंचम सवारी, रुद्र, एकताल में कायदे तथा रेले लिपिबद्ध करना। (5) मिश्र जाति की गते लिपिबद्ध करना (6) दिए गए बोलों के आधार पर विभिन्न तालों में रचना बनाकर लिपिबद्ध करना।

विभाग- 2

(1) घरानेदार बंदिशों की सोदाहरण जानकारी तथा उनकी विशेषताओं का अध्ययन। (2) गत एवं गतों के प्रकार की सोदाहरण जानकारी तथा विवेचन - त्रिपल्ली, चौपल्ली, दुधारी, मंझेदार, फरद इत्यादि। (3) पेशकार का अर्थ एवं उसे स्वतंत्र तबला वादन में सर्वप्रथम बजाने का महत्व इनके बारें में स्पष्टीकरणात्मक विवेचन। (4) रेला और रौं की परिभाषा एवं सोदाहरण विस्तृत जानकारी। (5) लय, बोल ठेका एवं किस्म इनका आपसी संबंध और साथसंगत एवं स्वतंत्र तबला वादन में उनका स्थान तथा उपयोगिता।

द्वितीय प्रश्नपत्र - विभाग - 1

(1) ध्वनि का वैज्ञानिक अध्ययन। नाद का ऊँचा नीचापन, बडा-छोटापन तथा गुणधर्म का विवेचन। (2) भरतनाटयशास्त्र के तालाध्याय का संक्षिप्त अध्ययन तथा 'मार्गी' तालपद्धति का विस्तृत अध्ययन - कला, मात्रा, एककल, द्विकल, चतुष्कल की जानकारी। (3) ताल के दश प्राणों का विस्तृत अध्ययन तथा वर्तमान तालपद्धति में उनकी उपयोगिता और महत्व के बारे में तर्कसंगत विचार। (4) तिहाई और चक्रदार का अंतर्निहित संबंध तथा तुलनात्मक ज्ञान। तिहाई और चक्रदार का अंतर्निहित संबंध तथा तुलनात्मक ज्ञान। तिहाई तथा चक्रदार क गणितीय नियमों का विवेचन। (5) तबले की बंदिशों की भाषा का उद्गम और विकास की जानकारी तथा इस भाषा से निर्मित साहित्य (बंदिशों) का ज्ञान। (6) तबला वादन में प्रयुक्त होने वाले विभिन्न वर्ण तथा उनके संयोजन से बनने वाले शब्द/शब्दसम्हो के निकास की जानकारी। पढन्त और निकास मे अंतर की जानकारी तथा कारणमीमांसा। (7) तबले के रियाज की विभिनन पद्धतियों पर तर्कसंगत विचार। (8) जीवनी और सांगीतिक योगदान- उ. जहाँगीर खाँ, उ. शेख दाऊद खाँ, उ. मेहबूब खाँ मिरजकर, पं. चतुरलाल, पं. गोविंदराव ब्रहाणपूरकर, पं. अयोध्याप्रसाद, पं. पुरुषोत्तमदास पखवाजी, पं. कंठे महाराज, उ. अमीर खाँ, श्रीमती मागुबाई कुर्डीकर, सुश्री एन. राजम, पं. ओंकारनाथ ठाकुर, पं. रविशंकर, उ. बिस्मील्लाह खाँ, उदयशंकर, बिरजू महाराज, पंडीता दमयंती जोशी, रामामात्य।

विभाग- 2

(1) तबला वादन-पद्धति के विकास के लिए विद्वान कलाकारों द्वारा किए गए कार्यकी सोदाहरण जानकारी। (2) भारतीय तथा पश्चात्य अवनद्ध वाद्यों की बनावट के आधार पर तुलना। (3) भारतीय वाद्य वर्गीकरण का प्रगत अध्ययन और निम्नलिखित तंत्री तथा सुषिर वाद्यों की जानकारी-तानपुरा, सितार, सरोद, संतूर, सारंगी, बेला, सरस्वती वीणा, हार्मोनियम, शहनाई, नागस्वरम्। (4) तबला एकलवादन तथा संगति के सौंदर्यतत्वों का विशलेषणात्मक अध्ययन। (5) ध्रुपद, धमार, ख्याल, टप्पा, ठुमरी, आदि तथा मसीतखानी/रजाखानी गतें इनकी ऐतिहासिक जानकारी तथा इनके साथ तबला संगति का विचेनात्मक अध्ययन। (6) भारतीय काव्यशास्त्र की संक्षिप्त जानकारी- काव्यशास्त्रकार और उनके सिद्धान्त के आधार पर (भरत, अभिनवगुप्त रुद्रट, मम्मट, आनंदवर्धन, विश्वनाथ, जगन्नाथ, राजशेखर, दंडी, वामन, हेमचंद्र आदि)। (7) संगीत समीक्षा लेखन के मूलतत्वों का विस्तृत अध्ययन। संगीत समीक्षा का ऐतिहासिक तथा आधुनिक काल और प्रसार-प्रचार माध्यम मं संगीत समीक्षा। (8) निबंध-न्यूनतम 500 शब्दों में) (अ) तबलावादन के निर्मिती में सांगीतिक संस्थाओं कायोगदान। (ब) संगीत एक जीवनकार्य, (क) धर्म और संगीत (ड) भक्तिकाव्य और संगीत (इ) संगीत को संत कवियों की देन।

अलंकार पूर्ण-तबला

पूर्णांक :600, न्यूनतम : 270, क्रियात्मक : 400, (मौखिक 200 + मंच प्रदर्शन 200),न्यूनतम : 180, शास्त्र (लिखित) 200 (100 +100), न्यूनतम : 90 (45 +45)

सूचना :- इस वर्ष की सभी रचनाएँ पं. पलुसकर पद्धति में लिपिबद्ध करनी है।

क्रियात्मक

सूचना :-संगीत अलंकार के अंतिम वर्ष की परीक्षा में स्वतंत्र वादन मुख्य विषय के रूप में तथा साथ संगत यह सहायक विषय होगा। विद्यार्थी को गायन, तंतुवाद्य तथा कथक नृत्य से किसी एक विद्या की संगति को चुनना होगा। जिसका उललेख विद्यार्थी अपने परीक्षा आवेदन पत्र में करेंगे।

विभाग- 1 (मुख्य विषय) स्वतंत्र वादन

(1) त्रिताल में निम्नानुसार वादन - (अ) दिल्ली या फरुखाबाद घराने के पेशकार का विस्तृत वादन। (ब) एक खंड तथा एक मिश्र जाति का कायदा, छह पलटों के साथ। (क) पूर्ण संकिल्पत रचनाओं से उठान, बाँट, फरद टुकडे, फरमाईशी चक्रदार, कमाली चक्रदार, मंझेदार गत, दर्जेदार गत क एक-एक उदाहरण को हाथ से ताल देकर बोलना तथा बजाना। (ड) तबले के भी घरानों की विशेषताएँ प्रकट करने वाली गतों का वादन। (2) अन्य ताल में निम्नानुसार वादन- (अ) मत्त (9 मात्रा), रुद्र (11 मात्रा), जयताल (13 मात्रा) इन तालों में पेशकार, तिस्त्र तथा चतस्त्र जाती के दो कायदे, दो रेले (तिहाई के साथ) तथा कम से कम चार गत टुकडे एवं एक फरमाईशी और एक कमाली चक्रदार का वादन। (3) तबले के अतिरिक्त किसी अन्य अवनद्ध वाद्य की वादन पद्धति की जानकारी तथा वादन करने की क्षमता प्रदर्शित करना। (4) पाठ्यक्रम में निर्धारित तालों के लेहरे बजाने की क्षमता। (5) किसी एक राग में तराना, धमार, ठुमरी/दादरा (केवल बंदिश) का गायन करने का अभ्यास। (6) आमंत्रित श्रोताओं के सामने मंच प्रदर्शन।

विभाग- 2 (सहायक विषय) साथ संगत

सूचना : - इस विषय के सभी विद्यार्थियों में तबला तथा तानपुरा स्वर में मिलाने की क्षमता होना अनिवार्य है।

(अ) गायन की साथ संगत - (अ) (1) झूमरा, आडाचताल, तिलवाडा इन तालों में विलम्बित लय में वजनदार तथा लयकार ठेका बजाना, तथा इन ठेकों में ठेका भरीयुक्त वादन और मुखडे, टुकडे बजाकर सम पर आने की क्षमता। (अ) (2) मध्यलय में संगत करते समय विभिन्न आकर्षक मुखड़ों का प्रयोग करने की क्षमता। (अ) (3) उपशास्त्रीय गायन की संगति में गायन के अनुरुप दीपचंदी, अद्धा, चाचर, धुमाली, टप्पे का ठेका, कहरवा, दादरा तालों के ठेक बजाने की क्षमता तथा कलात्मक एवं सौंदर्यपूर्ण लग्गियों का प्रयोग। (अ) (4) उपज अंग से विभिन्न प्रकार की संगति का ज्ञान। (ब) तंत्री वाद्य (स्वरवाद्य) की संगत-(ब) (1) त्रिताल, रूपक, झपताल तथा एकताल को विलम्बित /द्रुत लय में वाद्य वादन के अनुरुप बजाने की क्षमता। (ब) (2) विलम्बित त्रिताल (रूपक, झपताल, एकताल) में मसीतखानी या अन्य प्रकार की गत के साथ अलग अलग मात्रा से उठने वाली विविध दमयुक्त तिहाईयों को बजाने की क्षमता। (ब) (3) उपज अंग से संगति करने का ज्ञान। (ब) (4) 'ना धिं धिं ना' को अतिद्रुत लय मे विभिन्न निकास के साथ बजाने का अभ्यास। (ब) (5) धून/लोकधून/प्रादेशिक धून इत्यादि के साथ अनुरूप संगति करना तथा विभिन्न ठेकों को बजाने की क्षमता। (क) कत्थक नृत्य की संगत (क) (1) थाट के अनरूप संगती करना। (क) (2) आमद, तीड़ा, तुकड़ा, पस के अनुरूप संगती करना। (3) कत्थक नृत्य में प्रदर्शित की जाने वाली न्यूनतम पाँच बंदिशों की पढत करना तथा उनका तबले पर वादन करना। (क) (4) तीव्रा और सूलताल में न्यूनतम चार बंदिशों का थपिया बाज (पखावज अंग से) वादन करने की क्षमता। (क) (5) कत्थक नृत्य से तत्कार (तथा गिनति) के अनुरुप साथ संगत एवं दुत लय में बोल या बोलसमूह अक्षरों के क्रम में परिवर्तन करते हुए न्यूनतम चार पल्टे बजाने की क्षमता। (क) (6) कत्थक नृत्य के अनुरुप उपज अंग से संगती करना तथा विभिन्न प्रकार की तिहाईयों का वादन करने की क्षमता। (क) (7) कत्थक नृत्य के गीत, रस-भाव तथा अभिनव प्रदर्शन के साथ उचित ढंग से प्रभावकारी वादन।

शास्त्र - प्रथम प्रश्नपत्र - विभाग -1

(1) लय और लयकारी का विस्तृत अध्ययन तथा लिखने की क्षमता। निम्नलिखित तालों को पौनगुन, सवागुन, डेढगुन तथा पौनेदोगुन में लिपिबद्ध करने का अभ्यास-त्रिताल, आडाचौताल, धमार, सवारी (15) जय, रुद्र ताल (2) तीनताल में खंड जाति का कायदा, पलटे तथा तिहाई सहित लिपिबद्ध करना। (3) मत्त, रुद्र तथा जय ताल में फरमाईशी तथा कमाली चक्रदार लिपिबद्ध करना। (4) तीनताल के एक आवर्तन में अन्य किसी ताल का एक आवर्तन रुपांतरित करके लिपिबद्ध करना। इसी तरह अन्य तालों में तालरुपांतर का अभ्यास। (5) तीनताल में घरानेदार गत तथा गततोडे लिपिबद्ध करना। (6) आडाचौताल, झपताल, मत्ताताल, जयताल, रुद्र इनमें विभिन्न मात्राओं से आरम्भ होकर सम पर आने वाली तिहाईयाँ लिपिबद्ध करना। (7) दिए गए बोलों के आधार पर विभिन्न तालों में नीय रचनाएँ बनाकर लिपिबद्ध करना।

विभाग- 2

(1) तबला वादन की रचनाओं में शब्दालंकार, छंदवृत्त, गणवृत्त और काव्यसौंदर्य की जानकारी। (2) 'उपज' की परिभाषा, निर्मित की प्रक्रिया/पद्धति तथा उसकी स्वतंत्र तबला वादन में और संगति में उपयोगिता और महत्व (3) एकल तबलावादन की परंपरागत विधि तथा उसमें आये हुये बदलाव की विस्तृत जानकारी (4) गायन, वादन तथा नृत्य की तबला संगति में पिछले पचास वर्षों में आये हुये बदलाव। (5) संगीत में क्लिष्ट, अप्रचलित एवं विषम मात्रिक तालों के अध्ययन की उपयोगिता तथा महत्व। (6) समान मात्रा के विभिन्न तालों का औचित्य तथा उपयोगिता पर आपके विचार। (7) तबला वादन में सुरीलापन, वजनदारी, दाब-गाज, तैयारी तथा नजाकत का महत्व।

द्वितीय प्रश्नपत्र - विभाग - 1

(1) 'संगीतरत्नाकर' के तालाध्याय का विस्तृत अध्ययन तथा मार्गी एवं देशी तालपद्धति की तुलना। (2) लय, लयकारी, नाद, बोल एवं वादनविधि स रस निष्पत्ति। (3) भारतीय तालां का वैज्ञानिक रूप तथा सौंदर्यशास्त्र। (4) तबलावादन में प्रयुक्त विभिन्न प्रकार की बंदिशों तथा रचनाओं का निकास, क्या वर्तमान तालिपि पद्धतियों द्वारा समझना संभव है ? वर्तमान तालिपि में सुधार या परिवर्तन आवश्यक है ? इन विषयों पर आपके विचार। (5) लय, ताल और मनोभाव इनका अंत: संबंध तथा विभिन्न रचना प्रकारों में इसकी अनुभूति। (6) जीवनी और सांगीतिक योगदान- सिंहभूपाल, मतंगमुनी, राणा, कुंभा, कल्लोनाथ, अहोबल, व्यंकटमखी, सवाई प्रतापसिंह, राजा सरफोजी भोसले (तंजावर), बडे रामदासजी, पं. भीमसेन जोशी, पं. गोविंदराव टेंबे, पं. जगन्नाथबुवा पुरोहित, पं. शंकरराव व्यास, उ. अल्लाद्दीन खाँ, पं. गजाननबुवा जोशी, प्रो.बी.आर. देवधर, बिंदादिन महाराज, रोश कुमारी, पंडिता रोहिणी भाटे, एम्.एस. सुब्बलक्ष्मी।

विभाग- 2

(1) तबला वादन की पारंपारिक (गुरुशिष्य) और आधुनिक (संस्थागत) शिक्षाप्रणाली का तुलनात्मक अध्ययन। (2) लोकसंगीत में प्रयुक्त वाद्यों की जानकारी- कयामचा, डफ, ताशा, तुरही (तुतारी), दमामा, करताल, तुणतुणें, खंजिरी, हलगी, घुमट, घुंगरु। (3) संगीत और प्रसार-प्रचार के आधुनिक दृक्-श्राव्य माध्यम (1875 से आज तक)। (4) अवनद्ध वाद्यों का विकास और सौंदर्यात्मक विविध नादनिर्मित में उनको बनावट का योगदान। (5) तबलावादक के गुणदोषों का विस्तृत अध्ययन (मानसिक, शारीरिक, शैक्षणिक, वर्तनात्मक, आदि)। (6) लय तथा लयकारियों के अध्यापन की विविध पद्धतियाँ तथा उनका औचित्य, उपयोगिता एवं महत्व। (7) शोधनिबंध तथा प्रबंध के लिए संशोधन पद्धति तथा लेखन पद्धति। (8) समीक्षा लेखन की भाषाशैली तथा संगीत समीक्षा के विविध रूप-ग्रंथलेखन, प्रासंगिक लेखन, महफिलका वृत्तांत, कलाकार की मुलाकात, श्रेत्रीय नयी/पुरानी जानकारी, वृत्त पत्र/मासिक में लेख आदि। आधुनिक काल में आकाशवाणी और दूरदर्शन पर होने वाली संगीत समीक्षा। (9) निबंध (न्यूनतम 500 शब्दों में) (अ) संगीत चिकित्सा (ब) संगीत और योग (क) संगीत और स्वास्थ्य (ड) संगीत और अन्य ललित कलाओं का अंत: संबंध (इ) मानसशास्त्र और संगीत।

पखावज

संगीत परिचय -पखावज

जनवरी से दिसम्बर तक / जून से मई तक

(पूरे वर्ष में 40 घंटे)

सूचना :- इस वर्ष के लिए परीक्षा नहीं होगी। खुद शिक्षक द्वारा केवल वार्षिक पाठ्यक्रम पूर्तता के लिए विद्यार्थी का मूल्यमापन होगा।

(1) पखावज की बनावट एवं उसके अंगों का ज्ञान। (2) दस वाक्यों में पखावज संक्षिप्त इतिहास एवं उपयोग। (3) वर्तमान काल के दो बड़े वादकों के नाम। (4) वर्णों की जानकारी - दिन्, तिट, थुं, ना, ता, कत्, गदि, गन, धा। (5) वर्णों की निकास विधि। (6) हस्तसाधन। (7) ता गे गे गे (झाला) का सरल विस्तार (8) उपरोक्त सभी वर्णों की पढन्त का अभ्यास। (9) हो सके उतना अन्य वाद्यों का परिचय (किसे क्या कहते है)। तबला, तानपुरा, हार्मोनियम, सितार, सरोद, संतूर, सारंगी, बाँसुरी, शहनाई, व्हायोलीन आदि।

प्रारंभिक- पखावज

सूचना :- इस वर्ष के लिए परीक्षा नहीं होगी। खुद शिक्षक द्वारा केवल वार्षिक पाठ्यक्रम पूर्तता के लिए विद्यार्थी का मूल्यमापन होगा।

क्रियात्मक

(1) पखावज पर बजने वाले सभी प्रमुख स्वतंत्र वर्णों के वादनविधि का ज्ञान। (2) (अ) निम्नलिखित तालों को ठाह तथा दुगुन में हाथ से ताली-खाली दिखाकर बोलने तथा बजाने की क्षमता-आदिताल, चौताल। (ब) तीव्र ताल को बराबर की लय में बोलने तथा बजाने की क्षमता। (3) चौताल मं धागेतिट तथा धादिंता बोलयुक्त रचना प्रकारों का बराबर की लय में वादन।

शास्त्र

निम्नलिखित पारिभाषिक शब्दों की जानकारी- ताल, मात्रा, सम, ताली, खाली विभाग (खंड), आवर्तन, दुगुन।

प्रवेशिका प्रथम-पखावज

पूर्णांक :75, न्यूनतम : 26, क्रियात्मक : 60, शास्त्र मौखिक : 15

सूचना : प्रवेशिका प्रथम से सभी परीक्षाओं में सभी वादन लेहरे के साथ करना अनिवार्य है। प्रवेशिका प्रथम से सभी पाठ्यक्रम में पूर्व वर्षीय पाठ्यक्रम का पुनरावर्तन होगा। सभी पूर्वपाठ्यक्रम पर परीक्षा में प्रश्न पूछे जा सकते है।

क्रियात्मक

(1) चौताल तथा आदिताल का बराबर तथा दुगुन में बजाने की क्षमता। (2) निम्नलिखित तालों में विस्तार (अ) चौताल तथा आदिताल में दो-दो परन, एक रेला, (4-4 पलटों के साथ) तथा दो-दो सरल तिहाईयाँ। (ब) तीव्रा ताल को बाराबर एवं दुगुन में बजाने का अभ्यास।

शास्त्र

(1) निम्नलिखित परिभाषिक शब्दों की जानकारी -संगीत, नाद, लय, बोल, ठेका, किसम, तुकडा, मुखडा, तिहाई (2) चौताल तथा आदिताल को बराबर तथा दुगुन में हाथ से ताल देकर (ताली-खाली दिखाकर) बोलने की क्षमता। (3) पखावज के विभिन्न अंगों का वर्णन।

प्रवेशिका पूर्ण-पखावज

पूर्णांक :125, न्यूनतम : 44, क्रियात्मक : 75 +, मौखिक शास्त्र 50 = 125, न्यूनतम + 44

सूचना : (1)पाठ्यक्रम में पूर्व वर्षिय पाठ्यक्रमका पुनरावर्तन होगा। (2) सभी पूर्व पाठ्यक्रम पर परीक्षा में प्रश्न पूछे जा सकते है। (3) साथ संगत के प्रश्न की परीक्षा प्रत्यक्ष रूप से किसी गायक या वादक के साथ अनिवार्य है।

क्रियात्मक

(1) निम्नलिखित तालों के ठेके हाथ से ताल देकर दुगुन, लय में बोलने तथा बजाने का अभ्यास-धमार, तीव्रा, सूलताल (2) इस वर्ष के शास्त्र पक्ष में उल्लेखित सभी बोलों की भली भाँति निकास बजाने की क्षमता। (3) निम्नलिखित तालों में विस्तार (अ) चौताल- दो टुकडे, दो साधारण परन, दो चक्रदार परन, एक

पडार, दो रेले। (ब) सूलताल - दो परन, एक रेला। (क) धमार - दो टुकडे, दो परन, दो तिहाईयाँ। (ड) तीव्रा - ठेके के दो प्रकार, दो परन, दो तिहाईयाँ। (4) ध्रुपद के साथ संगत करने की क्षमता। (5) सभी रचना प्रकारों की हाथ से ताल देकर पढन्त करना।

(शास्त्र मौखिक)

(1) विलम्बित, मध्य तथा द्रुत लय का ज्ञान। (2) पखावज के विभिन्न वर्ण और उन्हें अपने वाद्य पर निकालने की विधि (अ) केवल दाहिने हाथ से बजने वाले वर्ण, (ब) केवल बाये हाथ से बजने वाले वर्ण, (क) दोनों हाथ से एक साथ बजने वाले वर्ण। (3) निम्नलिखित बोलों की निकास विधि- तिरकिट, धिडनग, किटतकता, क्डधितू, धिर्किकिट, त्रक, गदिगन, तक्डान्, क्डधा, क्डधान्, क्डधिन्, धिरधिर। (4) पं. पलुसकर तथा पं. भातखण्डे ताललिपि पद्धतियों का सामान्य ज्ञान। सम, ताली, खाली, विभाग (खंड) इन चिन्हों का परिचय। (5) निम्नलिखित पारिभाषिक शब्दों की जानकारी-स्वर, सप्तक, उठान, परन, पडार, रेला, तिगुन, चौगुन।

मध्यमा प्रथम-पखावज

पूर्णांक :200, न्यूनतम : 70, क्रियात्मक : 125 +, न्यूनतम 44, शास्त्र (लिखित) : 75, न्यूनतम 26

क्रियात्मक

(1) (अ) अपने वाद्य को स्वर में मिलाने के नियम। (ब) पखावज के बाएँ पर आटा लगाने की विधि तथा उसका कारन। (2) निम्नलिखित तालों क ठेके बजाने का अभ्यास-झंपा, झपताल, गजझंपा, धुमाली, बसंत। (3) निम्नलिखित तालों की विभिन्न संगीत प्रकारों में उपयोगिता का स्पष्टीकरण - चौताल, धमार, दादरा, एकताल, त्रिताल, (4) (अ) चौताल तथा धमार में उठान बजाना। (ब) धुमाली तथा दादरा में किस्म बजाना और तिहाई लेकर सम पर आना और ठेका पकड़ना। (5) निम्नलिखित तालों में विस्तार (अ) चौताल तथा धमार में एक चतस्त्र, एक तिस्त्र जाति का रेला चार-चार पलटें तथा तिहाई के साथ। (ब) धुमकिट का रेला तीन पलटों के साथ, एक फरमाईशी चक्रदार, टुकडे। (क) विभिन्न मात्राओं से तिहाई लेकर सम पर आने का अभ्यास। (6) निम्नलिखित बोल समूहों को बजाने की क्षमता - (अ) धेत्धिननक धेत्धिननक धिननक, (ब) धुमकिट धुमकिट तकिटतकाकिट, (क) तकिट का मिटकगिदिगन ता धा। (7) निम्नलिखित तालों को हाथ से ताल देकर तिगुन लय में बोलने की क्षमता - चौताल, धमार, सूलताल, तीव्रा,आदिताल। (8) आदिताल में टुकडा तथा फरमाईशी चक्रदार को हाथ से ताल देकर बोलने की क्षमता। (9) किसी एक राग में मध्यलय की बंदिश (केवल बंदिश) गाने का अभ्यास।

शास्त्र

(1) पखावज का संक्षिप्त इतिहास तथा उसका आधुनिक रूप में परिवर्तन की जानकारी। (2) घराना तथा बाज की जानकारी देते हये निम्नलिखित घरानों की सोदाहरण विस्तृत जानकारी- (अ) पं. नाना पानसे (ब) पं. कुदऊसिंह (3) निम्नलिखित गायनशैली तथा गायन प्रकारों की संक्षिप्त जानकारी - (अ) ध्रुपद, (ब) धमार (क) भजन (ड) हवेली संगीत (4) स्वतंत्र पखावज वादन तथा साथ संगति की साधारण जानकारी। (5) पखावज वादक के गुणदोष। (6) निम्नलिखित पारिभाषिक शब्दों की जानकारी - ताल, मात्रा, आवर्तन, ठेका, सम, ताली, खाली, विभाग (खंड), किस्म, बोल। (7) चौताल, सूलताल तथा धमार के परनों तथा रेलों को पं. भारतखण्डे पद्धति में लिपिबद्ध करना। (8) प. भातखण्डे ताललिपि का संपूर्ण परिचय तथा अब तक के सभी ठेकों को इस लिपि में लिपिबद्ध करने का अभ्यास।

मध्यमा पूर्ण-पखावज

पूर्णांक : 200, न्यूनतम : 70, क्रियात्मक : 125 +, न्यूनतम 44, शास्त्र (लिखित) : 75, न्यूनतम 26

क्रियात्मक

(1) निम्नलिखित तालों क ठेके हाथ से ताल देकर दुगुन सहित बोलना तथा बजाना - गजझंपा, मत्त, रुद्र। (2) ध्रुपद, धमार, और सादरा के साथ संगत करने की क्षमता तथा मुखडे लगाकर सम पर आने का अभ्यास। (3) पखावज को उचित ढंग से स्वर में मिलाने का अभ्यास। (4) (अ) चौताल में संपूर्ण अंग से विस्तार के साथ स्वतंत्र एकल वादन (20 मिनट तक) (ब) तीव्रा, सूलताल तथा धमार इन तालों में विस्तार तथा तैयारी के साथ स्वतंत्र वादन (10-10 मिनट तक) (क) चौताल और धमार का ठेका द्रुतलय में बजाने का अभ्यास। (5) किसी राग में एक द्रुत बंदिश (केवल बंदिश) गाने का अभ्यास। (6) पाठ्यक्रम में निर्धारित तालों के लेहरे बजाने की क्षमता।

शास्त्र

(1) पखावज और तबला वाद्य के अंगों का सचित्र वर्णन तथा उनकी उपयोगिता की जानकारी। (2) निम्नलिखित गायन प्रकारों की संक्षिप्त जानकारी-ख्याल, ठुमरी, टप्पा, गजल, समाज गायन। (3) पखावज की उत्पत्ति तथा इतिहास (प्राचीन काल से आधुनिक काल तक)। (4) पखावज के घराने तथा उनके बाज की जानकारी- (अ) नाथ द्वारा (ब) मंगळवेढेकर। (5) गायन, वादन, नृत्य की संगति की सामान्य जानकारी। (6) पं. पलुसकर ताललिपि पद्धति का संपूर्ण परिचय तथा अबतक के सभी ठकों को इस लिपि में लिपिबद्ध करने का अभ्यास। (7) 'आड' को पारिभाषित करते हुए- चौताल, सूलताल, झपताल, तीव्रा इनर तालों की 'आड' पं. पलुसकर पद्धति में लिपिबद्ध करने की क्षमता। (8) निम्नलिखित पारिभाषिक शब्दों की जानकारी - संगीत-नाद, स्वर, सप्तक, लय, उठान, मुखडा, परन, पडार, रेला, टुकडा, मुखडा (9) जीवनी और सांगितिक योगदान - स्वामी पागलदास, राज छत्रपतिसिंह, पं. पुरुषोत्मदास, उ. अहमजान थिरकवा, उ अमीर हुसेन खाँ, पं. राम सहाय, पं. हरी प्रसाद चौरसिया, पं. निखिल बॅनर्जी, गोपीकृष्ण, पं. बाळकृष्णबुवा इलचकरंजीकर, पं. विष्णु दिगम्बर पलुसकर, स्वामी हरिदास, तानसेन।

विशारद प्रथम-पखावज

पूर्णांक : 500, न्यूनतम : 200, क्रियात्मक : 300, (मौखिक 200 + मंच प्रदर्शन 100),न्यूनतम : 120, शास्त्र (लिखित) 200 (100 +100), न्यूनतम : 80 (40 +40)

सूचना : इस वर्ष में सभी रचनायें प. पलुसकर तथा पं. भातखडें दोनो पद्धतियों में लिपिबद्ध करनी है।

क्रियात्मक

(1) पखावज सुर में मिलाने का अभ्यास तथा हार्मोनियम पर विविध स्वरों के मध्यम एवं पंचम स्वरों को पहचानने की क्षमता। (2) सूलताल, झपताल, चौताल, (पखावज के) और रूपक, एकताल, त्रिताल, (तबले के) इन तालों के ठेकों की दुगुन, तिगुन, चौगुन हाथ से ताल देकर बोलना तथा बजाना। (3) निम्नलिखित बोल समूहों की रियाज की पद्धति का ज्ञान। धातिरकिटतकतिरकिट, धाति, धागेतिट, धिरधिर, धिनगिन, गदिगन, धुमकिट, घिटघिट धागेतिट, धेत् तगिन्न। (4) चौताल, धमार तथा आदिताल में निम्नानुसार वादन का ज्ञान - पडार, तिस्त्र तथा चतस्त्र जाति के रेले, परन, स्तुतिपरन, फरमाईशी चक्रदार परनें तथा नौहक्का तिहाईयाँ। (5) निम्नानुसार वादन की विशेष तैयारी - (अ) चौताल में - धादिंता धादिंता गदिगन युक्त बोलों के चार विस्तार तथा एक तिहाई। धागेतिटकिट धागेतिटकिट धागेतिट युक्त बोलों के चार विस्तार तथा एक तिहाई। (ब) धमार में - तक धुमकिट धुमकिट धुमकिट युक्त बोलों के चार विस्तार तथा एक तिहाई। धेत्धिननकधेत्धेत्धिननक युक्त बोलों के चार विस्तार तथा एक तिहाई। (क) आदिताल में- धिकिटतागेनधिरधिरकिटतागेन युक्त बोलों के चार विस्तार तथा एक तिहाई। धाऽधुमकिटकिटतागेतागेतिट युक्त बोलों के चार विस्तार तथा एक तिहाई। (6) दादरा तथा धुमाली ताल में ठेकों के कलापूर्ण प्रकार। (7) रुद्र तथा गजझंपा इन तालों में रेले, तुकडे, परने तिहाईयाँ बजाने का अभ्यास। (8) गायन, वादन, नृत्य के साथ अभ्यास। (9) अब तक के पाठ्यक्रम में आये हुए सभी तालों मे विभिन्न मात्राओं से शुरु होने वाली दमदार तथा बेदम तिहाईयाँ। (10) किसी एक राग में विलम्बित ख्याल और ध्रुपद (केवल बंदिश) गाने का अभ्यास। (दो अलग राग हो सकते है।) (11 पाठ्यक्रम में निर्धारित तालों के लेहरे बजाने की क्षमता। (12) आमंत्रित श्रोताओं के सामने मंच प्रदर्शन।

शास्त्र - प्रथम प्रश्नपत्र

(1) ताल की विस्तृत पारिभाषिक जानकारी तथा ताल और ठेके का तुलनात्मक अध्ययन। सम, ताली, खाली, विभाग, (खंड) का महत्व तथा उपयोगिता। (2) चौताल, धमार, सूलताल में विभिन्न रचनाओं के लिपिबद्ध करने का अभ्यास। (3) निम्नलिखित पारिभाषिक शब्दों की सोदाहरण जानकारी - फरमाईशी चक्रदार, तिहाई (बेदम/दमदार), पेशकार, पडार, परने तथा उनके विभिन्न प्रकार। (4) निम्नलिखित तालों में से प्रत्येक में दो-दो दमदार एवं दो - दो बेदम तिहाईयाँ तालिपि में लिखना। (अ) तीनताल, झपताल - तबले की दृष्टि से, (ब) तीव्रा, रुद्र - पखावज की दृष्टी से (5) लय और लयकारी के परस्पर संबंध की जानकारी तथा सोदाहरण विवेचन। (6) भारतीय संगीत के 'वाद्य वर्गीकरण सिद्धान्त' की विस्तृत जानकारी। (7) चौताल, धमार और सूलताल तालों की 'आड' 'कुआड' लिपिबद्ध करना। (8) दिये गए बोलों के आधार पर चौताल में विभिन्न मात्राओं से तिहाईयाँ बनाकर तालिपि में लिखने का अभ्यास।

द्वितीय प्रश्न पत्र

(1) पखावज की उत्पत्ति एवं विकास का विस्तृत अध्ययन। (2) पखावज के कुदऊसिंह एवं नानासाहब पानसे घराने का इतिहास तथा वादन विशेषताओं की विस्तृत जानकारी। (3) (अ) पेशकार, पडार, रेला, तुकडा का पखावज एकलवादन में स्थान एवं महत्व (ब) रेला, चक्रदार, परन, स्तुतिपरन, छंद, बोलबाँट तथा नौहक्का का सोदाहरण परिभाषा सहित अध्ययन। (4) समान मात्रा संख्या के विभिन्न तालों का तुलनात्मक अध्ययन। (अ) दीपचंदी, झूमरा, आडाचौताल, धमार। (ब) रुपक, तीव्रा, पश्तो। (क) तिलवाडा, त्रिताल, आदिताल, पंजाबी। (ड) एकताल, चौताल। (5) सुगम संगीत में प्रयुक्त होने वाले तालों की संपूर्ण जानकारी तथा उपयोगिता। (6) **पखावज वादन की आदर्श अभ्यास (रियाज) पद्धति।** (7) जीवनी और सांगितिक योगदान - पं. अयोध्याप्रसाद जी, पं. शंकरराव शिंदे (आपेगांवकर), पं. सखारामंपआंगले, पं. कंठेमहाराज, उ. करामतउल्ला खां, उ. कादरबक्ष, उ. अल्लारखाँ, उ. अली अकबर खाँ, पं. शिवकुमार शर्मा, सितारदेवी, पं. वि. ना. भातखण्डे, गोपाल नायक, अमीर खुसरो, अहोबल। (8) **अ.भा. गांधर्व महाविद्यालय मंडल, की विस्तृत जानकारी** - स्थापना वर्ष, संस्थापक, स्वातंत्र्यपूर्व तथा स्वातंत्र्योत्तर कार्य, कार्य की पं. पलुसकर प्रणित दृष्टि, कार्य का विस्तार, पाठ्यक्रम की विशेषताएँ, मंडल के अन्य उपक्रम आदि मुद्दों के आधार पर।

विशारद द्वितीय - पखावज

पूर्णांक : 500, न्यूनतम : 200, क्रियात्मक : 300, (मौखिक 200 + मंच प्रदर्शन 100),न्यूनतम : 120, शास्त्र (लिखित) 200 (100 +100), न्यूनतम : 80 (40 +40)

सूचना :- इस वर्ष की सभी रचनाएँ पं. भातखण्डे पद्धति में लिपिबद्ध करनी है।

क्रियात्मक

(1) धमार में निम्नानुसार वादन- (अ) कुदऊसिंह घराने का वादन विस्तारपूर्वक बजाना। (ब) 'त्रक' शब्दयुक्त तिस्त्र एवं चतस्त्र जाती के एक एक बोल समूह को छह पलटें तथा तिहाई सहित बजाना। (क) 'धाऽ किटतक दीऽकिटतक' इस शब्दयुक्त बोल समूह को तिस्त्र जाति में छह पलटे तथा तिहाई सहित बजाना। (ड) 'घेघेतिट' अथवा 'घेगेनागे' शब्दयुक्त बोलसमूह छह पलटें तथा तिहाई सहित बजाना। (2) रेला- (अ) 'धिरधिर' शब्दयुक्त रेले का छह पलटें एवं तिहाई सहित अपेक्षित तैयारी में वादन। (ब) 'धेननक' शब्दयुक्त बोल समूह छह पलटें, तिहाई सहित बजाना। (3) दो कमाली चक्रदार तथा दो त्रिपल्ली का पढन्त के साथ वादन। (4) दो बेदम तथा दो 1.1/2 (डेढ) मात्राओं के दमयुक्त तिहाईयों का वादन। (5) निम्नलिखित तालां की डेढगुन, दुगुन, तिगुन व चौगुन हाथ से ताल देकर बोलना तथा बजाना। सूलताल, सूरताल, धमार, आडाचौताल, एकताल, झूमरा। (6) निम्नलिखित तालों में किसी एक ताल में परीक्षक के निर्देशानुसार 10 तालों में किसी एक ताल में परीक्षक के निर्देशानुसार 10 मिनट का एकलवादन - मत्ततताल, आडाचौताल, सवारी/गजझंपा। (15 मात्रा) (7) पखावज सुर में मिलाना, बाद मं आधा सुरचढ़ाकर या उतारकर मिलाना। (8) किसी राग में एक तराना, एक धमार (केवल बंदिश) गाने का अभ्यास (दो अलग राग हो सकत है) (9) पाठ्यक्रम में निर्धारित तालों के लेहरे बजाने की क्षमता। (10) आमिंत्रत श्रोताओं के सामने मंच प्रदर्शन।

शास्त्र -प्रथम पश्नपत्र - विभाग-1

(1) निम्नलिखित तालों की आड, कुआड, बिआड लयकारी लिपिबद्ध करने का अभ्यास- चौताल, झपताल, धमार, सूल, तीव्रा, रुद्र (2) चौताल में कुदऊसिंह घराने का परन, तुकडा, विशेष चक्रदार तिहाई सहित लिपिबद्ध करने का अभ्यास। (3) चौताल में नाना पानसे घराने का रेला और पलटें तिहाई सहित लिपिबद्ध करने का अभ्यास। (4) नाना पानसे एवं नाथ द्वारा घरानों की रचनाओं को लिपिबद्ध करने का अभ्यास। (5) चक्रदार और उसके प्रकार लिपिबद्ध करना। (5) विभिन्न दमयक्त तिहाईयों को लिपिबद्ध करना। (7) दिए गए बोल समूह के आधार पर नयी रचना बनाकर लिपिबद्ध करना।

विभाग- 2

(1) पं. भातखण्डे लिपिपद्धति का गुणदोषात्मक विस्तृत अध्ययन। (2) निम्नलिखित पारिभाषिक शब्दों का उदाहरण सहित विस्तृत विवेचन - उठान, त्रिपल्ली, एवं चौपल्ली फरमाईशी तुकड़ा, फरमाईशी चक्रदार, कमाली, चक्रदार, रेला, रौ, लग्गी, लडी तथा किस्म। (3) पखावज तथा तबले की उत्पत्ति के संबंध में प्रचलित विभिन्न मतों की समीक्षा। (4) ठेका, पेशकार, दुकडा, परन, रेला इनके रचना सिद्धान्त तथा विस्तार के नियम। (5) पखावज के विभिन्न घरानों की वादन विशेषताओं का तुलनात्मक अध्ययन। (6) एकल पखावज वादन से संबंधित निम्न विषयों का अध्ययन। (अ) वादन में रचना प्रकारों की प्रस्तुति का क्रम एवं महत्व (ब) प्रभावकारक प्रस्तुतिकरण के गुणतत्व। (क) पढन्त की आवश्यकता। (ड) लेहरे की उपयोगिता एवं महत्व।

द्वितीय प्रश्नपत्र - विभाग -1

(1) ताल के दशप्राणों का संक्षिप्त अध्ययन तथा क्रिया, अंग, ग्रह जाति और यति का विस्तत अध्ययन। (2) उत्तर भारतीय तालपद्धति का विस्तृत अध्ययन। (3) शास्त्रीय उपशास्त्रीय और सुगम संगीत के साथ पखावज संगीत के विचारों का अध्ययन। (4) निम्नलिखित गान प्रकारों का विवेचनात्मक अध्ययन - (प्रयुक्त ताल-ठेकें, संगति में विविध रचनाओं समावेश आदि मुद्दों के आधार पर) - ध्रुपद, धमार, ख्याल, ठुमरी-दादरा, टप्पा, भजन, गजल सुगत गीत। (5) पखावज वादक के अपने वादन प्रति गुणदोष एवं अपने वादन पर उन गुणदोषों का प्रभाव। (6) **जीवनी और सांगीतिक योगदान** - पं. गोविंदराव ब्रहाणपूरकर, पं. पर्वतसिंह, पं. शंकरराव और पं. माधवराव अलकुटकर, उ. हाजी विलायत अली खाँ, पं. सामता प्रसाद, उ. फैय्याज खाँ (बडोदा), पं. रामकृष्णबुवा वझे, पं. पन्नालाल घोष, पं. रामनारायण, पं. भास्करबुवा बखले, ठाकुर जयदेवसिंह, संत पुरंतदरदास, नाटयशास्त्रकार भरतमुनि, पं. विष्णु नारायण भातखण्डे।

विभाग- 2

(1) भारतीय संगीत में प्रचलित अवनद्ध वाद्यों में पखावज का स्थान। (2) पाश्चात्य अवनद्ध वाद्यों की संक्षिप्त जानकारी - केटल ड्रम, टेनर, स्नेअर, बास। (3) भारतीय शास्त्रीय संगीत, सुगम संगीत तथा लोकसंगीत में पखावज के अलावा प्रयुक्त होने वालो निम्नलिखित अवनद्ध और घन वाद्यों का विवरण - तबला, मृदंगम् (दाक्षिणात्य), ढोल, ढोलक, नाल (ढोलकी), खोल, संबळ, नक्कारा (नगारा), गुटुम, झाँज - मंजीरा, चिपली (चिपळी), चिमटा, मोरचंग, घंटा। (4) पखावज तथा तबला वादन में प्रयुक्त होने वाले वर्णों की निकास का (स्वतंत्र वर्ण, संयुक्त वण, बोलसमूह तथा रचनाओं के आधार पर) तुलनात्मक विवेचन। (5) निम्नलिखित नृत्यशैलियों की जानकारी-कत्थक, भरतनाटयम्, ओडिसी। (6) निबंध लिखने की क्षमता (न्यूनतम 400 शब्दों में) (अ) लय का दैनंदिन जीवन में महत्व। (ब) लयताल शिक्षा का सामाजिक महत्व (क) संगीत की वतमान समस्याएँ। (ड) साहित्य और संगीत। (इ) जीवन में संगीत का स्थान। (7) पं. पलुसकर प्रणित 'गांधर्व महाविद्यालय' शिक्षा प्रणाली का ऐतिहासिक और सामाजिक योगदान।

विशारदतृतीय (पूर्ण) - पखावज

पूर्णांक : 500, न्यूनतम : 200, क्रियात्मक : 300, (मौखिक 200 + मंच प्रदर्शन 100),न्यूनतम : 120, शास्त्र (लिखित) 200 (100 +100), न्यूनतम : 80 (40 +40)

सूचना :- इस वर्ष की सभी रचनाएँ पं. पलुस्कर पद्धति में लिपिबद्ध करनी है।

क्रियात्मक

(1) रुद्र ताल में निम्नानुसार एकलवादन का प्रगत अध्ययन (अ) नाना साहब पानसे घराने का विस्तारपूर्वक वादन। (ब) कुदऊसिंह, पानसे, नाथ द्वारा, मंगळवेढेकर घरानों की विभिन्न रचनाएँ विस्तारपूर्वक तैयारी के साथ बजाना। (क) तिरकिट, धिरधिर तथा धुमकिट शब्दयुक्त रेलों का तैयारी युक्त वादन। (ड) विभिन्न घरानों की रचनाआं की विशेषताओं का स्पष्टीकरण करने सहित पढन्त करना और प्रस्तुति करना। (इ) न्यूनतम चार टुकडे, दो फरमाईशी चक्रदार एवं कमाली चक्रदार का पढन्त सहित वादन। (फ) मिश्र जाति की एक रचना और दो तुकडे बजाने का अभ्यास। (ग) पौन मात्रा के दमयुक्त तिहाईयों का वादन। (2) गजझंपा ताल में निम्नानुसार वादन करने की क्षमता - (अ) पेशकार, छह प्रकार की तिहाईयाँ सहित। (ब) दो परन (एक चतस्त्र, एक तिस्त्र जाति), पाँच-पाँच पलटें एवं एवं तिहाई सहित। (3) झपताल, रुपक, मत्त, रुद्र और सवारी में से परिक्षक के निर्देशानुसार किन्हीं दो तालों में 15 मिनट तक एकल वादन करने की क्षमता। (4) वसंत (9), मणि (11), जय (13), गणेश (18), लक्ष्मी (18) के ठेकों को हाथ से ताल देकर बोलना तथा बजाना। (5) चौताल, सवारी, झपताल, त्रिताल, रुपक को आड दुगुन, तिगुन, चौगुन में पढन्त करने और बाजने की क्षमता। (6) सुगम संगीत के विभिन्न प्रकारों के साथ संगति करने का विशेष अभ्यास। (7) पाठ्यक्रम में निर्धारित तालों के लेहरें बजाने की क्षमता। (8) किसी एक राग में ठुमरी/दादरा और सुगम गीत (केवल बंदिश) गाने का अभ्यास। (9) आमंत्रित श्रोताओं के सामने मंच प्रदर्शन।

शास्त्र - प्रथम प्रश्नपत्र - विभाग - 1

(1) निम्नलिखित लयकारियों का ज्ञान तथा विभिन्न ठेकों को विभिन्न लयकारियों में लिखने का अभ्यास -पौनगुन 3/4 (4 में 3), सवागुन 5/4 (4 में 5), डेढगुन 3/2 (2 में 3), पौने दो गुन 7/4 (4 में 7), ढाईगुन 5/2 (2 में 5), तथा 4/3 (3 में 4) और 4/5 (5 में 4) 2 विभिन्न जाति की रचनाओं सहित पाठ्यक्रम की सभी रचनाओं को लिपिबद्ध करने का अभ्याससस। (3) पं. पलुसकर पद्धति का गुणदोषात्मक विस्तृत अध्ययन। (4) रुद्रताल में मिश्र जाति की रचनाएँ लिपिबद्ध करना। (5) सवारी, मत्त, रुद्र इन तालों के रेले लिपिबद्ध करना। (6) उठाव, बाँट, लोमविलोम, परन के विभिन्न प्रकार (गणेश परन, जोडपरन, शिवपरन, तानपरन, साथपरन) इन रचनाओं को लिपिबद्ध करना। (7) दिए गए बोल समूह के आधार पर नयी रचना बना कर लिपिबद्ध करना।

विभाग-2

(1) उठाव बाँट, लोमविलोम, परन के विभिन्न प्रकार (गणेश परन, जोडपरन, शिवपरन, तानपरन, साथपरन) इन रचना प्रकारों का सोदाहरण, विवेचनात्म्क विस्तृत अध्ययन। (2) निम्नलिखित का तुलनात्मक सोदाहरण विवेचन - (अ) ताल-ठेका (ब) कायदा-पेशकार (क) परन-पडार (ड) गत - टुकडा (इ) रौ-रेला (फ) लग्गी - लडी (3) घराना और बाज इस संकल्पना का विस्तृत अध्ययन तथा पखावज वादन की विभिन्न घरानों की वादन शैली का सोदाहरण तुलनात्मक अध्ययन तथा विवेचन। (4) पखावज वादन में प्रयुक्त होने वाली विभिन्न रचनाओं का सौंदर्यात्मक विवेचन - पेशकार, परन, रेला, तिहाई, छंद। (5) बोलसमूह और परन निर्मिती का आपसी संबंध समझना और विशद करना। (6) विभिन्न तालों में फरमाइशी तथा कमाली चक्रदार बनाने के गणितीय सिद्धान्त।

द्वितीय प्रश्नपत्र - विभाग - 1

(1) छंद की परिभाषा का स्पष्टीकरण तथा छंद और ताल के परस्पर संबंध का ज्ञान। (2) ताल के दश प्राणों का विस्तृत अध्ययन। (3) ताल रचना के सिद्धान्तों का विस्तृत अध्ययन। (4) कर्नाटक तालपद्धति का विस्तृत वर्णन तथा उत्तर भारतीय ताल पद्धति से तुलना। (5) स्टाफ नोटेशन पद्धति के चिन्हों का सामान्य परिचय। (6) जीवनी और सांगीतिक योगदान - पं. अंबादासपंत आगले, उ. नासर खाँ, उ. लतोफ अहमद खाँ, पं. किशन महाराज, उ. अब्दुल करीम खाँ, उ. अल्लादिया खाँ, सुरश्री केसरबाई केरकर, पं. राजाभैय्या पूंछवाले, पं. लालमणी मिश्र, पं. डी. व्ही. पलुसकर, पं. डी. के. दातार, अच्छन महाराज, शंभु महाराज, केलुचरण महापात्र, मुत्थुस्वामी दिक्षितर, संगीत रत्नाकरकर्ता शारंगदेव। (7) पं. विष्णु दिगम्बर पलुसकर का जीवन और कार्य के बारे में विस्तृत जानकारी (प्रा. बी.आर. देवधर लिखित पं. पलुसकर चरित्र के आधार पर) तथा इस चरित्र का भाषा, समीक्षा, सामाजिक अध्ययन।

विभाग- 2

(1) तबला वादन की निम्नलिखित परम्पराओं की वादन विशेषताओं सहित जानकारी - (अ) दिल्ली ' आजराडा (क) फरुखाबाद (ड) लखनऊ (2) भारतीय संगीत का संक्षिप्त इतिहास। (3) गायन के घरानों की संक्षिप्त जानकारी - ग्वाल्हेर, आग्रा, जयपुर, रामपूर, डागुर, दरभंगा। (4) लखनऊ, बनारस, पंजाबी इन ठुमरी शैलियों की जानकारी (5) पखावज वादक के लिए आहार-विहार तथा व्यायाम का महत्व। (6) समीक्षा की संकल्पना का प्राथमिक अध्ययन और संगीत समीक्षा की संक्षिप्त जानकारी। (7) निबंध लेखन (न्यूनतम) 400 शब्दों में) (अ) संगीत - एक जीवनकार्य (ब) कलाकार का सामाजिक महत्व। (क) धर्म और संगीत। (ड) संगीत को संत कवियों की देन। (इ) संगीत के प्रति समाज की जिम्मेदारी। (8) संगीत के सर्वसमावेशकता का परिचय, निम्नलिखित मुद्दों के आधार पर - भाषा, गणित, इतिहास, भूगोल (जिओग्राफी) और भिन्न-भिन्न शास्त्र (फिजिक्स तथा मानसशास्त्र, समाजशास्त्र, शिक्षणशास्त्र, पर्यावरण, सांस्कृतिकता आदि)।

अलंकार प्रथम-पखावज

पूर्णांक :600, न्यूनतम : 270, क्रियात्मक : 400, (मौखिक 200 + मंच प्रदर्शन 200),न्यूनतम : 180, शास्त्र (लिखित) 200 (100 +100), न्यूनतम : 90 (45 +45)

सूचना :- इस वर्ष की सभी रचनाएँ पं. भातखण्डे पद्धति में लिपिबद्ध करनी है।

क्रियात्मक

(1) अष्टमंगल ताल में संपूर्ण विस्तार के साथ स्वतंत्र वादन (अ) घरानेदार पेशकार अथवा उठान का प्रस्तुतिकरण। (ब) मिश्र जाति का एक रेला, न्यूनतम छह पलटों सहित तथा मिश्र जाति की कुछ अन्य रचनाएँ। (क) मिश्र जाति का एक रेला न्यूनतम छह पलटों सहित। (ड) धिरधिरधिर, धिलांग् तथा तकतिरकिटतक (तातिरकिटतक) शब्दयुक्त रेलों का प्रस्तुतिकरण। (ई) चलन बजाकर उसका रेला प्रस्तुत करना। (फ) न्यूनतम चार विभिन्न प्रकार की परनों का वादन। (ग) विभिन्न मात्रा से प्रारंभ होने वालो तिहाईयें का अभ्यास। (2) अन्य ताल - निम्नलिखित तालों में से किन्हीं दो तालों में परीक्षक के निर्देशानुसार न्यूनतम 15 मिनट का स्वतंत्र वादन प्रस्तुत करने की क्षमता - ब्रह्म, लक्ष्मी, शंकर, गणेश (21 मात्रा) (3) दादरा, कहरवा, चाचर ताल में ठेकों के कलापूर्ण प्रकारों का वादन। (4) (अ) स्वर पहचानना (ब) पखावज स्वर में मिलाना तथा पखावज की बनावट का पखावज सुर में होने / ना होने पर होने वाले परिणाम की जानकारी (चाट / थाप एक सुर में होना/ना होना)। (5) किसी एक राग में विलम्बित, द्रुत ख्याल और ध्रुपद (केवल बंदिश) गाने का अभ्यास। (6) पाठ्यक्रम में निर्धारित तालों के लेहरे बजाने की क्षमता। (7) आमंत्रित श्रोताओं के सामने मंच प्रदर्शन।

शास्त्र - प्रथम प्रश्नपत्र - विभाग - 1

(1) नाथ द्वारा घराने की रचनाएँ लिपिबद्ध करना। (2) विभिन्न मात्राओं से प्रारंभ होने वाली तिहाईयाँ लिपिबद्ध करना। (3) विभिन्न प्रकार के छंद तथा उन पर आधारित रेले लिपिबद्ध करना। (4) आडाचौताल, अष्टमंगल, रुद्र, ब्रह्मताल में परन तथा रेले लिपिबद्ध करना। (5) मिश्र जाति की परनें लिपिबद्ध करना। (6) दिए गए बोलों के आधार पर विभिन्न तालों में नयी रचना बनाकर लिपिबद्ध करना।

विभाग- 2

(1) घराने दार बंदिशों की सोदाहरण जानकारी तथा उनकी विशेषताओं का अध्ययन। (2) छंद और उनक प्रकार की जानकारी- त्रिपल्ली, चौपल्ली, दुधारी, कवित्त, विष्णुपरन इत्यादि। (3) पेशकार या पडार या अर्थ एवं उसे स्वतंत्र पखावज वादन में सर्वप्रथम बजाने का महत्व इनके बारे में स्पष्टीकरणात्मक विस्तृत विवेचन। (4) रेला और रौ की परिभाषा एवं सोदाहरण विस्तृत जानकारी। (5) लय, बोल, ठेका एवं किस्म इनका आपसी संबंध और साथ संगत एवं स्वतंत्र पखावज वादन में उनका स्थान तथा उपयोगिता।

द्वितीय प्रश्नपत्र - विभाग - 1

(1) ध्वनि का वैज्ञानिक अध्ययन। पखावज से निकलने वाले नाद का ऊँचा-नीचापन, बडा-छोटापन तथा गुणधर्म का वैज्ञानिक दृष्टिकोण से विवेचन। (2) भरतनाटशास्त्र के तालाध्याय का संक्षिप्त अध्ययन तथा 'मार्गी' ताल पद्धति का विस्तृत अध्ययन - कला, मात्रा, एककल, द्विकल, चतुष्कल की जानकारी। (3) ताल के दश प्राणों का विस्तृत अध्ययन तथा वर्ममान ताल पद्धति में उनकी उपयोगिता और महत्व के बारे में तर्कसंगत विचार। (4) तिहाई और चक्रदार का अंतर्निहित संबंध तथा तुलनात्मक ज्ञान। तिहाई तथा चक्रदार के गणितोय नियमों का विवेचन। (5) पखावज की बंदिशों की भाषा का उद्गम आर विकास की जानकारी तथाा इस भाषा से निर्मित साहित्य (बंदिशों) का ज्ञान। (6) पखावज वादन में प्रयुक्त होने वाले विभिन्न वर्ण तथा उनक संयोजन से बनने वाले शब्द/शब्द समूहों के निकास की विस्तृत जानकारी पढन्त और निकास में अंतर की जानकारी तथा कारणमीमांसा। (7) पखावज के रियाज की विभिन्न पद्धतियों पर तर्कसंगत विचार। (8) कलाकार के लिए आहार-विहार तथा व्यायाम का महत्व। (9) जीवनी और सांगीतिक योगदान- पं. तोताराम शर्मा, पं. रामदास शर्मा, पं. घनश्मामदासजी, पं. नारायणराव कोळी, पं. रमाकान्त पाठक, उ. जहाँगीर खाँ, उ. शेख दाऊद खाँख, पं. कंठे महाराज, उ. अमीर खाँ, श्रीमती मोगुबाई कुर्डीकर, एन्.राजम्, पं. ओंकारनाथ ठाकुर, पं. रविशंकर, उ. बिस्मिल्लाह खाँ, उदयशंकर, बिरजू महाराज, पंडिता दमयंती जोशी, रामामात्य।

विभाग- 2

(1) पखावज वादन - पद्धति के विकास के लिए विद्वान कलाकारों द्वारा किए गए कार्य की सोदाहरण जानकारी। (2) भारतीय तथा पाश्चात्य अवनद्ध वाद्यों की बनावट क आधार पर तुलना। (3) भारतीय वाद्य वर्गीकरण का प्रगत अध्ययन और निम्नलिखित तंत्री तथा सुषिर वाद्यों की जानकारी-तानपुरा, सितार, सरोद, संतूर, सारंगी, बेला, सरस्वति वीणा, हार्मोनियम, शहनाई, नागस्वरम्, बांसुरी। (4) पखावज एकल वादन तथा संगति के सौंदर्यतत्वों का विशलेषणात्मक अध्ययन। (5) ध्रुपद, धमार, ख्याल, टप्पा, ठुमरी आदि तथा मसीतखानी, रजाखानी, गतें इनकी ऐतिहासिक जानकारी तथा इनके साथ पखावज संगति का विवेचनात्मक अध्ययन। (6) भारतीय काव्यशास्त्र की संक्षिप्त जानकारी, काव्यशास्स्त्रकार और उनके सिद्धांत के आधार पर - (भरत, अभिनवगुप्त, रुद्रट, मम्मट, आनंदवर्धन, विश्वनाथ, जगन्नाथ, राजशेखर, दंडी, वामन, हेमचंद्र आदि)। (7) संगीत समीक्षा लेखन के मूलतत्वों का विस्तृत अध्ययन। संगीत समीक्षा का ऐतिहासिक तथा आधुनिक काल और प्रसार, प्रचार माध्यम में संगीत समीक्षा। (8) निबंध (न्यूनतम 500 शब्दों में) (अ) पखावज वादक क निर्मिती में सांगितिक संस्थाओं का योगदान। (ब) संगीत कला का अध्ययन/अध्यापन और व्यवसायीकरण। (क) संगीत शिक्षा और वैज्ञानिक उपकरण। (ड) लय ताल शिक्षा की अनिवार्यता। (इ) कला का सामाजिक स्थान।

अलंकार पूर्ण-पखावज

पूर्णांक :600, न्यूनतम : 270, क्रियात्मक : 400, (मौखिक 200 + मंच प्रदर्शन 200),न्यूनतम : 180, शास्त्र (लिखित) 200 (100 +100), न्यूनतम : 90 (45 +45)

सूचना :- इस वर्ष की सभी रचनाएँ पं. पलुसकर पद्धति में लिपिबद्ध करनी है।

क्रियात्मक

सूचना :-संगीत अलंकार के अंतिम वर्ष की परीक्षा में स्वतंत्र वादन मुख्य विषय होगा। तथा साथसंगत यह सहायक विषय होगा। परीक्षार्थी को गायन तंतुवाद्य (स्वरवाद्य) तथा कथ्थक नृत्य में से किसी एक विधा की संगति को चुनना होगा। जिसका उल्लेख परीक्षार्थी अपने परीक्षा आवेदन पत्र में करेंगे।

विभाग- 1 (मुख्य विषय) स्वतंत्र वादन

(1) शिखर ताल में विस्तारपूर्वक एकल वादन (अ) कुदऊसिंह और नाथ द्वारा घराने के पेशकार का विस्तृत वादन। (ब) एक खण्ड जाति तथा एक मिश्र जाति का रेला, छल पलटों के साथ। (क) पूर्ण संकल्पित रचनाओं में से उठान, बाँट, तुकडे, फरमाईशी, चक्रदार, कमाली चक्रदार, परन के एक-एक उदाहरण को हाथ से ताल देकर बोलना तथा बजाना। (ड) पखावज के सभी घरानों की विशेषताएँ प्रकट करन वाली रचनाओं का वादन। (2) अन्य ताल (अ) मत्त (9), रुद्र (11), जय (13), अर्जुन (20, फिरदोस्त (14) इन तालों में पेशकार, दो परनें एक रेला (तिहाई के साथ), तथा कम से कम चार तुकडे एवं एक फरमाईशी और एक कमाली चक्रदार का वादन। (3) पखावज के अतिरिक्त किसी अन्य अवनद्ध वाद्य की वादन पद्धति की जानकारी तथा वादन करने की क्षमता का प्रदर्शन। (4) किसी एक राग में तराना, धमार, ठुमरी/दादरा (केवल बंदिश) का गयान करने का अभ्यास। (5) पाठ्यक्रम में निर्धारित तालों के लेहरे बजाने की क्षमता। (6) आमंत्रित श्रोताओं के सामने मंच प्रदर्शन।

विभाग- 2 (सहायक विषय) साथसंगत

सूचना : इस विषय के सभी परीक्षार्थियों में पखावज तथा तानपुरा स्वर में मिलाने की क्षमता होना अनिवार्य है।

(अ) **गायन की साथसंगत** (अ) (1) चौताल, धमार, सूलताल, तीव्रा, मत्त तालों में विलम्बित लय में वनजदार तथा लयदार ठेका बजाना। इन ठेकों में ठेका - भरी युक्त वादन और मुखड़े तुकडे बजाकर सम पर आने की क्षमता। (अ) मध्यलय में संगत करते समय विभिन्न आकर्षक मुखडों का प्रयोग करने की क्षमता। (अ) (3) उपशास्त्रीय गायन की संगति में गायन के अनुरुप तालों के ठेके बजाने की क्षमता तथा कलात्मक एवं सौंदर्यपूर्ण बोलों का प्रयोग (अ) (4) उपज अंग से विभिन्न प्रकार की संगति का ज्ञान। (ब) **तंत्रीवाद्य/स्वरववाद्य की संगत** (ब) (1) आदिताल, चौताल, तीव्रा, सूलताल, झपताल को विलम्बित तथा द्रुत लय में वाद्यवादन के अनुरुप बजाने की क्षमता। (ब) (2) विलम्बित या अन्य प्रकार की गतों के साथ अलग अलग मात्राा से उठने वाली विविध दमयुक्त तिहाईयों को बजाने की क्षमता। (ब) (3) उपज अंग से विभिन्न प्रकार की संगति का ज्ञान। (ब) (4) धून/लोकधून/प्रादेशिक धून इत्यादि के साथ अनुरुप संगति करना तथा विभिन्न ठेकों को बजाने की क्षमता। (क) **कथ्थक नृत्य की संगत** - (क) (1) थाट के अनुरुप संगति करना। (क) (2) आमद, तोडा, तुकडा, परन के अनुरुप संगति करना। (क) (3) कथ्थक नृत्य में प्रदर्शित की जानेवाली न्यूनतम पाँच बंदिशों की पढन्त करना तथा उनका पखावज पर वादन करना। (क) (4) चाचर और दादरा में न्यूनतम चार बंदिशों का चाट अंग से वादन करन की क्षमता। (क) (5) कथ्थक नृत्य के तत्कार गिनति के अनुरुप साथसंगत एवं द्रुतलय में बोल या बोल समूह के अक्षरों के क्रम में परिवर्तन करते हुए न्यूनतम चार पलटें बजाने की क्षमता। (क) (6) नृत्य के अनुरुप उपज अंग से संगती करना तथा विभिन्न प्रकार की तिहाईयों का वादन अंग से संगती करना तथा विभिन्न प्रकार की तिहाईयों का वादन करने की क्षमता। (क) (7) नृत्य के गीत, रस-भाव, अभिनय प्रदर्शन के साथ उचित ढंग से प्रभावकारी वादन करने की क्षमता।

शास्त्र - प्रथम प्रश्नपत्र - विभाग - 1

(1) लय और लयकारी का विस्तृत अध्ययन। निम्नलिखित तालां के पौनगुन सवागुन, डेढगुन तथा पौने दो गुन में लिपिबद्ध करने का अभ्यास - शिखर, आडाचौताल, धमार, वसंत, जय, रुद्र। (2) शिखर में खंड जाति का रेला, पलटें तथा तिहाई सहित लिपिबद्ध करना। (3) मत्त, रुद्र तथा जय ताल में फरमाईशी तथा कमाली चक्रदार लिपिबद्ध करना। (4) शिखर के एक आवर्तन में अन्य किसी असमान मात्रा वाले ताल का आवर्तन लिपिबद्ध करना। इसी तरह अन्य तालों का रुपांतर का अभ्यास। (5) शिखर घरानेदार परन तथा पडार लिपिबद्ध करना। (6) आडाचौताल, झपताल, मत्ताताल, जयताल, रुद्र ताल इनमें विभिन्न मात्राओं से आरम्भ होकर सम पर आने वाली तिहाईयाँ लिपिबद्ध करना। (7) दिए गए बोलों के आधार पर विभिन्न तालों में नयी रचना बनाकर लिपिबद्ध करना।

विभाग- 2

(1) पखावज वादन की रचनाओं में शब्दालंकार, छंदवृत्त, गणवृत्त और काव्यसौंदर्य की जानकारी। (2) 'उपज' की परिभाषा, निर्मिति प्रक्रिया/पद्धति तथा उसकी स्वतंत्र पखावज वादन में और संगति में उपयोगिता और महत्व। (3) एकल पखावज की परंपरागत विधि तथा उसमें आये हुये बदलाव की विस्तत जानकारी। (4) गायन, वादन तथा नृत्य की पखावज संगति में पिछले पचास वर्षों में आये हुये बदलाव की जानकारी। (5) संगीत में क्लिष्ट, अप्रचलित एवं विषम मात्रिक तालों के अध्ययन

की उपयोगिता तथा महत्व। (6) समान मात्रा के विभिन्न तालों का औचित्य तथा उपयोगिता पर आपके विचार। (7) पखावज वादन में सुरीलापन, वनजदारी, दाएँ-बाएँ का संतुलन, तैयारी तथा नजाकत का महत्व।

द्वितीय प्रश्नपत्र ' विभाग 1

(1) 'संगीतरत्नाकर' के तालाध्याय का विस्तृत अध्ययन तथा मार्गी एवं देशी तालपद्धति का तौलनिक अध्ययन। (2) लय, लयकारी, नाद, बोल एवं वादनविधि से रसनिष्पत्ति। (3) भारतीय तालों का वैज्ञानिक रूप तथा सौंदर्य शास्त्र। (4) 'पखावज वादन में प्रयुक्त विभिन्न प्रकार की बंदिशें तथा तथा रचनाओं का निकास, क्या वर्तमान तालिलिपि पद्धतियों द्वारा समझना संभव है ? वर्तमान तालिलिपि में सुधार या परिवर्तन आवश्यक है ? इन विषयों पर आपके विचार। (5) लय और मनोभाव इनका अंत: संबंध तथा विभिन्न रचना प्रकारों में इसकी अनुभूति। (6) जीवनी और सांगीतिक योगदान सिंहभूपाल, मतंगमुनि, राणा कुंभा, कल्लीनाथ, अहोबल, व्यंकटमखी, सवाई प्रतापसिंह, राजा सरफोजी भोसले (तंजावर), बडे रामदासजी, पं. भीमसेन जोशी, पं. गोविंदराव टेंबे, पं. जगन्नाथबुवा पुरोहित, पं शंकरराव व्यास, उ. अल्लाउद्दीन खाँ, पं. गजाननराव जोशी, प्रो.बी.आर. देवधर, बिंदादिन महाराज, रोशनकुमारी, पंडिता रोहिणी भाटे, एम.एस. सुब्बललक्ष्मी।

विभाग- 2

(1) पखावज वादन की पारंपरिक (गुरुशिष्य) और आधुनिक (संस्थागत) शिक्षण प्रणाली का तुलनात्मक अध्ययन। (2) लोकसंगीत में प्रयुक्त वाद्यों की जानकारी - कमायचा, डफ, ढक्का, ताशा, तुरही (तुतारी), दमामा, करताल, तुणतुणें, खंजिरी, हलगी, घुगरु, घुमट। (3) संगीत और प्रचार-प्रसार के आधुनिक दृकश्राव्य माध्यम। (4) अवनद्ध वाद्यों का विकास और सौंदर्यात्मक विविध नाद निर्मित में उनकी बनावट का योगदान। (5) पखावज वादक तथा वादन के गुणदोष पर आपके विचार। (6) लय तथा लयकारियों के अध्यापन की विविधि पद्धतियाँ तथा उनका औचित्य, उपयोगिता एवं महत्व। (7) शोधनिबंध तथा प्रबंध के लिए संशोधन पद्धति तथा लेखन पद्धति। (8) समीक्षा लेखन की भाषाशैली तथा संगीत समीक्षा क विविध रूप - ग्रंथ लेखन, प्रासंगिक लेखन, महफिल का वृत्तांत, कलाकार की मुलाकात, क्षेत्रीय नयी/पुरानी जानकारी, वृत्तपत्र/मासिक में लेख आदि। आधुनिक काल में आकशवाणी और दूरदर्शन पर होने वाली संगीत समीक्षा। (9) **निबंध लेखन (न्यूनतम 500 शब्दों में)** - (अ) संगीत चिकित्सा। (ब) संगीत और अन्य ललित कलाओं अंत: संबंध (इ) मानसशास्त्र और संगीत।

कत्थक नृत्य

संगीत परिचय -कत्थक नृत्य

जनवरी से दिसम्बर तक / जून से मई तक

(पूरे वर्ष में 40 घंटे)

सूचना :- इस वर्ष के लिए परीक्षा नहीं होगी। खुद शिक्षक द्वारा केवल वार्षिक पाठ्यक्रम पूर्तता के लिए विद्यार्थी का मूल्यमापन होगा।

(1) चित्र द्वारा नृत्यशैली का परिचय (जहाँ हो सके वहाँ व्हीडीओ द्वारा नृत्य का दर्शन((2) ताली द्वारा लय का परिचय (गायन/वादन संगीत सुनाना) (3) स्थानक परिचय (Pose) (4) पदाघात का अंदाज 8 मात्रा (तत्कार) (5) विशिष्ट दिशा में लय के साथ चलने का अभ्यास। (6) हस्तसंचालन का प्राथमिक परिचय। (7) कत्थक के लिए वेषभूषा का परिचय और वाद्य परिचय। (8) एक बालगीत - कहरवा/दादरा ताल में। (9) एक राष्ट्रभक्ती/देशभक्ती गीत पर अभिनय। (जहाँ से कत्थक के अभिनय की शुरूआत हो सकती है, ऐसा गति चुनाना)। (10) गीत में प्रयुक्त मुद्राओं का सामान्य परिचय।

प्रारंभिक- कत्थक नृत्य

सूचना :- इस वर्ष के लिए परीक्षा नहीं होगी। खुद शिक्षक द्वारा केवल वार्षिक पाठ्यक्रम पूर्तता के लिए विद्यार्थी का मूल्यमापन होगा। (नियम - प्रारंभिक से ही तबला और लेहरे के साथ नृत्य करना होगा)।

क्रियात्मक

(1) असंसुक्त हस्तमुद्राओं को हाथों द्वारा दिखाना, अभिनयदर्पण के अनुसार 28 मुद्राएँ। (2) तीनताल मे तत्कार बराबर, दुगुन, चौगुन तिहाई सहित। (3) तीनताल में 6 सादे तोडे, 2 चक्करदार तोडे, 2 तिहाईयाँ। (4) तीनताल की गिनती तथा ठेका ठाह, दुगनु, चौगुन में हाथ से ताली देकर बोलना। (5) सभी रचनाओं की पढन्त आवश्यक।

शास्त्र

(1) कहरवा, दादरा और तीनताला का शास्त्रीय। (2) निम्नलिखित शब्दों की संक्षिप्त जानकारी - लय, विलम्बित लय, मध्यलय, द्रुतलय, मात्रा, सम, ताली, खाली, विभाग (खंड) और तिहाई। (3) कत्थक नृत्य का परिचय (पाँच वाक्यों में) (4) खुद का, संस्था का और गुरु/शिक्षक का परिचय।

प्रवेशिका प्रथम-कत्थक नृत्य

पूर्णांक :75, न्यूनतम : 26, क्रियात्मक : 60, शास्त्र मौखिक : 15

सूचना : प्रारंभिक के सभी विषयों को दोहराना है।

क्रियात्मक

(1) अभिनयदर्पण के अनुसार संयुक्त हस्तमुद्राओं को हाथों द्वारा दिखाना- अभिनयदर्पण के अनुसार संख्या 23 (2) तीनताल - रंगमंच प्रमाण 1, ठाठ 2, सादा आमद 1, तोडे 6, चक्कदार तोडे 2, परन 2 गतनिकास (अ) सीधीगत, मटकी गत, बाँसुरी गत। (ब) तत्कार बरारब, दुगुन, चौगुन तिहाई सहित। (क) हाथ से ताल देते हुये सभी तोड़ों का अभ्यास। (ड) तीनताल का ठेका ताल सहित ठाह, दुगुन, चौगुन में पढना। (ई) तीनताल में तत्कार के 4 पलटें। अभिनय गीत - कहरवा या दादरा ताल में एक अभिनय गीत जिसके बोल कंठस्थ हों।

शास्त्र

(1) निम्नलिखित शब्दों की जानकारी - लय (बरारबर, दुगुन, चौगुन), सम, मात्रा, ताली, खाली, गतनिकास, तत्कार, तोडा, गतपलटा, बाँट। (2) झपताल के ठेके की जानकारी - मात्रा संख्या, सम, ताली, खाली के आधार पर। (3) पाँच वर्तमान कत्थक गुरुओं के नाम।

प्रवेशिका पूर्ण - कत्थक नृत्य

पूर्णांक : 125, न्यूनतम : 44, क्रियात्मक : 75, न्यूनतम 26 शास्त्र (मौखिक) 50, न्यूनतम 18

सूचना : पिछले दोनों वर्षों के सभी पाठ्यक्रम को दोहराना है।

क्रियात्मक

(1) वंदना - श्लोक द्वारा (2) तीनताल - 2 ठाठ, 1 परनजुडी आमद, 1 रंगमंच प्रणाम, 4 तोडे (कम से कम 3) आवृत्ति वाले), 2 परन, 2 चक्करदार परन, 1 कवित्त, 1 चक्करदार तिहाई। तीनताल में पढन्त और तत्कार - आधी, बराबर, दुगुन, चौगुन, आठगुन तिहाई सहित तथा तत्कार के पाँच पलटें। गतनिकास - मोरमुकुट, घूँघट, बाँसुरी। गत भाव - पनिहारी गतभाव में दिखाई गई हस्तमुद्राएँ - नामसहित। (3) झपताल -1 ठाठ, 1 आमाद, 1 तिहाई, 2 तोडे, 1चक्करदार तोडा, 1 परन, तत्कार - बराबर, दुगुन तिहाई सहित। (क्रियात्मक के सभी बोलों का हाथ से ताल देकर पढना आवश्यक है।)

शास्त्र

(1) निम्नलिखित शब्दों की संक्षिप्त जानकारी - आमाद, तोडा, टुकड़ा, तत्कार, परन, चक्करदार, कवित्त, तिहाई, गतभाव, हस्तमुद्रा। (2) (अ) लोकनृत्य की परिभाषा तथा पाँच प्रादेशिक लोकनृत्य के नाम जानना (पाँच वाक्यों में)। (ब) सात शास्त्रीय नृत्यशैलियों के नाम उनके प्रांतसहित। (3) अभिनयदर्पण के अनुसार संयुक्त हस्तमुद्राओं पयोग। (4) अभिनयदर्पण के अनुसार 4 प्रकार के ग्रीवा भेद। (5) पं. पलुसकर और पं. भातखण्डे तालिलिपि की संक्षिप्त जानकारी।

मध्यमा प्रथम - कत्थक नृत्य

पूर्णांक : 200, न्यूनतम : 70, क्रियात्मक : 125, न्यूनतम 44, शास्त्र (लिखित) 75, न्यूनतम 26

सूचना : इस वर्ष मेंपिछले सभी वर्षों के पाठ्यक्रम को दोहराना है।

क्रियात्मक

(1) तीनताल में विशेष योग्यता - (अ) गुरुवन्दना (ब) 3 ठाठ (अलग अलग स्थानक (Poses) वालें), 2 आमद (1 साधा + 1 परनजुडी), 3 चक्करदार तोडे जो 4 आवृत्ति से कम न हो, 3 परन (1 तिस्त्र जाति परन आवश्यक), 3 चक्करदार परन, 2 कवित्त, 3 गिनति की तिहाईयाँ, तत्कार में - आधी, बराबर, दुगुन, तिगुन, चौगुन, आठगुन करना तथा बाँट या चलन का विस्तार करना। तीनताल में गतनिकास की विशेषता -झूमर (झूमर - घुँगरु युक्त माथे का बिंदि जैसा माँग का गहना), कलाई। मटकी उठाने के तीन प्रकार। गतभाव - माखन चोरी। अभिनय पक्ष में - एक भजन अथवा भक्तिरस के आधार पर गीत या पद पर अभिनय (भावप्रस्तुति)। (2) झपताल - 2 ठाठ, 1 परनजुडी आमद, 1 सलामी/प्रमाण, 3 सादे तोडे (तीन आवृत्ति से अधिक आवर्तनों के हों), 2 चक्करदार तोडे, 2 परन, 2 चक्करदार परन, 1 कवित्त, 3 तिहाईयाँ, तत्कार-बराबर, दुगुन चौगुन तिहाई सहित और किसी भी एक चलन के विस्तार सहित। (3) एकताल - 1 ठाठ, 1 आमद, 2 तोडें, 1 चक्करदार तोडा, 1 परन, 1 चक्करदार परन, 1 तिहाई, तत्कार-बराबर, दुगुन, चौगुन तिहाई सहित। (4) किसी राग में मध्यलय की बंदिश (केवल बंदिश) गाने का अभ्यास।

शास्त्र

(1) प्रारंभिक से प्रवेशिका पूर्ण तक के सभी शब्दों की जानकारी की पुनरावृत्ति। (2) अभिनयदर्पण के अनुसार नौ प्रकार के शिरोभेद। (3) भरतनराटयम्, कुचिपुडी और मोहिनी अट्टम् इन नृत्यशैलियों की वेशभूषा और वाद्य के आधार पर संक्षिप्त जानकारी। (4) जीवनियाँ - पं. कालिका प्रसाद और पं. बिंदादीन महाराज, पं. हरिहरप्रसाद और पं. हनुमान प्रसाद आचार्य सुखदेव महाराज। (5) कत्थक नृत्य का संक्षिप्त इतिहास (10 से 15 वाक्यों में)। (6) जयपुर तथा लखनऊ घराने की विशेषता। (7) मुद्रा शब्द का स्पष्टीकरण देते हुए असंयुक्त मुद्राओं के लक्षण और विनियोग की जानकारी (संख्या 28)। (8) तीनताल, झपताल, एकताल का परिचय देकर पाठ्यक्रम की रचनाओं को पं. पलुसकर तथा पं. भातखण्डे पद्धति में लिपिबद्ध करना। (9) गतभाव के प्रसंगों का वर्णन लिखना। (10) संत कवि सूरदास तथा मीरा का परिचय।

मध्यमा पूर्ण- कत्थक नृत्य

पूर्णांक : 200, न्यूनतम : 70, क्रियात्मक : 125, न्यूनतम 44, शास्त्र (लिखित) 75, न्यूनतम 26

सूचना : (1)इस वर्ष में पिछले सभी वर्षों के पाठ्यक्रम को दोहराना है। (2) इस वर्ष की सभी रचनाएँ पं. पलुसकर और पं. भातखण्डे दोनो पद्धति में लिपिबद्ध करने का अभ्यास अपेक्षित है।

क्रियात्मक

(1) श्री शिववंदना (आगिंक भुवनं यस्य.....) अथवा श्रीकृष्ण वंदना। (2) तीनताल में विशेषताओं सहित - 1 उठान, 1 ठाठ, 1 आमद, 1 परमेलु, 1 नटवरी तोडा, 1 फरमाईशी चक्रदार, (पहला धा पहली सम पर, दूसरा धा दूसरी सम पर, तीसरा धा तीसरी सम पर) 1 गणेश परन, 1 तत्कार की लडी (उदाहरणार्थ 'तकिट तकिट धिन' य ऐसी कोई)। (3) रूपक - 1 ठाठ, 1 सादा आमद, 4 सोदे तोडे, 2 चक्करदार तोडे, 2 परन, 2 चक्करदार परन, 2 तिहाईयाँ, 1 कवित्त। तत्कार - बराबर, दुगुन, चौगुन तिहाई सहित तथा किसी एक चलन का विस्तार। (4) चौताल - 2 ठाठ, 2 परनजुडी आमद, 4 तोडे, 2 चक्करदार तोडे, 2 परन, 2 चक्करदार परन, 1 कवित्त, 3 तिहाईयाँ। तत्कार - बराबर, दुगुन, तिगुन, चौगुन तिहाई सहित तथा किसी एक चलन का विस्तार। (5) सीखे हुये सभी बोलों की हाथ से ताल देकर

पढन्त करना। (6) गतनिकास में विशेषता - रुखसार, छेडछाड, आँचल आदि। (7) गतभाव में - कालिया दमन। (8) होरो पर भाव प्रस्तुति। (9) किसी राग में मध्य तथा द्रुतलय में एक बंदिश (केवल बंदिश) गाने का अभ्यास। (10) ठेके बजाने का साधारण ज्ञान। (11) पाठ्यक्रम में निर्धारित तालों के लेहरे बजाने की क्षमता।

शास्त्र

(1) बनारस, जयपुर तथा लखनऊ घराने की परंपरा की विस्तृत जानकारी (वंशपरंपरासहित)। (2) नाटयशास्त्र के अनुसार भौ संचालन के प्रकार और प्रयोग। (3) अभिनयदर्पण के अनुसार दृष्टिभेद के प्रकार और उनका प्रयोग (4) लास्य तथा ताण्डव की परिभाषा तथा उनके प्रकार। (5) (अ) तीनताल, एकताल तथा रुपक के सभी बोलों को लिपिबद्ध करना। (ब) तीनताल के ठेके को आधी (1/2), पौनी (3/4 = 4 में 3), कुआडी 1.¼ (2 में 3, बिआडी (पौने दो) 1.3/4 लय में लिपिबद्ध करना। (6) अभिनय की स्पष्ट परिभाषा तथा आंगिक, वाचिक, आहार्य, सात्विक अभिनय की जानकारी तथा प्रयोग। (7) अभिनयदर्पण के अनुसार संयुक्त हस्तमुद्राओं के लक्षण और विनियोग (संख्या 23)। (8) जीवनी और सांगीतिक योगदान - पं. अच्छन महाराज, पं. शंभू महाराज, पं. लच्छु महाराज, पं. नारायण प्रसाद, पं. जयलाल, पं. सुंदर प्रसाद, पं. स्वमी हरिदास, तानसेन पं. बाळकृष्णबुवा इचलकरंजीकर, पं. वि.दि. पलुसकर, पं. वि.ना. भातखण्डे, पं. निखिल बॅनर्जी, पं. सामताप्रसाद, सिद्धेश्वरी देवी, अहोबल।

विशारद प्रथम - कत्थक नृत्य

पूर्णांक : 500, न्यूनतम : 200, क्रियात्मक : 300, (मौखिक 200 + मंच प्रदर्शन 100),न्यूनतम : 120, शास्त्र (लिखित) 200 (100 + 100), न्यूनतम : 80 (40 + 40)

सूचना :-(1) पिछले सभी वर्षों के पाठ्यक्रम की पुनरावृत्ति आवश्यक। (2) इस वर्ष की सभी रचनाएँ पं. पलुसकर और भातखण्डे दोनों पद्धति में लिपिबद्ध करने का अभ्यास अपेक्षित है।

क्रियात्मक

(1) सरस्वती वंदना या दुर्गा स्तुति। (2) (तीनताल के अतिरिक्त) धमार में निम्नानुसार विशेष तैयारी - विलम्बित, मध्य, द्रुत लय में कत्थक के वस्तुक्रम के अनुसार लय और लयकारी सहित संपूर्ण प्रदर्शन। (3) गजझंपा या पंचम सवारी में ठेके की ठाह, दुगुन, ठाठ, आमद, 2 तोडे, 1 परन तथा एक कवित्त का प्रदर्शन। (4) गतनिकास - आँचल, नाव, घूँघट के प्रकार। गतभाव- द्रौपदी चीरहरण तथा पिछले वर्षों के सभी गतभावों का प्रदर्शन। (5) ठुमरी पर भाव (राग, ताल, शब्द की जानकारी आवश्यक)। (6) एक तराना, एक त्रिवट किसी ताल में (7) हाथ से ताल देकर सभी बोलों की पढन्त। (8) अभिसारिका तथा प्रोषितपतिका नायिकापर और धीरोदात्त तथा धीरोद्धत नायक पर गत भाव या इनसे संबंधित पद या ठुमरी पर भाव नृत्य। (9) तीनताल से लडी और धमार में चलन की तैयारी। (10) पिछले संत कवियों को छोडकर अन्य किन्हीं दो संत कवियों कविता या भजन पर भाव दिखाना तथा दोनों संत कवियों का परिचय देना। (11) किसी राग में एक विलम्बित ख्याल तथा एक ध्रुपद (केवल बंदिश) गाने का अभ्यास। (दो अलग अलग राग हो सकते है)। (12) पाठ्यक्रम में निर्धारित तालों लेहरे बजाने की क्षमता। (13) ठेकें बजाने का साधारण अभ्यास। (14) आमंत्रित श्रोताओं के सामने मंच प्रदर्शन।

शास्त्र - प्रथम प्रश्नपत्र

(1) भरत के अनुसार नाटय की उत्पत्ति, नाटय का प्रयोग तथा नाटय का प्रयोजन। (2) नवरसों की परिभाषा। (3) नायक के चार भेद-धीरोदात्त, धीरललित, धीरोद्धत, धीरप्रशांत। (4) चार प्रकार की नायिका और उनकी परिभाषा - अभिसारिका, खण्डिका, विप्रलब्धा, प्रोषितपतिका (5) दशावतार में मत्स्य, वराह, कूर्म तथा नरसिंह अवतार की कथा तथा उनकी मुद्राएँ। (6) ताल के दस प्राणों की परिभाषा। (7) मणिपुरी, कथकली और ओडिसी नृत्यशैलियों की बेशभूषा तथा वाद्य क आधार पर जानकारी। (8) तीनताल, झपताल, धमार, गपझंपा (15), पंचमसवारी (15), मं आमद, बेदम तिहाई, फरमाईशी परन तथा चक्करदार परन, तिपल्ली तथा कवित्त को लिपिबद्ध करना। (8) अभिनयदर्पण के अनुसार 'पात्रलक्षण'।

द्वितीय प्रश्नपत्र

(1) रस की निष्पत्ति तथा स्थायी भाव, विभाव, अनुभाव, व्यभिचारी भाव आदि की परिभाषा। (2) निम्नलिखित पारिभाषिक शब्दों की जानकारी-तिपल्ली, कवित्त, फरमाईशी परन, कमाली परन, बेदम तिहाई, त्रिभंग, सुढंग, लाग-डाँट, अनुलोम, प्रतिलोम, भ्रमरी, न्यास-विन्यास। (3) कत्थक नृत्य में प्रयुक्त होने वाले निम्नलिखित गीत प्रकारों की परिभाषा तथा संक्षिप्त जानकारी-अष्टपदी, ध्रुपद, ठुमरो, चतुरंग, त्रिवट, तराना, चैती, कजरी, होरी। (4) कत्थक नृत्य में नबाब वाजिद अली शाह तथा रायगढ के महाराज चक्रधरसिंह का योगदान। (5) गुरुशिष्य परंपरा का महत्व एवम् शिष्य के गुण तथा गुरु के प्रति उसका कर्तव्य। (6) जीवनी और सांगीतिक योगदान - पं. गोपीकृष्ण, कत्थक सम्राज्ञो सितारा देवी, पं. दुर्गालाल, पं. कुन्दनलाल गंगानी, पं. विनायकराव पटवर्धन, पं. ओंकारनाथ ठाकुर, पं. पन्नलाल घोष, उ. अल्लारखा, उ. अली अकबर खाँ, अमीर खुसरो, गोपाल नायक, पं. रामनारायण,पं. रामसहायजी, संत पुरंदर दास, कवि जयदेव। (7) निबन्ध लिखने का अभ्यास (न्यूनतम 400 शब्दों में) (अ) रास तथा कत्थक। (ब) ठुमरी का कत्थक नृत्य से संबंध। (क) संगीत शिक्षा और वैज्ञानिक उपकरण। (ड) संगीत और स्वास्थ्य। (इ) संगीत और मानसशास्त्र। (8) अ.भा. गांधर्व महाविद्यालय मंडल, मुंबई की विस्तृत जानकारी- स्थापना वर्ष, संस्थापक, स्वातंत्र्यपूर्व तथा स्वातंत्र्योत्तर कार्य, कार्य की पं. पलुसकर प्रणित दृष्टि, कार्य का विस्तार, पाठ्यक्रम की विशेषताएँ, मंडल के अन्य उपक्रम आदि मुद्दों के आधार पर।

विशारद द्वितीय - कत्थक नृत्य

पूर्णांक : 500, न्यूनतम : 200, क्रियात्मक : 300, (मौखिक 200 + मंच प्रदर्शन 100),न्यूनतम : 120, शास्त्र (लिखित) 200 (100 + 100), न्यूनतम : 80 (40 + 40)

सूचना :-इस वर्ष की सभी रचनाओं पं. भातखण्डे पद्धति में लिपिबद्ध करना है।

क्रियात्मक

(1) विष्णुवंदना (राग, ताल तथा शब्दों की जानकारी सहित)। (2) मत्ततात (18), रासताल (13) में विशेष तैयारी, कत्थक का वस्तुक्रम तथा लय और लयकारी सहित। (3) पाठ्यक्रम के विभिन्न तालों में तत्कार में बाँट, लडी, चलन का विस्तार आदि का प्रदर्शन। (4) गतभाव के अंतर्गत - कांचन मृगब (सीताहरणतक) तथा गोवर्धनधारण की प्रस्तुति (कथा कहकर अभिनय करना अनिवार्य)। (5) तीनताल, झपताल, रुपक से सादे ठेके पर नाचना। (6) बैठकर ठुमरी या पर की पंक्ति पर अनेकों प्रकार से संचारी भाव का विस्तार करना। (7) त्रिवट, तराना, चतुरंग, अष्टपदी, स्तुति आदि में से किन्हीं दो का प्रदर्शन (राग, ताल तथा काव्यशब्दों की जानकारी। (8) बैठकर नवरसों को केवल चेहरे द्वारा व्यक्त करने की क्षमता। (9) दशावतार सम्बन्धी किसी रचना पर प्रदर्शन रचनाकार, राग, ताल तथा काव्यशब्दों की जानकारी सहित। (10) तीनताल में लय के साथ भ्रुकुटी, ग्रीवा आदि का संचालन। (11) तीनताल का नगमा/लेहरा बजाने या गाने की क्षमता। (12) वासकसज्जा तथा खण्डिता नायिका पर और धीरललित तथा धीरप्रशांत नायक पर पर भाव प्रस्तुति। (13) किसी राग में एक तराना, एक धमार (केवल बंदिश) गाने का अभ्यास। (दो अलग राग हो सकते है)। (14) पाठ्यक्रम में निर्धारित तालों के लेहरे बजाने का अभ्यास। (15) ठेके बजाने की जानकारी। (16) आमंत्रित श्रोताओं के सामने मंच प्रदर्शन।

शास्त्र - प्रथम प्रश्नपत्र - विभाग - 1

(1) जाति को लिपिबद्ध करना। (2) पाठ्यक्रम के सभी ठेकों को कुआडी, बिआडी में लिखना। (3) दिये हुये बोलों के आधार पर बंदिश बनाना और लिपिबद्ध करना। (4) पं. भातखण्डे पद्धति का गुण-दोषात्मक विस्तृत अध्ययन। (5) छोटी सवारी (15), शिखर (17), मत्ततात (18), रासताल (13) में आमद, तिहाई, तोडा, परन आदि को लिपिबद्ध करना। (6) तीनताल, एकताल, चौताल, के ठेके विभिन्न लयकारी में लिपिबद्ध करना। (7) पाठ्यक्रम की विभिन्न रचनाओं को लिपिबद्ध करने की क्षमता।

विभाग- 2

(1) नवरस की संकल्पना का स्पष्टीकरण तथा विस्तृत जानकारी। (2) नायिका भेद की विस्तृत जानकारी - (अ) धर्म भेद से - स्वकीया, परकीया, सामान्या (ब) आयु विचार से - मुग्धा, मध्मा, प्रौढा। (क) प्रकृति के अनुसार - उत्तमा, मध्यमा, अधमा। (ड) जाति भेद से - पद्मिनी, चित्रिणी, शंखिनी, हस्तिनी। (इ) परिस्थिति के अनुसार अष्टनायिकाओं मं - कलहान्तरिता, वासकसज्जा, विरहोत्कंठिता, स्वाधीन पतिका। (3) कत्थक नृत्य के प्रदर्शनात्मक स्वरूप में आधुनिक युग में आये हुए प्रयोगों की संक्षिप्त जानकारी (युगल नर्तन, समूह नर्तन, नृत्यसंरचना, नृत्यनाटिका)। (4) लय और ताल का उद्गम तथा कत्थक नृत्यनाटिका) (5) नाटयशास्त्र तथा अभिनयदर्पण के अनुसार मुद्राओं का तौलनिक अभ्यास। (6) जाति की संकल्पना एवं जाति भेदों की संक्षिप्त जानकारी। (7) जाति की संकल्पना एवं जाति भेदों की संक्षिप्त जानकारी। (7) कत्थक की नृत्यरचनाओं से राग-तालों का संबंध।

द्वितीय प्रश्नपत्र - विभाग - 1

(1) करण, अंगहार, चारी, मंडल इनमें से दो की संक्षिप्त जानकारी। (2) नाटयशास्त्र के अनुसार नृत्त हस्तों की संक्षिप्त जानकारी। (3) नृत्य में लोकधर्मी तथा नाटयधर्मी की परिभाषा तथा प्रयोग का स्वरूप। (4) नाटयशास्त्र के अनुसार वृत्ति तथा प्रवत्ति की परिभाषा तथा प्रयोग। (5) कत्थक नृत्य में कवित्त तथा ठुमरी को स्थान। (6) निम्नलिखित पात्रां की मुद्राएँ (अभिनयदर्पणनुसार) - ब्रह्मा, विष्णु सरस्वती, पार्वती, लक्ष्मी, इन्द्र, यम, वरूण, अग्नि, वायु तथा दशावतार संबंधी (मत्स्य, कूर्म, वराह, नृसिंह, वामन, परशुराम, राम, बलराम, कृष्ण, कल्कि) (7) जीवनी और सांगितिक योगदान - गुरु मोहनराव कल्याणपूरकर, महाराज कृष्णकुमार, पं. बिरजू महाराज, मॅडम मेनका, सुरश्री केसरबाई केरकर, सुश्री गिरिजादेवी, उ. अब्दुल करीम खाँ, पं. भास्करबुबा बखले, उ. रहिमत खाँ, ठाकुर जयदेवसिंह, पं. लालमणी मिश्र, पं. डी. के. दातार, पं. अंबादास आंगले, उ. अहमदजान थिरकावाँ, मुत्थुस्वमी दिक्षितर, केलुचरण महापात्र, मतंगमुनि।

विभाग- 2

(1) प्राचीन नृत्यसम्बन्धी घटनाओं की जानकारी (2) मध्युगीन ग्रंथों की जानकारी। (3) रामायण, महाभारत, भागवत पुराण, गीतगोविंद इनकी संक्षिप्त जानकारी। (4) विदेशों में भारतीय नृत्यकला की लोकप्रियता। (5) आधुनिक काल के नृत्य में विकसित होने वाले नये तकनीकों की संक्षिप्त जानकारी। (6) पौराणिक साहित्य में नृत्य में संदर्भ। (7) निबन्ध लिखने का अभ्यास (न्यूनतम 500 शब्दों में) - (अ) समाज में नृत्यशिक्षा का महत्व। (ब) फिल्म संगीत और नत्य। (क) लय का जीवन में महत्व (ड) संगीत शिक्षा की सामाजिक अनिवार्यता। (इ) संगीत कला का अध्ययन/अध्यापन और व्यावसायिकरण। (8) पं. पलुसकर प्रणित 'गांधर्व महाविद्यालय' शिक्षा प्रणाली का ऐतिहासिक और समाजिक योगदान।

विशारद तृतीय (पूर्ण)- कत्थक नृत्य

पूर्णांक : 500, न्यूनतम : 200, क्रियात्मक : 300, (मौखिक 200 + मंच प्रदर्शन 100),न्यूनतम : 120, शास्त्र (लिखित) 200 (100 + 100), न्यूनतम : 80 (40 + 40)

सूचना :-इस वर्ष की सभी रचनाओ को पं. पलुसकर पद्धति में लिपिबद्ध करना है।

क्रियात्मक

(1) छोटी छोटी कथाओं पर नृत्यनिर्मिति। (2) परीक्षक द्वारा दिये गए प्रसंग/विषय को तुरन्त प्रस्तुत करना। (3) श्रीराम वंदना (श्लोक द्वारा)। (4) शिखर, (17), अष्टमंगल (11), विशेष तैयारी के साथ। (5) पाठ्यक्रम में अब तक निर्धारित सभी तालों की तैयारी। (6) नवरस से संबंधित रचनाओं की नृत्यप्रस्तुति। (न्यूनतम 3 रसों से संबंधित)। (7) दादरा, कजरी, चैती, होरी, झूला इनमें से किन्हीं दो का प्रदर्शन (राग, ताल तथ काव्य शब्दों का परिचय के साथ)। (8) कलहान्तरिता, विरहोत्कंठिता, स्वाधीनपतिका, विप्रलब्धा नायिका पर गतभाव या इनसे संबंधित पद या ठुमरी भाव नृत्य। (9) नाटयशास्त्र में वर्णित करणों में से पाँच करणों की कत्थक के संदर्भ में प्रायोगिक प्रस्तुति की जानकारी - प्रसर्पित, तलपुष्पपुट, जनित, ऊर्ध्वजानु, शकटास्य। (10) किन्ही दो आधुनिक कवियों की काव्य रचना पर नृत्य प्रस्तुति (राग, ताल, तथा शब्द और कवि की जानकारी सहित।) (11) किसी राग में एक ठुमरी और एक दादरा और एक भजन केवल बंदिश गाने का अभ्यास। (12) पाठ्यक्रम के निर्धारित तालों के लेहरे बजाने का अभ्यास। (13) ठेके बजाने का अभ्यास। (14) आमंत्रित श्रोताओं के सामने मंच प्रदर्शन।

शास्त्र - प्रथम प्रश्नपत्र - विभाग - 1

(1) पाठ्यक्रम में निर्धारित सभी तालों की विभिन्न रचनाएँ लिपिबद्ध करना। (2) ठेको को विभिन्न लयकारी में लिखना। (3) तिहाई की संकल्पना का स्पष्टीकरण तथा विभिन्न प्रकार की तिहाईयों को लिपिबद्ध करना। गिनति तिहाई, बेदम तिहाई, चक्रदार तिहाई, फरमाईशी तिहाई इत्यादि। (4) नवरस या नायिका भेद संबंधित किसी कवित्त, छंद को लिपिबद्ध करना। (5) दिए हुए बोलों को आधार पर बंदिश बनाकर लिपिबद्ध करना। (6) पं. पलुसकर पद्धति का गुणदोषात्मक विस्तृत अध्ययन।

विभाग- 2

(1) यतिभेदों संक्षिप्त जानकारी। (2) कथानक, पात्र, वेशभूषा, रंगसज्जा, वाद्यवृदं, ध्वनि-प्रकाश नियोजन के आधार पर नृत्य संरचना से प्रस्तुतिकरण की योजना। (3) कत्थक के निम्नलिखित प्राचीन अंगों की जानकारी उपर, तिरप, सुलप संच, जमन का, पोहोपाजुरी, उरमई, उघटत, धुरन, मुरन। (4) सप्त गतिभेदों की संक्षिप्त जानकारी। (5) कत्थक नृत्य के प्राचीन तथ आधुनिक प्रस्तुतिकरण का तुलनात्मक अध्ययन। (6) सोलह श्रृंगार संबंधित जानकारो।

द्वितीय प्रश्नपत्र - विभाग 1

(1) स्थानक, रेचक, पिंडीबंध, भ्रमरी इनमें से दो की संक्षिप्त जानकारी। (2) ताल शब्द की परिभाषा का स्पष्टीकरण, तालोत्पत्ति कथा तथा ताल और छंद का पारस्परिक संबंध और इनके आधार पर लय, छंद, ताल, ठेका, लयकारी का विवेचनात्मक अध्ययन। (3) नाटयशास्त्र के अनुसार कत्थक नृत्य में 'भाव' की संकल्पना। (4) युगल नर्तन, समूह नर्तन, नृत्य संरचना, नृत्यनाटिका इनका सोदाहरण विवेचनात्मक अध्ययन। (5) कत्थक नृत्य क वस्तुक्रम का समीक्षात्मक अध्ययन। (6) कत्थक और उपशास्त्रीय संगीत। (7) जीवनी और सांगीतिक योगदान - पंडिता रोहिणी भाटे, पंडिता दमयंती जोशी, पंडिता रोशनकुमारी, उ. अमीर खाँ, पं.डी.व्ही.पलुसकर, श्रीमती मोगुबाई कुर्डीकर, उ. बुन्दू खाँ, सुश्री एन्. राजम, पं. कुदऊसिंह, पं. नानासाहेब पानसे, पं. किशन महाराज, राममात्य, व्यंकटमखी।

विभाग- 2

(1) नाटयशास्त्र मं वर्णित रंगमंडप के प्रकारों की जानकारी। (2) नृत्यकर्मी के लिये आहार-विहार तथा व्यायाम का महत्व। (3) ध्वनिसंयोजन, प्रकाशसज्जा, नेपथ्य सायक्लोरामा, स्लाईडस् आदि की विस्तृत जानकारी। (4) नृत्य और संगीत के आधुनिक दृक्-श्राव्य प्रसार-प्रचार माध्यम (1875 से आज तक)। (5) गायन, वादन, चित्रकला, शिल्पकला तथा साहित्य का नृत्य से संबंध। (6) निबंध लिखने की क्षमता (न्यूनतम 500 शब्दों में) (अ) कत्थक नृत्य और समाज। (ब) भारतीय नृत्य की आध्यात्मिक पृष्टभूमि। (क) नृत्य और व्यायाम तथा स्वास्थ्य संकल्पना। (ड) नृत्यकला-समाजप्रबोधन का साधन। (इ) कत्थक प्रस्तुति में वाद्यसंगति। (7) पं. विष्णु दिगम्बर पलुसकर का जीवन और कार्य के बारे में विस्तृत जानकारी। (प्रा.बी.आर.देवधर लिखित पं. पलुसकर चरित्र के आधार पर) तथा इस चरित्र का भाषा, समीक्षा, सामाजिक अध्ययन। (7) समीक्षा की संकल्पना का प्राथमिक अध्ययन और संगीत समीक्षा की संकल्पना का प्राथमिक अध्ययन और संगीत समीक्षा की संक्षिप्त जानकारी। (8) संगीत में सर्वसमावेशकता का परिचय, निम्नलिखित मुद्दों के आधार पर - भाषा, गणित, इतिहास, भूगोल (जिओग्राफी) ओर भिन्न भिन्न शास्त्र (फिजिक्स तथा मानसशास्त्र, समाजशास्त्र, शिक्षणशास्त्र, पर्यावरण, सांस्कृतिकता आदि)।

अलंकारप्रथम - कत्थक नृत्य

पूर्णांक :600, न्यूनतम : 270, क्रियात्मक : 400, (मौखिक 200 + मंच प्रदर्शन 200),न्यूनतम : 180, शास्त्र (लिखित) 200 (100 +100), न्यूनतम : 90 (45 +45)

सूचना :- इस वर्ष की सभी रचनाएँ पं. भातखण्डे पद्धति में लिपिबद्ध करनी है।

क्रियात्मक

सूचना :-कृष्ण वन्दना, शिव वन्दना, या गणेश वन्दना किसी एक पर नृत्य अभिनय। उपरोक्त रचना श्लोक में, तालबद्ध या आलाप में होनी चाहिए। (2) अपनी पंसद के ताल के अतिरिक्त रास, अष्टमंगल, बसंत या लक्ष्मी आदि में विशेष प्रदर्शन। (3) नयी परनों को तुरन्त निर्माण करने की क्षमता। (4) (अ) नायक भेदों के गतभाव या पद पर तथा नायिका भेदों पद अथवा ठुमरी पर भाव प्रस्तुत करना। (ब) एक पंक्ति पर अनेक संचारी भाव बताना। (5) किसी एक रस पर आधारित रचना प्रस्तुत करना। (6) आधुनिक कथा पर गतभाव प्रस्तुत करना या उसे नृत्यनाटिका का रूप देना। (7) एक अष्टपदी तथा एक तराना प्रस्तुत करना। (8) तत्कार में चलन, लडी तथा लयकारी का विस्तार। (9) भिन्न भिन्न जाति पर आधारित तिहाईयाँ जो तीनताल के अतिरिक्त किसी अन्य ताल में हो। (10) दमदार पढन्त का प्रदर्शन। (11) परीक्षक द्वारा दिए गए मुखडे पर तुरन्त तिहाई बनाना। (12) अभिनय द्वारा प्रस्तुत रचना के शब्दार्थ तथा भावार्थ का विवेचन। (13) नाटयशास्त्र में वर्णित कारणों में से किन्हीं पाँच कारणों की कत्थक के संदर्भ में प्रायोगिक - प्रस्तुति - वलितोरु, उरोमंडल, भ्रमरक, वृश्चिकरेचित, अर्धस्वस्तिक। (14) किन्ही रागों में एक बड़ा ख्याल, एक मध्यलय/द्रुत ख्याल तथा एक ध्रुपद (केवल बंदिश) गाने का अभ्यास। (15) पाठ्यक्रम में निर्धारित तालों के लेहरे बजाने का अभ्यास। (16) ठेके बजाने का अभ्यास। (17) आमंत्रित श्रोताओं के सामने मंच प्रदर्शन।

शास्त्र - प्रथम प्रश्नपत्र - विभाग - 1

(1) पाठ्यक्रम में निर्धारति सभी तालों की रचनाओं को लिपिबद्ध करना। (2) किसी चलन या लडी के विस्तार को लिपिबद्ध करना। (3) भिन्न भिन्न जाति पर आधारित तिहाईयों को तीनताल के अतिरिक्त अन्य तालों में लिपिबद्ध करना। (4) दिए गए मुखडे या बोल समूह क आधार पर तिहाई बनाकर लिपिबद्ध करना। (5) दिए गए बोलसमूह के आधार पर बंदिश की रचना करके लिपिबद्ध करना। (6) झपताल के ठेके को आधी (1/2), पौन (3/4), कुआड (1.1/4), आड (1.1/2) लय में लिपिबद्ध करना। (7) रासताल (13), लक्ष्मी (18), वसंत (9), अष्टमंगल (22) के ठेके की दुगुन, चौगुन तथा इनमें ठाठ, आमद, तिहाई, तोडे, परन, चक्करदार, परन, कवित्त आदि को लिपिबद्ध करन।

विभाग- 2

(1) कत्थक नृत्य से संबंधित भ्रमरी एवं चारिओं का विस्तृत अध्ययन। (2) किसी भी एक कत्थक कलाकार की नृत्य प्रस्तुति की समीक्षा (समालाचना)। (3) नाटयशास्त्र के अनुसार रेचक भेदों का विस्तृत अध्ययनर। (4) कत्थक नृत्य प्रस्तुति पर आधुनिक तकनीक का प्रभाव। (5) कत्थक नृत्य के विभिन्न घरानों क्रियात्मक रचनागत वैशिष्टयों की जानकारी। (6) कत्थक नृत्य में साथ संगत का महत्व, संगतकारों की भूमिका इत्यादि इनका सोदाहरण विवेचन।

द्वितीय प्रश्नपत्र - विभाग - 1

(1) नृत्य शब्द की मूल, धातु, उत्पत्ति एवं विकास। (2) कत्थक नृत्य शैली के सौंदर्यशास्त्रीय सिद्धान्त (अ) लय-ताल, (ब) स्वर-राग, (क) काव्यशब्द, (ड) लालित्य, (इ) सौष्ठव का भाव, (फ) आकृतिबंध। (3) विभिन्न नृत्शैलियों में प्रयुक्त तत, सुषिर, अवनद्ध तथा घन वाद्यों की जानकारी और उपयोगिता के बारे में सोदाहरण विवेचन। (4) कत्थक नृत्यशैली के प्रस्तुतिकरण के अंतर्गत मूलभूत सांगीतिक विचार। (5) कत्थक नृत्य के अभिनयविधान की विशेषताएँ। (6) कत्थक नृत्य और साहित्य। (7) भारतीय काव्यशस्त्र की संक्षिप्त जानकारी, काव्यशास्त्रकार और उनके सिद्धान्त के आधार पर - (भरत, अभिनवगुप्त, रुद्रट, उद्भट, मम्मट, आनंदवर्धन, विश्वनाथ, जगन्नाथ, राजशेखर, दंडी, वामन, हेमचन्द्र आदि) (8) जीवनी और सांगीतिक योगदान - पं. तीरथराम आजाद, डॉ. पुरु दधीच, सश्री माया राव, सुश्री कुमुदिनी लाखिया, पं. कुमारगंधर्व, पं. श्री.ना.रातंजनकर, पं. सवाईगंधर्व, बालगंधर्व, पं. रविशंकर, उ. बिस्मिल्लाह खाँ, पं.व्ही. जी. जोग, पं. कंठे महाराज, पं. चतुरलाल, त्यागराज।

विभाग- 2

(1) वैदिक साहित्य में नृत्य के संदर्भ। (2) पुरातत्व में नत्य के संदर्भ। (3) कत्थक नृत्य की धार्मिक पृष्ठभूमि का क्रमिक अध्ययन। (4) नौंटकी, तमाश (लावणी नृत्य), नृत्यनाटिका, बैले तथा रासमंडली की जानकारी। (5) पौराणिक साहित्य में नृत्य - संदर्भ के बारें में विवेचन। (6) कत्थक नृत्य के क्षेत्र में आधुनिक काल में आये हुये परिवर्तन का विस्तृत अध्ययन। (7) संगीत समीक्षा लेखन के मूलतत्वों का विस्तृत अध्ययन। संगीत समीक्षा ऐतिहासिक तथा आधुनिक काल और प्रसार-प्रचार माध्यम में संगीत समीक्षा। (8) शोध निबंध तथा प्रबंध के लिए संशोधन पद्धति तथा लेखन पद्धति (9) निबंध लेखन (न्यूनतम 500 शब्दों में) - (अ) कत्थक और नवरस। (ब) कत्थक और नायिका भेद। (क) कत्थक नृत्य में कृष्णचरित्र का महत्व। (ड) भारतीय और पाश्चात्य नृत्यकला। (इ) शास्त्रीय नृत्य और लोकनृत्य।

अलंकार पूर्ण-कत्थक नृत्य

पूर्णांक :600, न्यूनतम : 270, क्रियात्मक : 400, (मौखिक 200 + मंच प्रदर्शन 200),न्यूनतम : 180, शास्त्र (लिखित) 200 (100 +100), न्यूनतम : 90 (45 +45)

सूचना :- इस वर्ष की सभी रचनाएँ पं. पलुसकर पद्धति में लिपिबद्ध करनी है।

क्रियात्मक

सूचना :- गणेशस्तुति, दुर्गास्तुति तथा रामसतुति या किसी अन्य देवता की वंदना/स्तुति। (2) अपनी पसंद की ताल के अतिरिक्त गणेश, रुद्र, अर्जुन या अष्टमंगल इनमें से किसी एकताल में विशेष प्रदर्शन। (3) ध्रुपद या अष्टपदी में से किसी एक पर भावनृत्य। (4) गतभाव में प्राविण्य - द्रौपदी चीरहरण, रामायण से जटायु मोक्ष या किसी अन्य प्रसिद्ध प्रसंग पर परीक्षकों की अनुमति से गतभाव प्रस्तुत करना। (5) किसी प्रसिद्ध ठुमरी के अतिरिक्त परीक्षक द्वारा गाई जाने वाली ठुमरी का भी भाव दर्शन। (6) रसों पर आधारित गतभाव या पद पर भाव। (7) नायिका भेद पर विशेष अधिकार। (8) अपनी कोई स्वतंत्र रचना। (9) सभी तालों में पढन्त - हाथ से ताल देकर तथा ताल (ठेका) वादन के साथ। (10) स्वयं गा कर कोई रचना प्रस्तुत करना। (11) किन्ही रागों में एक तराना, एक धमार तथा एक ठुमरी-दादरा या कजरी/चैती (केवल बंदिश) गाने का अभ्यास। (12) पाठ्यक्रम में निर्धारित तालों के लेहरे बजाने का अभ्यास। (13) ठेके बजाने का अभ्यास। (14) आमंत्रित श्रोताओं के सामने मंच प्रदर्शन।

शास्त्र - प्रथम प्रश्नपत्र - विभाग - 1

(1) पाठ्यक्रम में निर्धारित तालों की सभी रचनाएँ लिपिबद्ध करना। (2) किसी भी ताल में आमद, कमाली चक्करदार परन, फरमाईशी परन, तिहाई (जो दो आवृत्ति से कम न हों), तिस्त्र जाति व मिश्र जाति परन या चक्करदार परन तथा कवित्त आदि को लिपिबद्ध करना। (3) तीनताल, झपताल, रूपक, धमार, रास तथा शिखर, ताल निम्नलिखित लयकारियों में लिखना - पौन (3/4), आड (1.1/2) बिआड (1.3/4), तथा पाँच में चार और चार में पाँच। (4) निम्नलिखित तालों में आमद, तिहाई (दो आवृत्ति), तोडे परन, चक्करदार परन, फरमाईशी परन, कवित्त आदि लिपिबद्ध करना - गणेश ताल (21 मात्रा), रुद्रताल (11 मात्रा), अर्जुनताल (24 मात्रा)। (5) दिए हुए शब्दसमूह समूह क आधार पर बंदिश बनाकर लिपिबद्ध करना।

विभाग- 2

(1) आधुनिक रंगप्रस्तुति का तकनीकी ज्ञान, जैसे कि, रचना -आलेख संगीत संयोजन-नृत्यनिर्देशन-वेशभूषा-रंगभूषा-नेपथ्य तथा प्रकाशसज्जा आदि। (2) नाटयशास्त्र निम्नलिखित की व्याख्या - 6 अधर भेद 5 वक्षस्थल के प्रकार, 5 कमर के प्रकार, पाँव के कार्य 5। (3) भाव तथा रस का संबंध और भाच, विभाव, अनुभाव, तथा सात्विक भाव का नृत्य में प्रयोग। (4) संत सूरदास की किन्ही दो काव्यरचनाओं के अधार पर नृत्य के संदर्भ का विवेचन। (5) कत्थक नृत्य के तीन घरानों (लखनऊ, बनारस, जयपुर) का समालोचनात्म्क अध्ययन। (6) कत्थक नृत्य मे पढन्त की विशेषता का विस्तृत अध्ययन। (7) करण शब्द की व्याख्या करते हुये किन्हीं दो कारणों की संरचना का विवरण।

द्वितीय प्रश्नपत्र - विभाग - 1

(1) नाटयशास्त्र का उद्गम एवं पृथ्वी पर अवतरण। (2) निम्नलिखित शब्दों की विस्तारपूर्वक परिभाषा-स्तुति, आमद, सलामी, स्त्री ठाठ, करण, चाल, कसक-मसक, हाव-भाव, तत्कार में रेला, पलटा, बाँट, लडी-चलन, परमेलु, फरमाईशी चक्करदार, ठुमरी, त्रिवट, चतुरंग अष्टदीप। (3) अभिनयदर्पण के अनुसार नृत्यविधि। (4) हस्तकरणों का नाटयशास्त्र के अनुसार विवेचन। (5) संगीतरत्नाकर के नृत्ताध्याय की विवेचनात्मक जानकारी। (6) भरतभाष्य की विवेचनात्मक जानकारी। (7) जीवनी और सांगीतिक योगदान - बडे रामदास जी, पं. भिमसेन जोशी, उ. बडे गुलाम अली खाँ, रसूलनबाई, श्रीमती हिराबाई बडोदकर, गोविंदराव टेंबे, पं. जगन्नाथबुवा पुरोहित, पं शंकरराव व्यास, उ. अल्लाउद्दीन खाँ, पं. गजाननबुवा जोशी, एम.एस, सुब्बलक्ष्मी, प्रो.बी.आर.देवधर, पं. अनोखेलाल मिश्र।

विभाग- 2

(1) मंदिरों में नृत्य की प्राचीन परम्परा का इतिहास। (2) नट, नर्तक, तौर्यत्रिकम् इन शब्दों की जानकारी तथा निम्नलिखित नटजातियों का परिचय - शिलालिन, शैलूक, कृशाश्विन, चारण, मागध, भरत, कुशीलव। (3) ठुमरी शब्द का स्वरूप, उत्पत्ति तथा विकास। (4) नाटयशास्त्र के व्याख्याकारों का विवेचनात्मक अध्ययन। (5) लोकनृत्य में प्रमुक्त ताल वाद्यों की जानकारी। (6) कत्थक नृत्य और गायन-वादन का आंतरविद्याशाखीय संबंध। (7) शोध निबन्ध तथा प्रबंध के लिए संशोधन पद्धति तथा लेखन पद्धति। (8) समीक्षा लेखन की भाषा शैली तथा संगीत समीक्षा के विविध रूप - ग्रंथ लेखन, प्रासंगिक लेखन, महफिल का वृत्तांत, कलाकार की मुलाकात, क्षेत्रीय नयी/पुरानी जानकारी, वृत्तपत्र/मासिक में लेख आदि। आधुनिक काल में आकाशवाणी और दूरदर्शन पर होने वाली संगीत समीक्षा। (9) **निबन्ध लिखना (न्यूनतम 500 शब्दों में)** - (अ) लय, ताल और लयकारी की कत्थक नृत्य में विशेषता। (ब) कत्थक नृत्य की वेशभूषा के विभिन्न रूप (क) कत्थक और अन्य नृत्यशैलियाँ। (ड) कत्थक नृत्य पर मुस्लिम सभ्यता का प्रभाव। (ई) कत्थक नृत्य में घुँघरु का महत्व।

ODDISSI DANCE

ODISSI DANCE SANGEET PARICHAYA

(January to December / June to May)

(Total 40 Classes in a year)

Note : There will be no examination for this year. There will be only Annual valuation of the student about the completion of prescribed syllabus by the teacher.

THEORY :1 – Introduction of Dance (a) Meaning of Dance (in two sentences) (b) Aims and objects of Dance (in short) (c) Name of the good who create the dance. 2- Preliminary knowledge on Odissi Dance. (a) which place it belongsto (b) Nature of dance, whether it belongs to classical or folk style. 3 – Name of your Guru. 4 – identification of five fingers with different exercises. 5 - Name of six Angas according to abhinaya Darpana with different exercises.

PRACTICAL :

1. Bhumi Pranam (not according to rythem.) 2 Demonstration of simple exercises (10 Nos.) 3 - Demonstration of step in some pada (5 Nos.) 4 – Identification of Chauka and Tribhanga. 5 – Practice of tali (clapping) to recognize speed. 6 – Animal movement like : Peacock (Mayur), Deer (Harina), Snake (Sapa), Elephant (Hati)] Birds (Pakshi), Frog (Benga)

ODISSI DANCE SANGEET PRARAMBHIK

Note : There will be no examination for this year. There will be only Annual valuation of the student about the completion of prescribed syllabus by the teacher.

PRACTICAL :

1. **Elementary Steps :** (a) Demonstration of 10 steps each in chauk tribhang set to Ek Taali in three speeds (Ekgun, dugun and chaugun) (b) Recitation with hands of the sthayi ukuta to which the steps are composed. **2 Padabheda :** Demonstration and ability to identify the basic foot positions : Sama, Khanu and Maha. 3. Demonstration of "Sama bhanga", "Abhanga", "Tribhanga", "Atibhanga", "Chauka"

THEORY (ORAL)

1. Basic introduction to the main classical dance styles : Odissi, Bharatanatyam, Kathak, Manipuri, Kathakali, Mohiniattam, Kuchipudi and sattriya with reference to its place of origin 2. Ability to define • Matra • Laya • Tala 3. Ability to demonstrate the asamyukta hastas (single hand gestures) from the Abhinaya Darpana (not including viniyogas).

ODISSI DANCE PRAVESHIKA PRATHAM

Total Marks : 75, Minimum: 26, Practical : 60, Theory (Oral) : 15

PRACTICAL

1. **Knowledge of Odissi tala and Arasa in each talas :** Ektali (4matras), Rupak (6 matras), Triputa (7matras), Jhampa (10 matras) 2. **Arases in Odissi talas : Ektali 4 matras and Rupak tala (6 matras)** (a) Demonstration (b) Recitation (c) Recitation with hands of the above talas of the dharanas (sthayi ukutas) (d) Recitation with hands of each of the ukutas (bols) of the Arasas learnt. 3. **Mangalacharan : (two Mangalacharan of two deities)** (a) demonstration of the item (b) Recitation with hands of the ukutas othe item (c) Naming the rage and tala the item composed to (d) Idenfification of the hastas used (e) Identification and demonstration of the various components of the item. : (i) Mancha Pravesha with Pushpanjali, (ii) Bhumi Pranam (iii) Ishta Deve Vandana, (iv) Sabha Pranam (f) Explanation/meaning of the sloka in the Ishta Deve Vandanaa 4. Bhangis : (a) Definition of the term 'Bhangi' (b) Demonstration and identification of the following Bhangis : Alasa, Darpana, Abhimaana, Nibedana, Mardal, Parswa Mardal, Nikunchita.

THEORY

1. **Oriya Saying :** Uthaa Baithaa Thiyaa Chaali, Budaa Bhasaa Bhaunri Paali, Odissi nata re atha Beli (a) Meaning of the saying (b) Definition of the term 'Beli' (c) Identification of each of the eight belis (Uthaa, Baithaa, Thiyaa, Chaali, Budaa, Bhasaa, Bhaunri, Paali) with practical examples for each. 2. Hastas Abiility to demonstrate and idenfity the samyukta hastas from the Abhinaya Darpan (not including viniyogas) 3. Shirobheda, Drishtibheda and Grivabhedas from Abhinaya Darpana : Demonstration in sequential order and ability to identify each (not including viniyogas) 4. Definitions : (a) Taandava and laasya (b) Nrita, Nritya and Naatya(c) Definition of Khandi and Arasa 5. Myths related to Lord Ganesh (a) Why the elephant head (b) Why Ekdanta 6. Knowledge of different components of Odissi Dance (Mangalacharan, Sthai / Batu, Pallavi, Abhinaya, Moksha) 7. Name of three main Gurus namely : (a) Guru Pankaj Charan Das, (b) Guru Keluchara Manapatra, (c) Guru Deva Pasad Das. (Revision of earlier course is compulsory and can be examined)

ODISSI DANCE PRAVESHIKA PURNA

2. Total Marks : 125, Minimum: 44, Practical : 75, Theory (Oral) : 50

PRACTICAL

1. Batu /Sthai : (a) Demonstration of the item (b) identification of the hastas, Paadabhedas and Bhangis used (c) Recitation with hands of the ukutas of the item (d) Identification of the raga and tala the item composed to 2. **Pallavi :** (a) Pallavi in any of the tala learnt. (b) Demonstration of the item (c) knowing the name of the raga and tala the item is composed to (d) Recitation with hands of the bols of the item (e) Identification of the hastas and Bhangis used 3. **Simple Abhinaya on any Odiya song :** (a) Demonstration of the item (b) Name of the author (c) Naming of the raga and tala of the item (d) Meaning of the verses used (e) Identification of the hastas used (f) Recitation of the ukutas and verses of the item verbally and by hand 4. Demonstration and Identification of the following Bhangis : Aratrikaa, Kshiptaa, Kunjarbaktraa, Chaturmukhaa, Sharakshepa, Shrutikulaa, Shukachanchu, Biraaja, Potalaa and Shivakaraa

THEORY (ORAL)

1. Elementary introduction to the texts : Abhinaya Darpana, Abhinaya Chandrika and Natya Shastra : (a) Identification of author and (approximate) date (b) Basic overview of the broad areas covered in the contents of each text (c) Myths regarding the origins of dance according to each text. 2. Elementary knowledge of the main classical dance styles – Odissi, Bharatanatyam, Kathka, Manipuri, Kathakali, Mohiniattam, Kuchipudi and sattriya with special reference to : (a) Place of origin (b) Aharya (c) Music and Musical instruments (d) Stylistic features, teachique and repertoire 3. Definition of the terms : Matra • Laya • Tala • Avartana / Avarta • Taali • Khaali • Sam • Vibhaga 4. Recitation of the Sthayi Ukutas (Dharanas), of Batu/Sthai 5.Knowledge of Jhampa (10 matras) and Triputa (7 matras) with Jati matra and Bhaga.

ODISSI DANCE MADHYAMA PRATHAM

Total Marks : 200, Minimum: 70, Practical : 125, Minimum 44, Theory (Written) : 75, Minimum : 26

PRACTICAL

1. Additional Pallavi in taal other than learnt earlier : (a) Demonstration of the item (b) Identification of the hanstas and bhangis used (c) Recitation with hands of the ukutas of the item (d) Name of the raga, tala, composer and choreographer of the item.

2. Ashtapadi any one form the Sri Gita Govinda (Lalita Lavangalata or Chandan Charchita or Shrita Kamalakucha) : (a) Demonstration of the item (c) Menaing of the verses used in the item (d) Explanation of the bhavas used (e) Identification of the hastas used (f) Recitation of the ukutas and verses of the item verbally and by hand 3. Abhinaya to an Odissi classical song of Banamali or Gopalkrishna : (a) Demonstration of the item (b) Basic Knowledge regarding the item (poet, rage, tala) (c) Meaning of the verses used (d) Explanation of bhavas used in the rendition of the item demonstrated (e) Identification of the hastas used (f) Recitation of the ukutas and verses of the item verbally and by hand 4. Hastas (a) Demonstration and ability to identify the hastas used in Odissi from the Abhinaya Chandrika and the Oral tradition, (b) Demonstration of the viniyogas with shlokas of the asamyukta hastas form t he Abhinaya Darpana up to Shikhara Hasta 5. Knowledge of other Odissi talas : Ektali (4 matras), Khemta (6 matras, Rupaka (6 matras), Jhampa (10 matras), Recitation with hands of each of the sthayi ukutas (dharanas) of the talas mentioned above. 6. Introduction of swaras in Odissi Music through the following Ragas. (a) Sankarabharan, (b) 7. Demonstration and identification of the following bhangis : Gopanaa, Nandyavartaa, Tarangaa, padavalayaa, Meshayuddha, Pranataa, Archakaa.

THEORY

1.Notation of the Pallavi learnt, 2. Lives and writings of Oriya poets : (a) Aladeva Rath (b) Banamaali (c) Gopala Krishna 3. Detailed knowledge of Odissi dance : (a) A brief history of the tradition and development of the style (b) Basic stylistic features and technique (c) Repertoire (d) Musical Instruments (e) Ahaarya (costume and jewellery) 4. Definition of the terms relating to tala : (a) Sthayi Ukuta (Dharana) (b) Bani(c) Ukuta (d) Khandi (e) Gadi (f) Maana (g) Jhula (h) Pohapata (i) Padi 5. Abhinaya (a) Definition of the term (b) Definition of the fouraspects : angika, vachika, aharya and sattvik 6. Definition and explanation of Bhava and Rasa. 7. Talas : Tala lipi of : Rupaka (6matras), Khemta (6 matras), Astatala (8 matras), Jhampa (10 matras), Jatitala (14 matras), Adtali (14 matras), Aditala (16 matras) • Number of matras • Vibhaga structure • Notation symbols (X, 0, 2, 3) (Revision of earlier course is compulsory and can be examined)

ODISSI DANCE MADHYAMA PURNA

Total Marks : 200, Minimum: 70, Practical : 125, Minimum 44, Theory (Written) : 75, Minimum : 26

PRACTICAL

1. **One additional Pallavi other than the two done earlier :** (a) Demonstration of the item (b) Identification of the hastas and bhangis used (c) Recitation with hands of the ukutas of the item (d) Identification of the raga, tala, composer and choreographer
2. **Gitabhinaya with sthayi and Sanchaari bhaavas :** (a) an ashtapadi from the Gita Govinda portraying a Naayika (b) Dashavatra (c) A Champu in terms of • Demonstration of the item • Meaning of the verses used • Explanation of the bhavas used in the rendition of the item demonstrated •Identification of the hastas used • Recitation of the ukutas and verses of the item verbally and by hand • Identification of the raga, tala and poet • Type of the nayika portrayed 3. Moksha (a) Demonstration of the item (b) Identification of the hastas and bhangis used (c) Identification of the raga and tala (d) Recitation with hands of the ukutas of the item. 4. Hastas (a) Demonstration of the viniyogas and their shlokas of the rest of the asamyukta hastas from the Abhinaya Darpana (from kapittha Hasta onwards) (b) Comparison of hastas from the Abhinaya Darpana and the Abhinaya Chandrika **5. Rendering of the swaralankaras of the five ragas prescribed.**

THEORY 1. The contemporary history of odissi dance : (a) The revival phase (from mid – 20 Century to the present day) (b) Life history and contributions : Guru Pankajcharan Das, Guru Kelucharan Mohapatra and Guru Deb Prasad Das 2. The Mahari and Gotipua traditions 3. Notation of Dasahvatar, Moksha and Pallavi demonstrated in the practical course. 4. Tala lipi / Notation in dugun, tigun and chaugun of the sthayi ukuta (dharanas) of the Odissi talas along with its Jati, Anga and Bibhaga : Khemta (6 matras) Jati (14 matras) Adi (16 matras), Adatali (14 matras = 4:3:4:3) 5. Elementary knowledge of the three styles of chhau : Mayurbhanj, Seraikella and Purulia 6. Myths relating to each of the Dashavataras 7. The concept of Nayika with reference to (a) Dharmabheda, (b) Age, (c) Character / Termperament, (d) Awasthabheda. (Revision of earlier course is compulsory and can be examined)

ODISSI DANCE VISHARAD PRATHAM

Total Marks :500, Minimum: 200, Practical : 300, (Oral : 200 + Manch Pradarshan : 100) : Minimum : 120, Theory (Written) : 200 (100 + 100), Minimum : 80 (40 + 40)

PRACTICAL : VIVA (50 minutes)

1. Bhavabhinaya of two different Nayika : (a) Demonstration of the item (b) Naming of the raga and tala of the item (c) Vocal rendition of the song with tala shown by hand (d) Explanation / Meaning of the verses used (e) Analysis of the bhavas used (g) Positioning of the rendered ashtapadis in the Sri Gita Govinda (h) Identification of the hastas used. 2. An additional Champu : (a) Demonstration of the item (b) Basic information regarding the champu poetic form (c) Basic information regarding the item (poet, raga and tala) (d) Vocal rendition of the song with tala shown by hand (e) Expalnation /Meaning of the verses used (f) Analysis of the bhavas used (g) Identification of the hastas used 3. One Pallavi in any tala other than the three learned earlier : (a) Demonstration of the item (b) Naming the raga and tala of the item (c) Recitation of the bols with the tala shown by hand (d) Identification of the hastas and bhangis used 4. Padabhedas, Mandalabhedas, Sthankabhedas, Utplavanabhedas, Bhramarilakshana and Charibhedas from Abhinaya Darpana (5) Rendition of an Odissi song based on one of the five prescribed ragas.

PRACTICAL : DEMOSTRATION –Manch Pradarshan Before an invited audience

THEORY PAPER – 1

1. Detail description of ashtanayika according to avasthabheda : (a) Swadheenpatika (b) Vasakasajjika (c) Virahotkanthita (d) Abhisarika (e) Vipralabdha (f) Khandita (g) Kalahantarita (h) Proshitapatika 2. Definition and explanation of the terms : (a) Lokadharmi and Natyadhami, (b) Desi and Margi (c) The four vrittis : Bharati, Satvati, Arabhati and Kaishiki (d) Karana, Matrika and Angahar 3. The Jagannath cult and Odissi dance : (a) The myth related to the creation of the image of the deity (b) Rituals of the Maharis in the Jagannath Temple 4. Kirshna legends related to the Odissi repertoire : (a) Raas (b) Gopi Vastraharana c) Kaaliadaman (d) Govardhan Leela (e) Draupadi vastra daan 5. Life history and wirting of Kavi Sri Jayadev and Upendra Bhanja.

THEORY PAPER II

1. **Dashaprana :** definition and explanation of the ten pranas of tala **2. Notation :** The Pallavi in any tala other than three learnt earlier. **3. Odissi Mardala** (a) Legend, (b) History, (c) Making of Mardala, (d) Examples of Bani along with its drawing. **4. Allied art forms of Orissa :** Pala, Raas Lila, Shabda Nritya and Prahlad Nataka **5. Geetam, Badyam, Nrityam in Odissi Music**. 6. Detailed study of A.B.G.M.V. Mandal, Mumbai on following points – Foundation years, founder members, working pre-independence and pro-independence. Aspect of the work by Pt. Paluskar, expansion of work, specialty of the syllabus, other

2. activities of Mandal. **7. Essay writing :** (a) Artist and society, (b) Music as a Life mission, (c) Dance and Indian culture, (d) Importance of an Art in a society, (e) Music and Physiology (Revision of the earlier course is compulsory and can be examined)

A.D. : Abhinaya Darpanam **N.S**. : Natya Shastra

ODISSI DANCE VISHARAD DWITNA

Total Marks : 500, Minimum: 200, Practical : 300, (Oral : 200 + Manch Pradarshan : 100) : Minimum : 120, Theory (Written) : 200 (100 + 100), Minimum : 80 (40 + 40)

PRACTICAL : VIVA (60 minutes)

1. **Bhavabhinaya of two Nayakas :** (a) Demonstration of the item (b) Identification of the raga and tala the item is composed to (c) volcal rendition of the song with tala shown by hand (d) Explanation / Meaning of the verses used (e) Analysis of the verses in terms of the philosophic allegorical themes in the poem (f) Analysis of the bhavas used in the rendition of the item (g) Positioning of the rendered ashtapadis in the Sri Gita Govinda (h) Identification of the hastas used. 2. Abhinaya of a Janana.Bhajana :(a) Demonstration of the item (b) Basic information regarding the the term janana/Bhajan (c) Basic information regarding the item (poet, raga and tala) (d) Vocal rendition of the song with tala shown by hand (e) Expalnation /Meaning of the verses used (f) Analysis of the bhavas used in the rendition of the item (g) Identification of the hastas used 3. One Pallavi in the tala other than the four learned earlier : 4. Composition and execution of : (a) Short nritta sequences **and ukutas in different talas (b) short abhinaya sequences to given verses of thems/ideas (c) ability to play the manjira while reciting the ukutas 5. Padabhedas according to Abhinaya Chandrika and "Path Finder" (Part – 1 / published by Odissi Research Centre)**

PRACTICAL DEMONSTRATION – Manch Pradarshan Before an intived Audience.

THEORY PAPER – I

1. **Rasa : Detailed Study of the nine rasas 2. Detailed study of Bhava (a) Sthayi and Vyabhichari/Sanchari Bhavas (b) Vibhava (Alamban and Uddipan) and Anubhava 3. Nayak Bhedas : (a) Types of Nayak according to : The four bhedas of the shringara rasa : anukoola, dakshina, dhrishta and shatha b) Character types : dheera – lalit, dheera-prashaant, dheerodaatt and dheerodhat 4. Concept of Nabadha Bhakti 5. Brief study of Bharatiya Tala Siddhant.**

THEORY PAPER II

1. **Detailed Study of Sri Gita Govinda : (a) Structure of the poem : cantos and ashtapadis (b) Shrot notes on plot development and thematic content (c) Conceptualisation of the three main characters : Krishna, Radha and Sakhi (d) Analysis of the Verses in terms of the philosophic-allegorical theme 2. Shiva myths related to dance : (a) Saptatandava (b) The analysis of the symbolism of the iconography of the Nataraja image (c) Urdhva tandava (d) Gangavatarana (e) Nilakantha (f) Madana dahan (g) Ardhanarishvara 3. Folk culture of Odisha 4. Comparative studies of the main classical dance styles in terms of : (a) Repertoire (b) Nritta technique (c) Nritya content (d) Music (e) Costume 5. Historical and social contribution of "Gandharva Mahavidyalaya" teaching discipline according to Pt. V.D. Paluskar. 6. Essay writing : (a) Music and Soceity (b) Sangeet and Swasthya (Music and Health) (c) Music and Electronic Media (d) Guna – Dosha of a Dancer (e) Importance of Guru – Shishya Parampara in Music. (Revision of the earlier course is compulsory and can be examined)**

A.D. : Abhinaya Darpanam **N.S**. : Natya Shastra

ODISSI DANCE VISHARAD PRATHAM

VISHARAD TRITIYA (PURNA)

Total Marks : 500, Minimum: 200, Practical : 300, (Oral : 200 + Manch Pradarshan : 100) : Minimum : 120, Theory (Written) : 200 (100 + 100), Minimum : 80 (40 + 40)

PRACTICAL :

Demonstration and explanation of the four Nayak and eight Nayika awastha through short abhinaya sequences. 2 – Abhinaya depicting Vatsalya rasa and Bhakti Rasa (a) Poet, Rasa and tala. (b) Meaning of words / lyrics. (c) Analysis of the Bhava used (d) Identification of the hasta used. (e) Vocal rendition of the song with tala shown by hand. 3. Abhinaya based on Kavi Samart Upndra Bhanjs Poem (a) Poet, Rasa and tala. (b) Meaning of words/lyrics (c) Analysis of the Bhava used (d) Identification of the hasta used. (e) Vocal rendition of the song with tala shown bh hand . 4. Presentation of two folk dances of Odisha. 5. Identification with slokas of :- (a) Dasavatara Hasta (b) Deva Hasta. (c) Navagraha Hasta (d) Bandhava Hasta (e) Jati Hasta according to "Abhinaya Darpana".) 6. Manch Pradarshan – Before an invited audience.

THEORY : Paper – I

1. Detailed Study of Abhinaya Chandrika 2 – Reference to Odissi Dance in various Odiya treatises : Abhinaya Darpan Prakash, Sangeet Kalpaltika, Natya Manorama, Sangeet Narayan and Sangeet Muktavali. 3 – Understanding Saptatala system. – Dhruba, Matha, Rupak, Jhampa, Triputa, Atta, Ektali 4 – Conversion of tala from one jati to another Jati. 5. Role of Batsalya and Bhakti rasa in Odissi Dance.

Paper – II

1. Study of Kishora Chandrananda Champu. 2 – Define – Chhanda, Janana, Bhajana, Chaustisa and Kalasa.3 Life and contribution of Kavichandra Dr. Kalicharan Pattanayak to Odissi Dance. 4 – Knowledge of Dance drama styles. (a) Kudiyattam (b) Bhagabata Mela Natakam (c) Yakshyagan 5 – Essay – (a) Necessacity of dance in human life (b) Spiritualism in Indian Dance. Propagation of Odissi Dance (d) Guru Sishya tradition in past and present, (e) Sant Poets and Music. (6) Pt.Paluskar's Pt. Paluskar's biography written by prof. B.R. Devdhar (its language , criticism and social learning) 7. An introduction universality in Music on following

2. points – Language, Mathematics, History, Geography and Different Science (Physic and Psychology, Sociology, environment, education, culturalism etc. (8) Brief Introduction of sum concepts useful for musical criticism.

Note : Revision of earlier year's syallbus is compulsory and can be examined.

A.D. : Abhinaya Darpanam **N.S**. : Natya Shastra

(ODISSI DANCE) ALANKAR PRATHAM

Total Marks : 600, Minimum: 270, Practical : 400, (Oral : 200 + Manch Pradarshan : 200) : Minimum : 180, Theory (Written) : 200 (100 + 100), Minimum : 90 (45 + 45)

PRACTICAL : VIVA (90 minutes)

1. Ability to compose a Pallavi highlighting its structural elements 2. Ability to Choreograph and "Abhinaya" with "Sanchari" 3. Analysis and indepth abhinaya of any two ashtapadis, in relation to the metaphysical allegory of the Krishna legend 4. Comparison and application of the Kishore Chandranan Champu and the Gita Govinda 5. Abhinaya of two chhandas 6. Shabda Svara Patha and its application in Odissi performance.

PRACTICAL : DEMONSTRATION Manch Pradarshan – Before an invited audience.

THEORY PAPER I

1. **A Study of ranga-manch** (a) As outlined in the Natyashastra (b) From the viewpoint of a classical dance performance on the modern stage in terms of décor, lighting, acoustic etc. 2. **Detailed study of Abhinavagupta's Abhinava Bharati** (a tika on the Natyashastra) with reference to the sixth chapter (Rasadhyaya) 3. **Appraisal of the works of Biswanath Kavirajs"Sahitya Darpana" and study of third Chapter** (a) Analysis of the relevance of these works to the main classical dance styles at a pan-Indian level (b) Analysis of the relevance of these works to the technique of Odissi dance 4. Detailed study of the seventh chapter of Sharangdev's "Sangeet Ratnakar" – (a) Analysis of the relevance of these works to the main classical dance styles at a pan-Indian level (b) Analysis of the relevance of these works to the technique of Odissi dance 5. Brief study of Indian politics based on various authors of poeits and their theory – Bharata, Abhinavgupta, Rudrata, Mammata, Anandvardhana, Vishwanatha, Jagannatha, Rajshekhara, Dadi, Waman, Hemchandra etc.

THEROY PAPER II

1. An in-depth study of the Gita Govinda and Kishore Chandrananda Champu : Genre Plot (structure and development) Structure (literary structure and metric structure) Language (imagery, simile, metaphor, rhyme, alliteration, wordplay etc.) Elementary knowledge of the ragas mentioned 2. A study of the stylistic features, technique and repertoire of Guru Kelucharan Mohapatrra, Guru Pankajcharan Das and Guru Deb Prasad Das 3. The iconography and symbolism behind the gods and goddesses : Brahma, Vishnu (including Krishna), Shiva, Durga, Kali, Saraswati, Lakshmi, Parvati 4. Study of the human body in its anatomical structure related to dance, the mechanism of dance movement, its effect on body and prevention of injuries. 5 Dance as therapy. 6. Life style for performing artists. 7. Detail Study of (a) Fundamentas of musical criticism, (b) Historic and modern period of musical criticism, (c) Role of musical criticism in public media 7. Essay Writing : (a) Dance – A device for enlighment of the community, (b) Film music and Dance, (c) Rhythm in day to day life. (d) Social importance of Musical Education, (e) Music – Learning, teaching and occupation.

(Revision of earlier course is compulsory and can be examined).

A.D. : Abhinaya Darpanam **N.S**. : Natya Shastra

(ODISSI DANCE) ALANKAR PURNA

Total Marks :600, Minimum: 270, Practical : 400, (Oral : 200 + Manch Pradarshan : 200) : Minimum : 180, Theory (Written) : 200 (100 + 100), Minimum : 90 (45 + 45)

PRACTICAL : VIVA (90 minutes)

Abhinaya renderings of two poems of Udendra Bhanja (a) Demonstration of the item (b) Naming the raga and tala of the item (c) Vocal rendition of the song with tala shown by hand (d) Explanation/Meaning of the verses used (e) Analysis of the verses in terms of the philosophic allegorical themes in the poem (f) Analysis of the bhavas used in the rendition of the item. 2. The ability to compose Sabhinaya Nritya with Sanchari Passages 3. Ability to express navarasas 4. Two mangalacharan invoking two different deities, keeping in mind their iconographical representation 5. Knowledge of different elements of choregraphy and ability to express the given theme in dance.

PRACTICAL : DEMONSTRATION Manch Pradarshan – Before an invited audience.

1. Social, Political, Culutral and philosophical aspects that have moulded Odissi dance from the time of Kharavela 2. The composite Indian art tradition: (a) The essential principles of the indian aesthetics. (b) The interrelatedness of various Indian art forms and their connection with dance 3. Relevance of the Dhananjaya's "Dash Rupak Vidhan" to dance. 4. Study of ancient Sanskrit drama in terms of stage conventions. Analysis of Kalidas's 'Abhigyan Shakuntalam' in terms of nayak-nayika bheda, rase, and bhava vibhava-anubhava through different situation 5. A comparative study of : (a) The development of modern dance in the west from the classical ballet tradition (b) Current trends in the development of modern dance in lndia as well as within the classical traditions

THEROY PAPER II

1. Odissi music (a) A study of the musical traditions found in various texts of Orissa (b) Musical forms and compositional structures from Orissa : chhanda, pala janana, ghanta mardala etc. 2. Study of "Shilpa Prakash" and survey of iconographical representations of sculptures relevant to Odissi Dance in the caves and temples of Odisha. 3. An elementary study of the major

2. festivals of Odisha in reference to dance. (a) Chandan Jatra (Megha Nrutya) (b) Jhulana Jatra (Gotipua) (c) Bishuba Sankranti (Danda Nrutya) (d) Chaitra Purnima (Ghoda nacha) (e) Kartik Purnima (Rasa Nrutya) 4. Systems (Odissi, Karnataka and Hindustani) : (a) Comparison of concepts and technical terms relating to tala : Sam/Gurughar • Matra/Khanda • Vibhag/Anga • Mana Muktai / Tihai • Kriya / Tali – Khali • Gati / Chhnad / Layakari • Gadi/Rela • Avartana/Avarta • Arasa / Toda / Tiramanam • Laya/Kalam (b) Comparison of the common talas from the systems in terms of vibhaga structure : 6 matras, 7 matras, 8 matras, 10 matras, 12 matras, and 14 matras, (5) Dance training for personality development. (6) Dance as a profession – performer, teacher and its morals. (7) Style of language of musical criticism and various forms of musical criticism-Writing of Book, periodical writing, reporting of a musical concert, interviewe of an artist, regionwise new/old information, writing in news papers and magazine, musical criticism on All India Radio and Television in modern period. 5. Essay Writing : (a) Modern Musical trends after independence, (b) Inter-relationship between music and fine arts, (c) Music and Yoga, (d) Music Therapy, (e) Role of moral Audio-visual media in propagation of music.
3. **(Revision of earlier course is compulsory and can be examined).**
4. **A.D**. : Abhinaya Darpanam **N.S**. : Natya Shastra